मासिक
jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

दिसम्बर 2016 वर्ष : 11 अंक : 08

चि.गर्व नागर

(सुपुत्र– श्री गौरव–सौ.श्रीम नागर)

सुपौत्र– श्री अरुण–सौ.रीता नागर

को **प्रथम जन्मदिन**

की अनेकानेक शुभकामनाएँ

समस्त परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं नागर,
पौराणिक एवं आर्य परिवार, शाजापुर, उज्जैन, देवास, तराना
मो. 8966001760, 7798815354

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, उज्जैन
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा
सौ.आभा विजयशंकर मेहता

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

झरोखा

मुंडारा में व्यक्ति निर्माण शिविर 08

खण्डवा में अखिल भारतीय आयोजन 12

सफल अन्नकूट महोत्सव 14

रतलाम में प्रतिभा सम्मान समारोह 22

जय हाटकेश वाणी

मूल्य 10/-रुपये

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
मो. 9009590930, 9926285002

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

खता डाक विभाग की... सजा हमको-आपको

ज्ञातव्य है कि देशभर में डाक विभाग की व्यवस्था बिगड़ती जा रही है, और सजा वाणी के प्रकाशक और पाठक भुगत रहे हैं, हम प्रतिमाह डाक में सभी को किताबें भेजते हैं तथा पाठकों को प्राप्त होती नहीं। मात्र 550 रु. के आजीवन शुल्क पर केवल एक ही साधन डाक ही पत्रिका भेजने हेतु उपयुक्त है। उपरोक्त परिस्थिति में दो ही समाधान है कि पाठक अपनी ओर से भी प्रयास करें, जिसमें डाकघर की जवाबदेही तय करें तथा उन गाँवों या छोटे नगरों में जहाँ अधिक सदस्य हैं, वे आपस में पत्रिका का आदान-प्रदान कर लेवें। अनेक पाठक प्रतिमाह पत्रिका को येन-केन प्रकारेण पाने का अधिकार समझते हैं उन्हें थोड़ा लचीला रुख अपनाना चाहिए। किसी माह यदि डाक विभाग की लापरवाही से पत्रिका न मिले तो वे हार्ड कापी मंगवाने के बजाय सॉफ्ट कापी से काम चला लेवें, क्योंकि आजकल सबके पास ईमेल की सुविधा है। प्रतिमाह पत्रिका को छापकर भेजना वैसे ही बड़ा कठिन काम है और ऊपर से पूरे माह पाठकों की शिकायत सुनते-सुनते प्रकाशक भी हैरान हो जाते हैं।

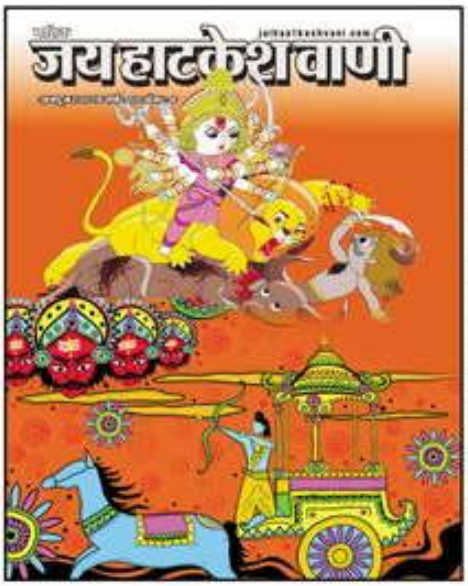

एक प्रस्ताव और है धीरे-धीरे पत्रिका को ई-पत्रिका के रूप में तब्दील करने का। इंटरनेट एवं मोबाईल एप के जरिए पत्रिका का प्रसार बढ़ाया जाए, सभी पाठकों को प्रतिदिन ही समाज की खबरें प्राप्त हो जाए। कुछ अच्छा ही करने का प्रयत्न जय हाटकेश वाणी ने शुरु से किया है। तथा अभी भी अच्छा ही होगा ऐसी आशा है, आप अपना सहयोग एवं आशीर्वाद बनाएँ रखें।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

मैं .....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

सबसे पहले तो धैर्य का गुण अपनाएँ, दूसरा अपरिग्रही बने, अर्थात जितनी जरूरत है, उतना ही संचय करें। सुधार में सहयोगी बनें। वास्तव में देखा जाए तो शास्त्र तो आपको यही निर्देश देते हैं और बाकि सब बातों को यदि हम नजरअंदाज कर भी दें तो वही राजा आदर्श है जो आपको शास्त्रानुकूल चलने हेतु प्रेरित करता है।

सुधार स्वयं से...

परिवार, समाज या देश में, जब बदलाव या सुधार की बात हो तो वह स्वयं से होना चाहिए। गड़बड़ी यह है कि हम दूसरों से बदलाव एवं सुधार की खूब उम्मीद रखते हैं, परन्तु स्वयं में सुधार की कोशिश नहीं करते। कई बार हम परिवार, समाज एवं देश में फैली अव्यवस्थाओं के बारे में होने वाली चर्चाओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं, परन्तु जब सुधार की प्रक्रिया शुरु होती है तो न केवल पीछे हट जाते हैं, बल्कि उसमें असहयोग भी करते हैं। यह प्रवृत्ति बदलना पड़ेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी कुछ करना चाहते हैं, देश को बदलना चाहते हैं, अव्यवस्थाओं को व्यवस्था का रूप देना चाहते हैं, तो इतना हंगामा क्यों? बने-बनाएं ढर्रे पर चलना सबको अच्छा लगता है, भले ही उसमें हमारा भला न हो, लेकिन जब सुधार की बात हो तो हमें वह नागवार गुजरती है। नोटबन्दी से पूर्व देश की आर्थिक अव्यवस्था, असंतुलन पर अपनी दृष्टि डालें तो प्रतीत होता है कि गरीब की स्थिति तो जस की तस है, अमीर निरंतर अमीर होते जा रहे हैं, अनेक प्रकार के टेक्स, विसंगतियां, जटिलताएँ हैं, आखिर क्यों कोई टेक्स चोरी करना चाहता है, इतनी बड़ी जनसंख्या में आयकर रिटर्न दाखिल करने वालों का प्रतिशत इतना कम क्यों? क्यों बाजार में बगैर बिल का व्यवसाय चलता है टैक्स पाना तो सरकार का अधिकार है तथा उसी पर देश का विकास भी आधारित है। यह बात मानना पड़ेगी कि कोई कदम उठाने में त्रुटियां भी होती है तथा आमजन को परेशानी कुछ ज्यादा उठाना पड़ जाती है, लेकिन आखिर उद्देश्य तो सुधार ही है, हमें उसमें गलतियां या असुविधा ढूंढने के बजाय 'स्वयं के सुधार' का अवसर तलाशना चाहिए। सबसे पहले तो धैर्य का गुण अपनाएँ, दूसरा अपरिग्रही बने, अर्थात जितनी जरूरत है, उतना ही संचय करें। सुधार में सहयोगी बनें।

वास्तव में देखा जाए तो शास्त्र तो आपको यही निर्देश देते हैं और बाकि सब बातों को यदि हम नजरअंदाज कर भी दें तो वही राजा आदर्श है जो आपको शास्त्रानुकुल चलने हेतु प्रेरित करता है। आखिर इस प्रश्न का उत्तर आप दीजिए कि इस भौतिक मृगतृष्णा का कहीं अंत है? क्यों आप पाप की कमाई में लगे हैं? काला धन सरकार को टेक्स देने मात्र से सफेद नहीं होता। अपनी वास्तविक कमाई में से 40 प्रतिशत तक दान या परोपकार में खर्च करने का निर्देश शास्त्र देते हैं, धन कमाने के लिए तुम्हारे द्वारा किए जा रहे अनैतिक कर्मों का फल भोगने में तुम्हारे परिवार का कोई सदस्य शामिल नहीं होता, फिर किसके लिए यह अंधी भाग-दौड़? बेमतलब है यह सब, जितना जरुरी है उतना कमाओ, बाकि समय भगवान की भक्ति, सत्संग में खर्च करो। शास्त्रों में ये सब निर्देश दिए गए हैं तुम यदि इनका पालन नहीं करोगे तो मोदीजी करवा देंगे। क्योंकि जब सुधार की बात आती है तो उसकी शुरुआत हम अपने आपसे करना नहीं चाहते हैं। जब वह सुधार स्वयं से शुरु होगा तो सारी समस्याएँ वहीं खत्म हो जाएगी। क्योंकि अराजकता, अव्यवस्था की जड़ में भी हम स्वयं है, पथभ्रमित होकर अनुचित रास्तों को चुना, अनैतिक कर्म किए तो वह हमारी असुविधा के रूप में आज हमारे सामने प्रकट हुआ है। बरसों से धर्म जो आपको करने का निर्देश दे रहा है, वह तो आज भी प्रासंगिक है, पुत सपुत तो क्यों धन संचय, पुत कपूत तो क्यों धन संचय? अपरिग्रह बरसों से यह कहा जा रहा है, आज भी वही सब उपयुक्त है समझदारी है, स्वयं आकलन करें, चिंतन करें एवं सुधार करें। एक मौका फिर है, आलोचना करने के बजाय हम कितने ऐसे लोगों की मदद कर सकते हैं जो वास्तव में नोटबंदी से परेशान है।

यह परोपकार का अवसर है। सुधार की शुरुआत है। जो स्वयं से होगी, देर हो गई तो देर से ही सही। इसका लाभ आज नहीं तो कल हमको ही मिलेगा, सबको मिलेगा, सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की हर पहल का स्वागत करें। ऐसा सोचें कि एक अच्छे कदम का हम स्वागत करेंगे तो ऐसे कदम और भी भविष्य में उठेंगे जो स्वर्णिम भारत के निर्माण में सहायक होंगे।

-संगीता दीपक शर्मा

श्री हाटकेश्वर बचत साख सहकारी समिति लि. की उपलब्धियां

श्री हाटकेश्वर बचत व साख सहकारी समिति लि. की 15वीं साधारण सभा 29 सितम्बर 2016 को भेरवानंदजी की छत्री में आशुतोष महादेव के पूजन के पश्चात् आरम्भ हुई। वर्तमान कार्यकारिणी का यह पांचवा और अंतिम वर्ष होने से नए लोगों को प्रेरित करना तथा समाजसेवा के लिए प्रोत्साहित करना भी इसका मकसद था, इस बैठक में संस्था की आधारशिला रखने वाले और प्रमोटर श्री नटवरलाल झा (सेन्ट्रल बैंक), सुभाष त्रिवेदी (सीबीआई), श्री छगनलालजी (एस.बी.बी.जे.), तनमनलालजी (को.बैंक) भी उपस्थित थे तो श्री डायालालजी (को बैंक) अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किए गए थे। श्री देवेन्द्र कुमार पंड्या और बलदेव दवे अपने कार्यकाल में कोषाध्यक्ष का काम करते हुए इस समिति से ऐसे धुलमिल गए थे कि लोग बोलचाल में उनको समिति के नाम से ही उद्‌बोधन करने लगे थे, इस पांच वर्षों में श्री पवन कुमार दवे ने भी वही प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है, समिति के सदस्य भी कामना करते हैं कि इन सभी का मार्गदर्शन भविष्य में भी मिलता रहे, परन्तु सहकारी समितियों के नियमों के हिसाब से 5 लाख से ऊपर हिस्सा राशि होने पर सहकारिता

विभाग अपनी निगरानी में चुनाव करवाता है और वह आगामी वर्ष सम्पादित हो सकते हैं, क्योंकि हमारी हिस्सा राशि 9,26,300/- हो गई है, जो गत वर्ष 8,91,000 रु. थी। अनिवार्य अमानत राशि 5,04,597 की वृद्धि दर्शाती हुई 38,37,694 पर पहुँची और सुरक्षित कोष, सहकारी शिक्षा कोष संचय के पश्चात ऋण 27,25,292 रहा है। वर्ष पर्यंत राशि की उपलब्धता को देखते हुए ऋण राशि 50,000/- से बढ़ा कर 70,000/- कर दी गई है और ऋण पर ब्याज दर भी 9 प्रतिशत तक घटा दी है, जिससे भवन निर्माण, रखरखाव पर लोगों को सहयोग प्राप्त होता रहे, परन्तु अनावश्यक और फिजुलखर्ची पर लोगों को अंकुश रखने की सलाह दी जाती है। वर्ष 2014-15 का ऑडिट कार्य पूर्ण हो चुका है और 2015-16 का कार्य भी ऑडिटर ने प्रारंभ कर दिया है। ऑडिटर की अनुशंसा पर संतुलन पत्र में भी आवश्यक संशोधन किया गया है। ऋण चुकाने में सदस्यों का सहकार बहुत सराहनीय रहा है, और 15 वर्ष के दीर्घकाल में ऋण एवं ब्याज की वसूली शत-प्रतिशत रही है जो सदस्यों की सक्रियता, उच्च नैतिकता और भाईचारे का प्रमाण है।

समिति का प्रतिवेदन अध्यक्ष श्री नरेन्द्रकुमार झा ने प्रस्तुत किया और आगामी वर्ष चुनाव होने से सदस्यों से अनुरोध किया कि वे कार्यालय में आकर समिति के कामकाज का अवलोकन करें और समिति के संचालन का अनुभव प्राप्त करें, जिससे निरन्तरता बनी रहे। समिति के दिवंगत सदस्य श्री चन्द्रशंकर झा और नरेन्द्र कुमार पंड्या के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बैठक का समापन किया। साधारण सभा का आयोजन पारिवारिक सम्मेलन की तरह किया जाता है अतः समापन में श्रीखंड, पुरी, कचोरी के भोज के साथ सभी एक-दूसरे का अभिवादन करते हुए विदा हुए।

-मधुसुदन झा
सचिव, हाटकेश्वर बचत व साख
सहकारी समिति लि.

मथुरा में श्री हाटकेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार

सहर्ष सूचित करवा माँ आवे छै कि श्री हाटकेश्वर मंदिर जे कि गोलपाड़ा मां स्थित छै, उक्त मंदिर नू जीर्णोद्धार आप सर्वे जाति बन्धुओं ना सहयोग ती कर वावू चाहि-रया छै।

कृपया हाटकेश्वर नागर मंडल - मथुरा ना खाता मां धनराशि मोकली ने जीर्णोद्धारं मां सहयोग करशो, धन्यवाद

खाता नू विवरण निम्न प्रकार छै-
Hatkeshwar Nagar Mandal Mathura
Syndicate Bank
Shanti Market (Main)
Holi Gate, Mathura (U.P.)
A/C No. 85202210026458
IFSC - SYNB - 0008520

निवेदक- हाटकेश्वर नागर मंडल, मथुरा

दिनेशकान्त नागर 09997026006, बलराम नागर 09258897915, आलोक नागर 09410445271

बुन्दी में रही गरबों की धूम

बिजासन माताजी

हाटकेश्वर भवन के गरबे

आयुष मेहता की प्रस्तुति

नवरात्रि के दिनों में बुन्दी के हाटकेश्वर भवन में गरबों, डांडियों की भारी धूम रही। गरबों का सिलसिला दूज के दिन शुरु हुआ, जो दशहरे तक जारी रहा। गरबों के दौरान कुसुम मेहता, माधुरी मेहता, पूजा नागर, सुषमा नागर, वंदना मेहता, अलका मेहता, आशा मेहता, आरती झा, स्मृति ठाकोर, निशा मेहता, सीमा झा, ललिता झा, निर्मला ठाकौर, रश्मि ठाकौर, प्रभा ठाकौर, उषा ठाकौर, बिन्दु मेहता, प्रेरणा झा, वान्या झा, शशि झा, सहित समाज की महिलाओं ने प्रतिदिन अलग-अलग ड्रेस कोड में गरबा गायन व नृत्यों की आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी। विजयादशमी पर नवलसागर झील पर गरबा बोड़ाया (विसर्जन) किया गया। इसी शाम को आयोजित कार्यक्रम में पीयूष पाचक अनूप मेहता, आयुष दत्त मेहता, प्रखर मेहता ने भजन, गीत, कविताओं की मनोहारी प्रस्तुति दी। अध्यक्ष सुशीलकांत मेहता, सचिव प्रदीप ठाकोर ने सफल आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया। आयोजन में सुशील नागर "हलकू" पीयूष पाचक की महत्वपूर्ण भूमिका रही। बिजासन माता मंदिर में भी नागर समाज की महिलाओं ने गरबों की प्रस्तुती दी। **-पीयुष पाचक**

पीयूष पाचक

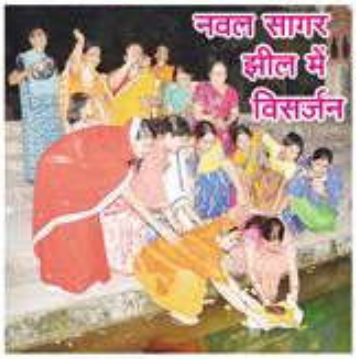
नवल सागर झील में विसर्जन

बिजासन माताजी के गरबे

मुंडारा में 'व्यक्ति निर्माण शिविर' में भारी उत्साह

लंबे अंतराल के पश्चात् देवझुलनी मेले (25-9-2016) में प्रतिभा सम्मान समारोह एवं जून 2016 में व्यक्ति निर्माण शिविर का आयोजन नागर शिक्षा समिति मुंडारा (राज.) के तत्वावधान के अंतर्गत किया जाएगा कि घोषणा नागर शिक्षा समिति के सचिव श्री चम्पालालजी नागर नारलाई ने बड़े ही उत्साह से की तो सभागार करतलध्वनि से गूंज उठा। शिविर 2 जून 2016 से प्रारम्भ होकर 5 जून मध्यान्ह महाप्रसाद के साथ समापन हुआ। भगवान भास्कर भी अपनी प्रचंड तेज गर्मी से भूमंडल को तपा रहे थे पर शिविरार्थियों का उत्साह भी कम नहीं था। 1 जून मध्यान्तर तक तो शिविरार्थियों की संख्या अनुमान से काफी कम थी, परन्तु मध्यान्ह की तपती धूप की परवाह किए बिना शिविरार्थियों का अदम्य उत्साह देखते ही बना। दिन के चार बजे तक तो शिविरार्थियों का ऐसा रेला बहा कि शिविरार्थियों की संख्या अनुमान से ज्यादा बढ़ गई। जिसमें युवक-युवतियों की संख्या 200 से पार हो गई।

श्री श्री रविशंकरजी संस्थान के शिक्षक श्री महेशजी शर्मा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीणा बेन व सुपुत्री मुक्ता शिक्षक के सानिध्य में शिविर का आयोजन प्रारंभ हुआ। शिविरार्थियों को दो ग्रुप में विभाजित किया गया। पहला ग्रुप 5वीं से 9वीं कक्षा का था, जिसको श्रीमती वीणा शर्मा एवं मुक्ता शर्मा ने प्रशिक्षण दिया, जिसमें योग, प्रतिभा के उच्च स्तर व 'सुदर्शन' क्रिया का ज्ञान कराया, दूसरा ग्रुप कक्षा दसवीं से ऊपर अन्य योग क्रियाओं में रुचि रखने वालों को श्री मुकेश शर्मा ने व्यक्तित्व निर्माण कैसे हो, योग व सुदर्शन क्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी एवं प्रशिक्षण दिया। निम्न विषयों पर प्रकाश डाला- (1) जो भी कार्य करो, पूरी लगन से करो 100 प्रतिशत लगन। (2) व्यक्ति को किसी का फुटबाल नहीं बनना। (3) व्यक्ति को अपने विचार पर अडिग रहना, घड़ी का पेंडूलम नहीं बनना। (4) जो भी निर्णय हो वह आपका हो, ये चार सूत्र व्यक्ति को इच्छित ऊँचाई तक पहुँचा सकते हैं। हमारे समाज के ही बालब्रह्मचारी महात्मा श्री श्री भगवतानंदजी भारती ने जिज्ञासुओं को प्रातःकाल 7 से 8 बजे तक अष्टांग योग, हस्तरेखा व कई छोटे-मोटे रोगों का उपचार बताया तथा अध्यात्म के बारे में जानकारी दी। शिविर समापन के दिन श्री महेशजी की सुपुत्री जो दस वर्ष की है उसने आँखों पर पट्टी बांधकर बहुत बारिक अक्षरों को पढ़कर सुनाया व रंगों की पहचान की, यह देख शिविरार्थी एवं उपस्थितजन आश्चर्यचकित रह गए।

-दयाराम नागर 'योग शिक्षक'
सुमेरपुर (राज.)

चेन्नई में दीपावली मिलन समारोह

चेन्नई में दिनांक १३ नवम्बर को नागर ब्राह्मण समाज का दीपावली स्नेह मिलन बड़े हर्ष उल्लास के साथ ईस्ट कॉस्ट रोड नवग्रह मंदिर में सम्पन हुआ। वहाँ पर बच्चो के खेलकूद के प्रोग्राम , महिला गरबा डांडिया और समाज के बारे में विचार-विमर्श किया। उसमें समाज को सलाह (प्रस्ताव) है की जसवंतपुरा मंदिर के हॉल में और हाटकेश्वर महादेव मंदिर अहमदाबाद में हमारे गुरु शिरोमणि श्री नरसिंह मेहता की मूर्ति विराजमान और भव्य प्राण प्रतिष्ठा करे, जिससे हमारे बच्चो और बड़ो सर्वजनों की गुरु के प्रति आस्था भावना जाग्रत होगी और उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से समाज का उत्थान होगा। यह हमारा समाज से नम्र निवेदन है।

अ.भा. नागर परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन

अ.भा. नागर परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन श्रीमती वीणाबेन चम्पक लाल जोशी के नेतृत्व में होटल प्लेटिनम, वासना अहमदाबाद में 23 अक्टूबर रविवार को सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में विभिन्न स्थानों से पधारे पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए। अधिवेशन के दौरान संगठन को मजबूत बनाने के बारे में सुझाव दिये गए। ज्ञातव्य है कि यह पहला मौका है जब कोई महिला अध्यक्ष ने इस परिषद् का काम संभाला है तथा पूरी ऊर्जा से वे संगठन को राष्ट्रव्यापी सक्रियता प्रदान करने के काम में जुटी है।

जयपुर में 11वाँ गरबा महोत्सव अष्टमी की महाआरती के साथ सम्पन्न

माँ अम्बा की कृपा से 2006 से जयपुर में गरबा महोत्सव का आयोजन प्रारम्भ किया गया था। यहाँ स्थित रानीसती नगर निवासी गुजराती परंपरा से अनभिज्ञ थे, माँ भगवती की अलौकिक कृपा से 2016 में जो 11वाँ गरबा महोत्सव जो दिनांक 1-10-2016 से 9-10-2016 तक हुआ वह एतिहासिक रूप से सम्पन्न हुआ। आयोजन समिति द्वारा माँ का दरबार माँ वैष्णोदेवी के बर्फ़ीले पहाड़ों की तर्ज़ पर सजाया गया।

समापन पर सभी भक्तों ने 1001 दीपक से झूमते हुए महा आरती की। इस अवसर पर 120 बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। लगभग 500 दर्शनार्थी व भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। आयोजन समिति के संयोजक गौरव नागर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

-भगवती लाल नागर, जयपुर

बैंगलोर में एकदिवसीय नवरात्री उत्सव सम्पन्न

इस वर्ष बैंगलुरु में नागर ब्राह्मण समाज ने एक दिवसीय नवरात्रि उत्सव का आयोजन किया जिसमें बैंगलुरु में निवासरत अधिकांश नागर जन सपरिवार पूरी श्रद्धा और उत्साह से सम्मिलित हुए। इस आयोजन से बैंगलुरु में निवासरत सारे नागर परिवारों में हर्ष व्याप्त है। देश के विभिन्न प्रान्तों से बैंगलुरु वालों को शुभकामनाएं एवं प्रोत्साहन मिला, सभी का बहुत बहुत धन्यवाद।

उदयपुर में शारदोत्सव का आयोजन

नागर मण्डल संस्थान उदयपुर के अध्यक्ष डॉ एस. बी.नागर ने बताया कि नागर मण्डल संस्थान की ओर से दिनांक 16.10.16को शरदोत्सव 16का आयोजन किया गया जिसमें कार्यक्रम के प्रारम्भ में अध्यक्ष डॉ एस बी नागर व् सचिव अजय नागर ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलन किया। तत्पश्चात श्रीमती अनिला नागर व श्रीमती रेनू नागर द्वारा गणेश व सरस्वती वन्दना की गयी ।वन्दना के बाद समाज की बालक बालिकाओं ने एकल नृत्य, समूह नृत्य, एकल गायन, युगल गायन, कविता पाठ, विचित्र वेशभूषा, मूकाभिनय, एकाभिनय आदि प्रस्तुतियाँ दी जिनमें सुश्री अनुश्री नागर ने कत्थक नृत्य से सभी का मन मोह लिया। देवार्चित नागर, प्रज्ञा नागर, हिमांशी नागर ,आयुश नागर, प्रियल नागर, ह्रद्यांशी नागर आदि ने नृत्य किया। कार्यक्रम में समाज के श्री मुक्तेश नागर ,प्रियल नागर, ह्रद्यांशी, को बोर्ड परीक्षा परिणाम में विशेष स्थान प्राप्त करने पर तथा आयुषी नागर का खो-खो खेल में प्रदेश स्तर पर चयन होने पर सम्मानित किया गया। समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री निर्मल नागर द्वारा मेरिट में आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार स्वरूप 5000/ रु की राशि प्रदान की गयी ।कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठ सदस्यों का भी सम्मान किया गया। समाज के सभी पुरुष व् महिलाओं द्वारा गरबा नृत्य भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री उपेन्द्र रावल ने किया ।कार्यक्रम के अंत में सचिव श्री अजय नागर ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

जयपुर में नागर गरबों में भारी उत्साह

श्री नागर पंचायती डेरा चेरिटेबल ट्रस्ट में नवरात्री महोत्सव 1-10-16 से 10-10-16 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवधि में रोजाना माँ अंबे की आरती के साथ गरबों का आयोजन किया गया। गरबों में नागर परिवारों के महिला-पुरुष गरबों में हिस्सा लेने वाले सभी नागर परिवारों को श्री आशीष दवे के द्वारा लावणी को प्रायोजित किया गया। लावणी का वितरण नवमी के दिन श्री महेन्द्र कुमार नागर प्रबंध ट्रस्टी द्वारा किया गया। इस आयोजन का प्रबंधन, प्रबंध कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा किया गया तथा मुख्य भूमिका श्री मृत्युंजय त्रिवेदी अध्यक्ष व अजय कुमार नागर सचिव की रही।

पत्नी के जन्मदिन पर पति ने पूछा- तुम्हें क्या गिफ्ट चाहिए?

पत्नी की इच्छा तो नई कार लेने की थी। पत्नी ने इशारों में कुछ इस तरह पति को कहा- मुझे ऐसी चीज दिलवायो जिस पर मेरे सवार होते ही वो 2 सेकंड में 0 से 80 पर पहुंच जाए।

शाम को ही पति ने उसे वजन कांटा लाकर दे दिया। ...
घर में अभी भी युद्ध जैसा ही माहौल है?
और तो और? पति के 2 दांत भी मिल नहीं रहे?

डॉ.रजनी मेहता, श्रीमती हर्षा बेन ढोलकिया, श्रीमती उषा पंचोली एवं सभी बहनों ने 2 घंटे बिना रुके गुजराती पारम्परिक गरबा गायन किया। आरती प्रसाद के साथ समापन हुआ। श्री विवेक जोशी ने ढोलक पर मन-मोहक साथ दिया। सभी का आभार श्रीमती शारदा मण्डलोई ने व्यक्त किया।

सामूहिक संगीतमय सुंदरकांड का पाठ 18 दिसम्बर को

विश्व में सुख शांति रहे, सभी प्राणी स्वस्थ, प्रसन्न एवं आनंदित रहे, सद्गुणों व सद्विचारों से भरा सुरम्य-सुगन्धित वातावरण हो, इसी भावना के साथ सामूहिक संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन रविवार, 18 दिसम्बर को दोपहर 1 से 4 बजे तक माँ आनन्दमयी आश्रम ए.बी. रोड, इन्दौर में रखा गया है। मानस गंगा सत्संग समिति ने सभी समाजजनों से अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होने का आह्वान किया है। विस्तृत जानकारी हेतु पं.आवेश व्यास मो. 9039510929

रिश्तों की बहार...

मेलापक 2016 का प्रकाशन जनवरी माह में

प्रतिवर्षानुसार मासिक जय हाटकेश वाणी द्वारा जनवरी 2017 में मेलापक का प्रकाशन किया जा रहा है, आप विवाह योग्य युवक-युवती के बायोडाटा निम्नलिखित आवेदन पत्र में भरकर हमें 20 दिसम्बर 2016 तक अवश्य भिजवा देवें। प्रविष्टियों का प्रकाशन पूर्णतः निःशुल्क किया जाता है। ज्ञातव्य है कि मासिक जय हाटकेश वाणी में प्रकाशित वैवाहिक प्रस्तावों से अब तक अनेकों रिश्ते हुए हैं तथा पत्रिका का प्रसार क्षेत्र सम्पूर्ण भारत में होने से मनचाहे स्थान एवं पसन्द अनुसार रिश्ते करने की सुविधा इस माध्यम से प्राप्त होती है-

वैवाहिक प्रस्ताव

फोटो रंगीन पासपोर्ट साइज

नाम .....

पिता का नाम .....

माता का नाम.....

जन्म दिनांक ..... जन्म समय ..... स्थान .....

गौत्र ..... कद..... वजन ..... मंगल- है / नहीं.....

शैक्षणिक योग्यता .....

कार्यरत-.....

पता- .....

.....

फोन/मो.नं.....

खण्डवा नागर समाज द्वारा ऐतिहासिक आयोजन

पद्म भूषण पंडित भगवंतराव मण्डलोई पूर्व मुख्यमंत्री की स्मृति में अखिल भारतीय नागर ब्राह्मण क्रिकेट प्रतियोगिता 12-13 नवम्बर 16 को खण्डवा में सम्पन्न हुई।

खण्डवा नागर समाज के मित्रजनों नागर नवयुवक मण्डल खण्डवा के युवा साथियों द्वारा श्री अमिताभ मण्डलोई के मार्गदर्शन में दिनांक 12 एवं 13 नवम्बर को खण्डवा में अखिल भारतीय नागर ब्राह्मण क्रिकेट प्रतियोगिता का ऐतिहासिक आयोजन किया गया। खण्डवा नगर की साहित्यक, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा प्रेमी जनता सम्पूर्ण भारत देश से पधारे, नागर समाजजनों ने इस आयोजन का आनंद लिया। समस्त कार्यक्रमों के सूत्रधार श्री योगेश मेहता थे।

उद्घाटन समारोह श्री राघवेन्द्रराव मण्डलोई, पं. मदनमोहन दवे, श्री देवीदास जी पोद्दार एवं श्री रामभाऊ मण्डलोई के आतिथ्य एवं पं. गिरजा शंकर व्यास एवं श्री अम्बाशंकर व्यास की विशिष्ट उपस्थिति में सम्पन्न हुआ । समस्त टीमों द्वारा गणेश गौशाला से जिमखाना ग्राउण्ड तक रैली निकालकर समाजजनों एवं नगर के विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा स्वागत किया गया । रैली संयोजक श्री शिवराज मेहता पार्षद एवं अभिलाष मेहता द्वारा जलेबी चौक पर श्री अशोक पालीवाल विश्व हिन्दू परिषद, नगर निगम चौराहा पर श्री अशोक बजाज, संजय पगारे, प्रदीप दीक्षित द्वारा घण्टाघर चौक पर नगर अध्यक्ष भाजपा श्री धर्मेन्द्र बजाज मित्रमण्डल द्वारा एवं केवलराम पेट्रोल पम्प पर श्री ओम आर्य समाजसेवी द्वारा पुष्पहार एवं स्वल्पहार से स्वागत किया गया । जिमखाना मैदान पर म.प्र. से नागरजनों की 9 टीमें एवं अन्य राज्यों की 6टीमों का भव्य स्वागत कर बैण्डबाजे एवं पुष्पवर्षा से स्वागत किया गया । राष्ट्रीय खेलों के उद्घाटन समारोह के समान प्रत्येक टीम द्वारा पंक्तिबद्ध होते हुये मार्चपास्ट किया गया । इसके पश्चात् राष्ट्रगान एवं श्री राघवेन्द्र राव मण्डलोई के औपचारिक उद्घाटन की घोषणा के पश्चात् क्रिकेट प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। कार्यक्रम का संचालन आलोक जोशी ने किया। म.प्र. की इंदौर, उज्जैन, शाजापुर, देवास, बेरछा, नागदा, रतलाम, भोपाल, खण्डवा इस प्रकार 9 टीमों ने सहभागिता की । अन्य राज्यों में आगरा (उ.प्र.) बॉसवाड़ा (राजस्थान), पटना (बिहार) अहमदाबाद (गुजरात), कनार्टक इस प्रकार 6टीमों ने भाग लिया । प्रतियोगिता नाकआउट आधार पर खेली गई । सेमीफाईनल तक प्रत्येक मैच 10 ओव्हर एवं फाईनल 12 ओव्हर का था । मैच जिमखाना क्रिकेट ग्राउण्ड एवं एस.एन.कॉलेज ग्राउण्ड पर प्रात: 9.00 बजे से प्रारम्भ हुये। प्रतियोगिता का पहला सेमीफाईनल गुजरात एवं उज्जैन के मध्य हुआ । उज्जैन ने पहले बेटिंग करते हुये 10 ओव्हर में 104 रन बनाये । जिसके जवाब में गुजरात की टीम 60 रन पर आल आउट हो गई इस प्रकार 54 रन से उज्जैन जीत गया।

दूसरा सेमीफाईनल खण्डवा और बिहार का हुआ बिहार ने पहली बेटिंग करते हुये 10 ओव्हर में 53 रन बनाये । खण्डवा ने जवाब में 9.5 ओव्हर में 5 विकेट खोकर लक्ष्य प्राप्त कर लिया और सेमी फाईनल में जीत दर्ज की । फाईनल बेहद रोचक और रोमांचक रहा । उज्जैन ने 12 ओव्हर में 63 रन बनाये । जवाब में खण्डवा ने 3 विकेट खोकर 64 रन बनाकर मैच 7 विकेट से जीत लिया । सिद्धांत अवधेश व्यास ने फाईनल में 6कैच लेकर बेस्ट प्लेयर एवं खण्डवा के कप्तान आदित्य धनराज मेहता ने आल राउण्डर प्रदर्शन करते हुये 35 रन बनाये एवं 3 विकेट लिये उन्हें मैन ऑफद मैच घोषित किया। मैच संचालन समिति में सर्वश्री अवधेश व्यास, राजीव मण्डलोई, कौशिक वैद्य एवं सरोज कुमार जोशी रहे । अम्पायर की भूमिका में श्री हर्ष मेहता इंदौर, राजेश शर्मा उज्जैन, लक्ष्मीकांत मेहता, ललित भट, विवेक दीक्षित, प्रदीप दीक्षित खण्डवा रहे । सभी मैचों एवं कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण मनीष व्यास द्वारा खण्डवा टी.वी. पर खण्डवा शहर एवं आसपास के 60 गांवों में किया गया ।

रात्रिभोज के बाद स्वर संध्या कार्यक्रम आलोक जोशी के संयोजकत्व में आयोजित किया गया इसमें तोरल बक्शी, आलोक जोशी,

मनोज जोशी, श्रेयस जोशी, श्रीमती दिव्या मण्डलोई, भूपेन्द्र भाई, एवं केदार रावल द्वारा फिल्मी गीत, गजल, भजन आदि प्रस्तुत किये गये। हरफनमौला कलाकार किशोर कुमार खण्डवा वाले की स्मृति में नीमिश भंसाली ग्रुप द्वारा फिल्म पड़ौसन का शानदार नृत्य प्रस्तुत किया गया ।

कार्यक्रम में श्री राजेश त्रिवेदी अध्यक्ष अखिल भारतीय नागर परिषद उज्जैन, महासचिव - लव मेहता, युवा परिषद अध्यक्ष - हेमंत व्यास एवं हर्ष मेहता, महासचिव - जय हाटकेश,सांस्कृतिक मंच के संयोजक - केदार रावल, श्रीमती शोभना अंतानी पूर्व सचिव नागर समाज मुम्बई, रश्मि पाठक गुजरात, योगेन्द्र भाई शुक्ल गुजरात, रशेन्द्रभाई आचार्य गुजरात, सूर्यकांत नागर राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण परिषद दिल्ली, बसंत कुमार नागर दिल्ली, डॉ. प्रेम नागर बिहार, प्रवीण त्रिवेदी न्यायाधीश इंदौर, श्री दीपक शर्मा जय हाटकेश वाणी प्रधान सम्पादक इंदौर एवं अमिताभ मण्डलोई समाज सेवी इंदौर की उपस्थिति से आयोजन की गरिमा अभूतपूर्व रही ।

समापन समारोह महापौर खण्डवा श्री सुभाष कोठारी के मुख्य आतिथ्य एवं श्री अमिताभ मण्डलोई की अध्यक्षता एवं श्री प्रवीण त्रिवेदी, श्री गणेश आचार्य, श्री रश्मि पाठक, श्री देवीदास पोद्दार अध्यक्ष खण्डवा, श्री देवेन्द्र शास्त्री एवं श्री रमाशंकर शुक्ला, श्रीमती शोभना अंतानी के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ ।

पुरस्कार वितरण विजेता टीम खण्डवा को प्रथम पुरस्कार इक्कीस हजार रूपये नगद श्री कृष्णानंद जी मेहता द्वारा एवं उप विजेता टीम उज्जैन को ग्यारह हजार रूपये द्वितीय पुरस्कार अभिलाष दीवान की ओर से ट्रॉफ्यिों, स्मृति चिन्ह सहित भेट किये गये । समस्त कार्यक्रमों में नागर समाज के विप्रजनों मातृशक्ति नागर समाज, नागर नवयुवक मण्डल, नगर के पत्रकार बन्धु, नगर निगम खण्डवा, पुलिस प्रशासन, जिला प्रशासन एवं समाजसेवी सगंठनों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ । समाज के सहयोगीजनों में सर्वश्री गिरजाशंकर व्यास, अम्बाशंकर व्यास, राघवेन्द्रराव मण्डलोई, बसंत मण्डलोई, भोज मण्डलोई, पवन दीक्षित, दीपक जोशी, आलोक जोशी, अभिलाष दीवान, आनंद जोशी, मनोज मण्डलोई, धनराज मेहता, गिरीश पोद्दार, सरोज कुमार जोशी, प्रशांत दीक्षित, प्रफुल्ल मण्डलोई, मनीष व्यास, प्रेमेन्द्र मण्डलोई, प्रमोद मण्डलोई, नारायण जोशी, प्रमोद जोशी, रेवाशंकर व्यास, संदीप व्यास, विवेक मण्डलोई इंदौर, मुकेश दवे, कौशिक वैद्य, विवेक दीक्षित, प्रदीप दीक्षित, लक्ष्मीकांत मेहता, राहुल जोशी, श्रीकांत पंडित, पवन पोद्दार, प्रदीप शर्मा, एम.आर. मण्डलोई, राकेश नागर, प्रेमनारायण व्यास, मिलिन्द नागर,देवीदास पोद्दार, राकेश दवे, सुदर्शन मेहता, मनीष मण्डलोई सहित समस्त नागर समाज तथा जिमखाना के श्री सदानंद यादव एवं श्री तोमर सर का विशेष सहयोग कार्यक्रम को सफल बनाने में प्राप्त हुआ । समस्त आगंतुक टीमों के कोच, मैनेजर, खिलाड़ी सदस्य एवं म.प्र. तथा अन्य राज्यों से पधारे समस्त नागर समाज के स्वजनों का सादर अभिनंदन एवं इस गरिमामय कार्यक्रम में उपस्थित होने हेतु आभार एवं अभिनंदन ।

-सरोज कुमार जोशी
323, आनंद नगर,
प्रेम परिसर के पास, खण्डवा

अन्नकूट महोत्सव में इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर को 56 भोग अर्पित

उज्जैन में नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास (हरसिद्धिपाल) एवं अन्नकूट महोत्सव समिति के संयुक्त तत्वावधान में 6 नवम्बर रविवार को श्री हाटकेश्वर धाम में इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर को 56 व्यंजनों का भोग अर्पित किया गया। प्रातः भगवान श्री हाटकेश्वर का पूजन-अर्चन कर 56 भोग दर्शन-महाआरती एवं महाप्रसादी का भव्य आयोजन हुआ।

इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम न्यास के गौरव एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रेमनारायणजी नागर, न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता सुमन, न्यास के उपाध्यक्ष डॉ.नरेन्द्र नागर, न्यास के कोषाध्यक्ष रामचन्द्र नागर, म.प्र. नागर परिषद् के महासचिव लव मेहता, म.प्र. नागर परिषद् महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती आभा मेहता, अन्नकूट महोत्सव समिति के संयोजक अतुल मेहता ने भगवान श्री हाटकेश्वर के सम्मुख दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। पश्चात् गणेश वंदना श्रीमती प्रज्ञा-प्रवीण मेहता द्वारा प्रस्तुत की गई। स्वागत भाषण संयोजक अतुल मेहता द्वारा किया।

गत वर्ष अन्नकूट महोत्सव के आय-व्यय की जानकारी पूर्व संयोजक अमित नागर (पंचोली) द्वारा प्रस्तुत की गई।

न्यास की भावी योजना की विस्तृत जानकारी न्यास के सचिव संतोष जोशी ने प्रदान की। अतिथि उद्बोधन श्री प्रेमनारायण नागर (वरिष्ठ समाजसेवी एवं पत्रकार) एवं अध्यक्षीय उद्बोधन न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता ने दिया। कार्यक्रम में नागर समाज के दूर दराज के गाँवों जिसमें उज्जैन के अलावा, इन्दौर, खजराना, राऊ, देवास, शाजापुर, माकड़ोन, डेलची, सरली, कड़ोदिया, पिपलौदी खेड़ा, पिपल्यामंडी, नागदा, रतलाम, सुखेड़ा, मड़ावदा, कनारदी, नारीया-सांरखेड़ी, पिपलू, नजरपुर, घटिया, पाटपाला, तिलावद, गोविन्द एवं पचलाना से हजारों की संख्या में उपस्थित होकर समाजजनों ने महाआरती एवं महाप्रसादी का लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर सभी युवा साथियों का सम्मान न्यास द्वारा किया गया। कार्यक्रम के एक दिन पूर्व से युवा साथियों एवं मातृशक्ति एवं बच्चों ने रांगोली, मंदिर का श्रृंगार एवं भोजन व्यवस्था को संभालने में अपनी अहम भूमिका निभाई। महाआरती पश्चात् समाज की दिवंगत महान आत्माओं को एवं मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद वीर जवानों को श्रृद्धांजलि अर्पित की गई। आभार डॉ.ललित नागर ने व्यक्त किया एवं कार्यक्रम का संचालन सचिव संतोष जोशी एवं अन्नकूट महोत्सव समिति के सक्रिय सदस्य गोविन्द नागर ने किया।

अन्नकुट महोत्सव 2016 : सराहनीय सेवा के लिये सम्मान

अन्नकुट महोत्सव ने युवा सक्रिय सदस्यों द्वारा लगातार सराहनीय सेवा प्रदान करने के लिये श्री हाटकेश्वर धाम न्यास द्वारा श्री अमित नागर, श्री कन्हैयालाल मेहता, श्री विकास नागर, श्री पं.गौरव नागर, श्री पं.नितीन नागर, पं.श्री सतीष नागर, श्री देवेन्द्र मेहता, श्री अजय नागर का श्री हाटकेश्वर धाम के प्रतिक चिन्ह एवं दुपट्टे से सम्मान किया गया।

मातृशक्ति द्वारा अतुलनीय सहयोग

अन्नकूट महोत्सव में माता-बहनों एवं बच्चों ने रंगों एवं फूलों की आकर्षक रांगोली, भजनों एवं भोजन व्यवस्था में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई, जिसमें श्रीमती अंजना नागर, श्रीमती नीलू मेहता, श्रीमती वंदना जोशी, श्रीमती रंजीता नागर, श्रीमती ममता मेहता, श्रीमती गरिमा दीक्षित, श्रीमती प्रज्ञा मेहता, श्रीमती अनिता नागर, श्रीमती राधा नागर, श्रीमती रमा मेहता, श्रीमती शकुन्तला नागर, श्रीमती बबीता नागर, श्रीमती हेमलता मेहता, श्रीमती तृप्ति मेहता, श्रीमती श्रद्धा नागर, श्रीमती ज्योति नागर, श्रीमती शिखा शर्मा (बेरछा), श्रीमती सलोनी नागर (पंचोली), श्रीमती दुर्गा नागर, श्रीमती आशा नागर तथा कुमारी कृतिका नागर, कु.कृतिका मेहता, कु.आस्था जोशी, कु.माही मेहता, कु.अवनी जोशी, कु.प्रियांशी नागर, कु.प्रियांशी जोशी, कु.रानू मेहता, कु.ज्योति नागर।

सक्रिय युवाओं का सराहनीय योगदान- अन्नकुट महोत्सव में हमेशा की तरह इस वर्ष भी अन्नकूट महोत्सव समिति के सक्रिय युवा सदस्यों ने आमंत्रण वितरण से लेकर कार्यक्रम की रूपरेखा, छप्पन भोग, व्यवस्था, महाआरती, प्रसादी-वितरण महाप्रसादी तक की सम्पूर्ण व्यवस्था तन-मन से सम्भाल रखी थी। वास्तव में यह कार्य सेवा के रूप में सराहनीय था। सेवाकार्य में श्री अतुल मेहता (संयोजक), श्री गोविन्द नागर, श्री संजय जोशी, श्री अमित नागर, श्री विशाल नागर, श्री कन्हैयालाल मेहता, श्री विकास नागर, श्री गौरव नागर, श्री नीतीन नागर, श्री मनोज नागर, श्री दीपक नागर, श्री देवेन्द्र मेहता, श्री हेमन्त मेहता, श्री डॉ.ललीत नागर, श्री संजय नागर, श्री अजय नागर, श्री विशाल मण्डलोई, श्री शैलेन्द्र नागर, श्री प्रमोद नागर, श्री कैलाश रावल, श्री आदर्श रावल, श्री श्रेयांश शुक्ल, श्री सुमीत नागर, श्री ललित नागर, श्री पं.सतीश नागर थे।

आभार एवं धन्यवाद- श्री हाटकेश्वर धाम न्यास एवं अन्नकूट महोत्सव समिति आप सभी समाजजनों का हृदय से आभार प्रकट करती है। आपने तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। उन सभी माता-बहनों को भी आभार जिन्होंने अपनी स्वेच्छा से 56 भोग व्यंजनों में अपनी सहभागिता प्रदान की। भगवान श्री हाटकेश को भोग लगाया। हमेशा इसी प्रकार सहयोग बना रहे। धन्यवाद।

अन्नकूट महोत्सव में विशेष सहयोग

* अन्नकूट महोत्सव में 56 भोग (व्यंजन) अर्पित श्री एवं श्रीमती मधुलिका विकासजी रावल (वृंदावन धाम) उज्जैन अपने स्व.माता-पिताजी श्रीमती कांताबाई श्री रामचन्द्रजी की स्मृति में हमारे इष्ट देव भगवान श्री हाटकेश्वर को 56 व्यंजनों का भोग अपनी ओर से अर्पित किया गया गत वर्ष भी आपकी ओर से 56 भोग लगाकर आजीवन 56 भोग लगाने की घोषणा की है।

* श्री अजय नागर पिता स्व.श्री कैलाशजी नागर (तराना वाले) ने अपने स्व.पिताजी श्री कैलाशचन्द्रजी नागर की स्मृति को चिरस्थाई रखने हेतु भगवान श्री हाटकेश को 56 भोग रखने हेतु सुव्यवस्थित लोहे का स्थायी स्टैंड (मंडप) बनाकर भेंट किया गया।

* श्री किरणकांतजी मेहता (न्यासी सदस्य) द्वारा अन्नकूट महोत्सव की महाप्रसादी में अपनी ओर से खीर बनाने हेतु 151 लीटर सांची का दूध प्रदान किया गया।

* श्री सुशील नागर (पप्पी भैया) उज्जैन ने अपने पिताजी स्व.श्री सत्यनारायणजी नागर की स्मृति में उनकी पसंदीदा व्यंजन, सत्यम कचोरी, महाप्रसादी में रखने हेतु पूरी सामग्री भेंट की।

* श्री गौरव नागर (श्री विनायक मार्बल) उज्जैन ने आकर्षक रंगीन आमंत्रण पत्र छपवाने हेतु विज्ञापन प्रदान कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

श्रीमती रमा सुरेन्द्र मेहता (दैनिक अवन्तिका) ने श्री हाटकेश्वर देवालय न्यास उर्दूपुरा धर्मशाला में (पेवर ब्लॉक) टाईल्स लगाने हेतु रु. 11,111/- ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह दान न्यास के श्री नरेन्द्रजी नागर को अन्नकूट महोत्सव कार्यक्रम में भेंट किए।

श्री हाटकेश्वर धाम में दान राशि भेंट

पिताजी-माताजी स्व.जागीरदार सा. दुर्गाशंकरजी त्रिवेदी एवं स्व.सौ.नारायणी देवी की स्मृति में

पुण्य स्मृति में 11000/- रु. श्री हाटकेश्वर धाम में भेंट हस्ते डॉ.पं.शिवेशचन्द्र त्रिवेदी 'शास्त्री' ज्योतिषाचार्य उज्जैन

पिताजी-माताजी स्व.द्वारकाप्रसादजी मेहता एवं स्व.चिंतामणी मेहता की स्मृति में
श्री महेश-द्वारकाप्रसादजी मेहता, सुदामा नगर, इन्दौर द्वारा
32 इंच एलईडी भेंट (1 नग) 16,000/-

1,001/- श्री महेश कैलाश नारायण जी मेहता, शिवपुरी
6000/- श्री सुरेन्द्र मेहता, सुमन (अध्यक्ष श्री हाटकेश्वर धाम उज्जैन)
प्रतिमाह 500/- रुपये आजीवन घोषणा में सन् 2016 की राशि जमा

नागर गौरव की 'रणनीति'

म.प्र. नागर युवा परिषद के अध्यक्ष पं.हेमन्त व्यास द्वारा अभिनित फिल्म रणनीति का प्रदर्शन 25 नवम्बर को हुआ, इस अवसर पर फिल्म में खलनायक की भूमिका निभाने वाले नागर युवा हृदय सम्राट पं.हेमंत व्यास की एक स्वागत रैली महाकाल मंदिर से निकाली गई, जगह-जगह उनका पुष्पहारों से स्वागत किया गया, नागरजन विशेष रूप से इस अवसर पर उत्साहित थे तथा समाज की ओर से भी सुसज्जित जीप पर सवार पं.व्यास का पुष्पहारों से अभिनंदन किया गया। रणनीति के डायरेक्टर ने बताया कि स्थानीय कलाकारों के साथ मिलकर हमने एक ऐसी फिल्म का निर्माण किया है, जिसमें मारधाड़, कामेडी और संगीत के साथ यह संदेश भी है कि यदि कोई रणनीति बनाकर कोई कार्य करे तो हर लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इस फिल्म में खलनायक की भूमिका अदा कर रहे पं.हेमन्त व्यास ने बताया कि फिल्म में जो उनकी भूमिका है वह उनके स्वभाव से बिल्कुल विपरित है, लेकिन इसके बावजूद भी उन्होंने इस भूमिका को एक चुनौती मानकर यह कार्य किया है। उन्होंने बताया कि मेरे अभिनय के साथ ही लोग स्थानीय कलाकारों की इस फिल्म को जरूर पसंद करेंगे। सोशल मीडिया के माध्यम से समाजजनों से अपील की गई है कि वे अपने इष्टमित्रों के साथ स्थानीय छविगृहों में इस फिल्म को अवश्य देखें। पं.व्यास अभिनित फिल्म को लेकर समाज में उत्साह का वातावरण है।

शरद पूर्णिमा के अवसर पर औषधियुक्त खीर का वितरण

उज्जैन में इन्द्रानगर सहयोगी मित्र मण्डल डॉ. प्रकाश जोशी के सौजन्य से औषधि युक्त खीर वितरण एवं कर्णवेधन चिकित्सा द्वारा दमा रोग की चिकित्सा की गई। इस चिकित्सा शिविर की विशेषता रही कि रोगी द्वारा रात्रि जागरण किया गया। ब्रह्ममुहूर्त में औषधियुक्त खीर का वितरण शिविर संयोजक डॉ. प्रकाश जोशी द्वारा किया गया। तत्पश्चात कर्णवेधन की चिकित्सा की गई। लगभग 700 रोगियों द्वारा औषधियुक्त खीर का पान किया गया एवं 90 रोगियों का कर्णवेधन किया गया। मालवा अंचल के अलावा बिहार, राजस्थान आदि के रोगियों ने इस शिविर का लाभ लिया। इस चिकित्सा शिविर को सफल बनाने में आयुर्वेद महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं, अवनीश नागर, चेतन नागर, उज्जवल जोशी, गौरव नागर, देवेन्द्र मेहता, ललित नागर का सराहनीय सहयोग रहा। इस अवसर पर चिकित्सा विशेषज्ञ के रूप में डॉ. नृपेन्द्र मिश्रा एवं डॉ. राम रक्ष शुक्ला द्वारा चिकित्सा परामर्श दिया गया। इस अवसर पर कानपुर एचबीटीआई के प्रोफेसर श्यामजी नागर एवं उनकी पत्नी श्रीमती स्मिता नागर श्रीमती वंदना नागर एवं चेतन नागर उपस्थित थे।

राज्यस्तरीय समारोह का 24 एवं 25 दिसम्बर को आयोजन

उज्जैन में दो दिवसीय राज्यस्तरीय समारोह का आयोजन दिनांक 24 एवं 25 दिसम्बर को होगा। 24 दिसम्बर 2016 को नागर रत्न स्व.श्री विष्णुप्रसादजी नागर की स्मृति में समिति की सांस्कृतिक इकाई अभिरुचि विकास मंच द्वारा 15वें सांस्कृतिक समारोह का आयोजन होगा, जो श्रीमती ज्योति राजेश त्रिवेदी (टमटा) द्वारा उनकी माताजी स्व.श्रीमती इन्दु पत्नी श्री रमेशचन्द्र त्रिवेदी को समर्पित रहेगा। 25 दिसम्बर 2016 को 39वें प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन होगा।

सांस्कृतिक समारोह
24-12-2016 सायं 7 बजे
प्रतिभा सम्मान समारोह
25-12-2016 मध्यान्ह 2 बजे
स्थान- पं. सूर्यनारायण व्यास संकुल, कालिदास संस्कृत अकादमी कोठी रोड़, उज्जैन

विगत वर्षों के अनुसार इस वर्ष भी आमंत्रण पत्र नहीं छपवाए गए हैं। नागर ब्राह्मण समाज के दो दिवसीय आयोजन में आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। ये आयोजन आप सबके स्नेह, सहयोग, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से प्रतिवर्ष किया जाता है।

आप सबसे समिति दो दिवसीय समारोह में सहभागिता एवं सहयोग हेतु अनुरोध करती है, जिससे छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन होकर समारोह की गरिमा निरंतर बढ़ती रहे।

निवेदक
म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली प्रोत्साहन समिति, उज्जैन (म.प्र.)

म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति, उज्जैन

प्रतिभा सम्मान समारोह 2016 हेतु चयनित छात्र-छात्राओं की सूची

क्र.	कक्षा	छात्र/छात्रा पिता/पति का नाम	प्राप्तांक/ प्रतिशत	पुरस्कार
1	नर्सरी	कु.अन्वेषा विशाल मेहता, उज्जैन	98.00	प्रथम
2	के.जी.I	कु.कौमुदी अम्बर व्यास, उज्जैन	98.50	प्रथम
3	के.जी.I	लक्ष्य नवीन मिश्रा, उज्जैन	93.11	द्वितीय
4	के.जी.I	कु.कैरवी भरत मेहता, उज्जैन	85.67	प्रथम
5	के.जी.II	कु.दिव्यांशी मनोज नागर, उज्जैन	100.00	प्रथम
6	के.जी.II	हार्दिक ललित नागर, उज्जैन	95.00	द्वितीय
7	के.जी.II	कु.गौरी अजय व्यास, उज्जैन	95.00	द्वितीय
8	के.जी.II	कु. हिरल नितिन नागर, उज्जैन	95.00	द्वितीय
9	पहली	सप्त संदीप मेहता, उज्जैन	95.33	प्रथम
10	पहली	कौशल मनीष शर्मा, उज्जैन	95.00	द्वितीय
11	पहली	कुश राम नागर, उज्जैन	95.00	द्वितीय
12	पहली	प्रियांशी संजय जोशी, उज्जैन	85.50	तृतीय
13	दूसरी	आराध्य संजय व्यास, उज्जैन	97.00	प्रथम
14	दूसरी	रक्षित हिमांशु नागर, उज्जैन	95.00	द्वितीय
15	दूसरी	ईशान शोभन त्रिवेदी, उज्जैन	95.00	द्वितीय
16	दूसरी	त्वरित मनोज नागर, उज्जैन	93.10	तृतीय
17	तीसरी	कु.अरण्या संदीप नागर, उज्जैन	95.00	प्रथम
18	तीसरी	भव्य राजकमल नागर, उज्जैन	95.00	प्रथम
19	तीसरी	कु.सुनिधि डॉ.नवीन मेहता, उज्जैन	93.10	द्वितीय
20	तीसरी	पार्थ विशाल नागर, उज्जैन	87.81	तृतीय
21	तीसरी	कु.आस्था गिरीश मेहता, उज्जैन	87.81	तृतीय
22	चौथी	कु.आरती सुनील मेहता, उज्जैन	87.87	प्रथम
23	चौथी	कु.वंशिका अभिलाष नागर, उज्जैन	60.00	द्वितीय
24	पाँचवी	कु.राजनिधि डॉ.धर्मेन्द्र मेहता, उज्जैन	95.00	प्रथम
25	पाँचवी	कु.आस्था संजय जोशी, उज्जैन	95.00	प्रथम
26	पाँचवी	तनय विराज पुराणिक, उज्जैन	76.00	द्वितीय
27	पाँचवी	कु.प्रियांशी मनोज नागर, उज्जैन	76.00	द्वितीय
28	पाँचवी	कु.वंशिका हेमन्त व्यास, उज्जैन	70.30	तृतीय
29	छठी	रचित हिमांशु नागर, उज्जैन	90.25	प्रथम
30	सातवीं	सौरभ लक्ष्मीकांत शर्मा, उज्जैन	90.25	प्रथम
31	सातवीं	प्रियांश गोविन्द नागर, उज्जैन	80.00	द्वितीय
32	सातवीं	कु.युक्ता गिरीश मेहता, उज्जैन	78.85	तृतीय
33	आठवी	कु.आयुषी विनोद नागर, उज्जैन	87.50	प्रथम
34	आठवी	प्रियांशु मनोज नागर, उज्जैन	87.50	प्रथम
35	आठवी	सुयोग सुदीप व्यास, उज्जैन	80.75	द्वितीय
36	आठवी	वैदिक संजय त्रिवेदी, उज्जैन	77.30	तृतीय

स्व.पं.सत्यनारायणजी त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार
(श्री योगेन्द्र त्रिवेदी उज्जैन द्वारा)

37	आठवी	कु.आयुषी विनोद नागर, उज्जैन	87.50	प्रथम
38	आठवी	प्रियांशु मनोज नागर, उज्जैन	87.50	प्रथम
39	आठवी	कु.कांची आशीष दीक्षित, खण्डवा	84.36	द्वितीय
40	आठवी	सुयोग सुदीप व्यास, उज्जैन	80.75	तृतीय

स्व.श्री विनायकलालजी मेहता, उज्जैन स्मृति पुरस्कार
(अंशुल रमेश मेहता उज्जैन द्वारा)

41	नवीं	कु.मोक्षदा मनमोहन नागर, देवास	93.10	प्रथम

42	नवीं	कु.कोमलिका महेश रावल, रतलाम	93.00	द्वितीय
43	नवीं	कु.पूनम मनोज व्यास, उज्जैन	80.50	तृतीय

स्व.मुखिया श्री कृष्णदासजी मेहता स्मृति पुरस्कार श्रीमती सावित्री मेहता, शाजापुर द्वारा

44	दसवीं	कु.रोशी डॉ.राजेश मेहता, उज्जैन	95.00	प्रथम
45	दसवीं	चिरायु हर्ष मेहता, इन्दौर	95.00	प्रथम
46	दसवीं	कु.प्रियल, आलोक नागर, उज्जैन	93.10	द्वितीय
47	दसवीं	चिन्मय हरीश पाण्डेय, मक्सी	91.00	तृतीय
48	दसवीं	यश ललित त्रिवेदी, महिदपुर	90.83	प्रोत्साहन

स्व.पटेल श्री दुर्गाशंकरजी नागर, स्व.श्रीमती मनोरमा नागर एवं स्व.श्री बद्रीलालजी नागर, लसूर्डिया ब्राह्मण स्मृति डी.एम.बी.पुरस्कार (श्री अनिल कुमार नागर मुख्य वन संरक्षक, होशंगाबाद द्वारा)

49	11वीं विज्ञान	चिन्मय राजेन्द्र नागर, शाजापुर	87.00	प्रथम
50	11वीं विज्ञान	कु.स्वर्णिमा डॉ.धर्मेन्द्र मेहता, उज्जैन	80.00	द्वितीय
51	11वीं विज्ञान	यशदीप विजय पण्डया, रतलाम	78.40	तृतीय
52	11वीं वाणिज्य	हिमांशु मनमोहन नागर, देवास	69.80	प्रथम

स्व.श्री समरथलालजी मेहता स्मृति छात्रवृत्ति (श्रीमती श्रृंगारबेन मेहता, उज्जैन द्वारा) (12वीं में समस्त विषय समूहों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर)

53	12वीं	कु.गीतिका नीरज दवे, इन्दौर	92.60	प्रथम

स्व.प्रदीप त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार (श्री आशीष दिनेश त्रिवेदी, अमेरिका द्वारा)

54	12वीं विज्ञान	कु.ख्याति आशीष मेहता, इन्दौर	91.40	प्रथम
55	12वीं विज्ञान	कु.शैली शलभ शर्मा, उज्जैन	84.40	द्वितीय
56	12वीं विज्ञान	लय संजय नागर, शाजापुर	80.80	तृतीय

स्व.कु.लिपि दवे सुपुत्री श्रीमती नीता-अजय दवे जयपुर स्मृति पुरस्कार श्रीमती सुनीता-डॉ.यज्ञनारायण मेहता, श्रीमती ममता-अक्षय मेहता, इन्दौर एवं श्रीमती कुमुद-जयेन्द्र व्यास, सूरत द्वारा

57.	12वीं वाणिज्य	कु.गीतिका नीरज दवे, इन्दौर	92.60	प्रथम

स्व.कु.लिपि दवे जयपुर स्मृति पुरस्कार (श्रीमती नीता-अजय दवे, जयपुर द्वारा)

58.	12वीं वाणिज्य	कु.अक्षिता राजीव मंडलोई, खंडवा	87.20	द्वितीय

स्व. कु.लिपि दवे जयपुर स्मृति पुरस्कार (श्रीमती रीता-जगदीश मेहता द्वारा 12वीं वाणिज्य तृतीय पुरस्कार

59.	12वीं वाणिज्य	कु.संगिनी शैलेष झा, उज्जैन	86.00	तृतीय
60.	डी.सी.ए.	विनीत त्रिलोकेश नागर, उज्जैन	67.20	विशेष
61.	IIM प्रवेश परीक्षा	भव्य पंकज रावल, भोपाल	IIM इन्दौर में प्रवेश	विशेष
62.	बी.ए.फिल्म मेकिंग	प्रांजल प्रवीण नागर, देवास	77.75	प्रथम

कु.सीमा त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार (श्री कृपाशंकर त्रिवेदी धार) द्वारा

63.	बी.एससी.	कु.आकांक्षा ललित त्रिवेदी, महिदपुर	75.34	प्रथम
64.	बी.एससी.	कु.कोमल महेश रावल, रतलाम	62.19	द्वितीय
65.	बी.कॉम.	विशाल त्रिलोकेश नागर, उज्जैन	60.85	प्रथम

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.श्री किशोर भाई त्रिवेदी शाजापुर स्मृति पुरस्कार (श्री दिलीप त्रिवेदी उज्जैन द्वारा)

66.	बी.एड.	श्रीमती कल्पना संजय नागर, लाडकुई	76.38	प्रथम

स्व.संजय व्यास स्मृति पुरस्कार (श्री आशीष कृष्णगोपाल व्यास उज्जैन द्वारा) (बी.ई. में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर)

67.	बी.ई.	कु.अदिति शैलेष मंडलोई, नागदा	82.60	प्रथम
68.	बी.ई.	कु.नेहा शैलेन्द्र पण्डया, सीहोर	81.10	द्वितीय
69.	बी.ई.	मुदित योगेन्द्र नागर, उज्जैन	76.80	तृतीय
70.	बी.बी.ए.	कु.सलोनी महेश नागर, उज्जैन	72.97	प्रथम

स्व.श्री भगवंतरावजी मण्डलोई (पूर्व मुख्यमंत्री म.प्र.) स्मृति स्नातकोत्तर पुरस्कार (श्री अमिताभ मण्डलोई, खण्डवा द्वारा)

71.	एम.ए. (ज्योतिवि.)	श्रीमती सुमन प्रमोद त्रिवेदी, उज्जैन	72.88	प्रथम
72.	MSc.	कु.स्वाति संजय नागर, शाजापुर	78.73	प्रथम
73.	MSc.	कु.शुभ्रा महेश त्रिवेदी, उज्जैन	73.50	द्वितीय
74.	M.Tech.	अंकित विनोद नागर, इन्दौर	IIT कानपुर से उत्तीर्ण	प्रथम
75.	एम.ई.	कु.रुचि राजेन्द्र नागर, मंदसौर	72.64	द्वितीय
76.	एम.बी.ए.	कु.नुपूर पंकज रावल, भोपाल	75.13	प्रथम
77.	एम.बी.ए.	गौतम मनोज जोशी, उज्जैन	61.33	द्वितीय
78.	एम.फिल.	रुपम डॉ.राजेन्द्र नागर, उज्जैन	76.00	विशेष
79.	PHD. Mec. Eng.	नमीष ओमप्रकाश मेहता, भोपाल	-	विशेष
80.	PHD. व्यव. प्रबंध	रवीन्द्र विपिन कुमार नागर, उज्जैन	-	विशेष
81.	PHD. संस्कृत (वेद)	रामबाबू राधारमण नागर, उज्जैन	-	विशेष
82.	संगीत प्रवेशिका	प्रियांशी गोविन्द नागर, उज्जैन	88.67	प्रथम

83.	संगीत 5 साल	अक्षिता योगेश पुराणिक, उज्जैन	72.00	प्रथम
84.	डिजिटल इंडिया	कु.अंजलि ललित त्रिवेदी, उज्जैन		विशेष
85.	अंतर्राष्ट्रीय सभा में प्रथम	कु.नेहा लोकेश शुक्ल, उज्जैन		विशेष
86.	राष्ट्रीय कर्मशाला	कु.आकांक्षा ललित त्रिवेदी, महिदपुर		विशेष
87.		कु.आयुषी विनोद नागर, उज्जैन प्रांतीय विज्ञान मेला एवं वैदिक गणित समारोह में प्रथम स्थान		विशेष
88.		डॉ.सोनम डॉ.राजेन्द्र नागर, उज्जैन राष्ट्रीय विज्ञान सभा में प्रथम		विशेष
89.		यश मनीष रावल, रतलाम राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता द्वितीय स्थान		विशेष
90.		मुदित विवेक नागर, रतलाम राज्य शालेय क्रीड़ा प्रति. कराटे		विशेष
91.		विनय त्रिलोकेश नागर, उज्जैन वि.वि. स्तरीय प्रतियोगिता बास्केटबाल		विशेष
92.		आराध्य संजय व्यास, उज्जैन नेशनल स्कालरशिप परीक्षा		विशेष
93.		भव्य राजकमल नागर, उज्जैन नेशनल ओलंपियाड परीक्षा (गणित)		विशेष

विशिष्ट पुरस्कार

आशा-विष्णु स्वर्णपदक (समिति द्वारा पांच बार पुरस्कृत)

94. कु.पूनम व्यास सुपुत्री श्री मनोज-आशा व्यास उज्जैन
95. सौरभ शर्मा सुपुत्र श्री लक्ष्मीकांत-सुषमा शर्मा, उज्जैन

स्व.श्रीमती हेमकान्त दामोदरजी मेहता स्मृति मंजूषा

(श्री किरणकान्त मेहता एवं श्रीमती शशिकला रावल, उज्जैन द्वारा)

हायस्कूल/सेकेण्डरी स्तर-

96. कु. रोशी मेहता सुपुत्री डॉ.राजेश डॉ.शोभिता मेहता, उज्जैन
97. चिरायु मेहता सुपुत्र- श्री हर्ष-हेमा मेहता, इन्दौर

हायस्कूल/सीनियर स्कूल स्तर-

98. कु.गीतिका दवे सुपुत्री-श्री नीरज-संगीता दवे इन्दौर

विश्वविद्यालयीन स्तर-

99. कु.अदिति मंडलोई सुपुत्री शैलेष मंडलोई, नागदा

पं.श्रीकान्तजी व्यास इकलेरा माताजी स्मृति पुरस्कार

(श्रीमती शान्ता व्यास द्वारा)

स्नातक स्तर पर सर्वाधिक अंक-

100. कु.अदिति मण्डलोई सुपुत्री- श्री शैलेष मंडलोई, नागदा

स्व.श्री चन्द्रकांत त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार (श्रीमती श्यामा त्रिवेदी उज्जैन द्वारा)

हायस्कूल/सेकण्डरी स्तर पर अंग्रेजी में सर्वाधिक अंक

101. कु.रोशी राजेश मेहता, उज्जैन
102. चि. चिरायु हर्ष मेहता, इन्दौर

Kashipur Networks

http://www.kashipur.net +91-9462905947 your web partners...

Services Offered :-
Domain Name Registration
Shared Web Hosting
VPS Hosting
Cloud Hosting
Dedicated Server Hosting
Reseller Hosting
Business E-Mail
Enterprise E-Mail
G Suite
SSL Certificates
Website Builders
Bulk SMS
Custom Web Development
Drupal, OpenCart
E-Commerce Applications
Android Application

वेबसाइट बनवाने हेतु संपर्क करें !!!

Get your Business Online in an Affordable way

Start Building your web presence @ Rs. 125.00/mo

DISCOUNT CODE
CASHLESS

Order Online Today @ http://shop.kashipur.net
Server Locations Available : INDIA | USA | UK

Host on Indian Servers to achieve the best latency possible for your indian customers...

गणकला रजत पदक (स्व.श्री गणगौरीलालजी मेहता एवं स्व.श्रीमती कलावती मेहता स्मृति)
(श्री जगदीश मेहता-श्रीमती रीता मेहता एवं परिवार द्वारा)
कक्षा 5वीं में तथा 8वीं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को

103. कु.राजनिधि मेहता उज्जैन	कक्षा 5वीं
104. कु.आस्था जोशी, उज्जैन	कक्षा 5वीं
105. कु.आयुषी नागर, उज्जैन	कक्षा 8वीं
106. प्रियांशु नागर, उज्जैन	कक्षा 8वीं

विशेष सम्मान
विद्या भारती ANHM शिक्षा सम्मान सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा-2016 कक्षा 10वीं से स्नातकोत्तर स्तर तक सर्वाधिक अंक

107. 1. कु.रोशी मेहता सुपुत्री- डॉ.राजेश-शोभिता मेहता, उज्जैन
108. 2. चिरायु मेहता सुपुत्र श्री हर्ष-हेमा मेहता, इन्दौर
109. संस्कार भारती एजेजेएम कला सम्मान- सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा 2016
24 दिसम्बर 2016 के सांस्कृतिक समारोह से चयनित

प्रोत्साहन भेंट - 21
(श्री अभिमन्यु त्रिवेदी 'गड़बड़ नागर' उज्जैन द्वारा अपने माता-पिता स्व.श्रीमती सत्यभामा एवं श्री सुखदेवजी त्रिवेदी की स्मृति में)

कक्षा 2री	हेमांग राहुल नागर, चार्वी नितेश नागर, हार्दिक चक्रदत्त मेहता, माही सूरज मेहता, रुद्र अमित नागर
तीसरी	अथर्व शैलेन्द्र व्यास, स्नेहा मनोज व्यास, गौरव लक्ष्मीकांत शर्मा, शिवांश विकास नागर, मनन अशोक त्रिवेदी
पांचवी	स्मृति अभिलाष मेहता, मीत शलभ शर्मा, हृषित अभिलाष नागर
सातवीं	नक्षत्र राजीव त्रिवेदी, आशी नितेश नागर, सहज नवीन मिश्रा, परिधि अभिलाष मेहता
आठवीं	चार्वी मनीष शर्मा, हितेषी मनोज शर्मा, प्रियांश हरिओम नागर (जावद) जयेश सुनील दवे (रतलाम)

निर्णायक गण : डॉ.कमलकांत मेहता, डॉ.रमाकान्त नागर, विष्णुदत्त नागर, उज्जैन

अन्य विशेष पुरस्कार

1. स्व.श्री विश्वनाथजी मेहता स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार
(श्री ओमप्रकाश मेहता वरिष्ठ पत्रकार भोपाल द्वारा)
(श्री दिलीप मेहता पत्रकार, इन्दौर)
2. स्व.श्री शंकरगुरु नागर, शाजापुर स्मृति सामाजिक पत्रकारिता पुरस्कार
(श्री दामोदर नागर एवं श्री मधुसुदन नागर उज्जैन द्वारा)
3. स्व.श्री रमाकान्त नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार
(श्री संगीता विनोद नागर भोपाल द्वारा)

पुरस्कार एवं समारोह सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने हेतु समिति के अध्यक्ष रमेश मेहता 'प्रतीक' 530, सेठी नगर, उज्जैन दूरभाष क्र. 0734-2521228, मो. 9425093702 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

पुरस्कार हेतु चयनित विद्यार्थियों को पृथक से सूचना दि. 15 दिसम्बर 2016 तक भेज दी जाएगी।

पंडित विश्वनाथजी मेहता स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार

वरिष्ठ पत्रकार श्री ओम प्रकाशजी मेहता द्वारा प्रायोजित पं.विश्वनाथजी मेहता स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार इस वर्ष स्पोर्ट्स पत्रकार श्री दिलीप मेहता को प्रदान किया जाएगा। ज्ञातव्य है कि श्री मेहता ने कई बार अंतरराष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं की रिपोर्टिंग की है।

पं.रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता सम्मान 2016

श्रीमती मनोरमा नागर को

शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित सेवा, उत्कृष्ट योगदान और असाधारण उपलब्धियों के लिए हर साल दिया जाने वाला 'स्व.रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टा पुरस्कार 2016' इस बार मक्सी जिला शाजापुर की उच्च श्रेणी शिक्षिका श्रीमती मनोरमा नागर को दिया जायेगा। उन्हें ये पुरस्कार उज्जैन में 25 दिसम्बर को म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभा प्रोत्साहन समिति के राज्यस्तरीय वार्षिक सम्मान समारोह में प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार के रूप में सम्मान निधि, स्मृति चिन्ह और प्रशस्तिपत्र भेंट किया जाता है। पुरस्कार का यह ग्यारहवां वर्ष है।

यह पुरस्कार देवास के पूर्व सहायक शाला निरीक्षक स्व.रमाकांत नागर की स्मृति में उनकी बेटी एवं व्याख्याता श्रीमती संगीता विनोद नागर ने स्थापित किया है। इससे पूर्व यह पुरस्कार नागर ब्राह्मण समाज के सर्वश्री हेमन्त दुबे (शाजापुर), शीलाबेन व्यास (उज्जैन), दिलीप मेहता (देवास), महेश नागर (शाजापुर), मोहन नागर (उज्जैन), कमल नागर (राजगढ़), संजय त्रिवेदी (उज्जैन), मोहनलाल नागर (राजगढ़), मुकेश मेहता (शिवपुरी) व श्री अभिजीत व्यास (धामनोद) को प्रदान किया जा चुका है।

रतलाम में जमा गरबों का रंग

नागर महिला मंडल शाखा रतलाम के तत्वावधान में एवं म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा रतलाम में पदाधिकारियों के तत्वावधान में 1.10.16 से 10.10.16 तक जैन कन्या उ.मा. विद्यालय काटजू नगर रतलाम के क्रीडा प्रांगण में नवरात्री महोत्सव में परम्परागत रीति से गरबा रास आयोजित किया गया। गरबा रास में नागर समाज की बालिकाओं एवं महिलाओं द्वारा माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना कर आराधना की गई। प्रतिदिन पृथक-पृथक ड्रेस कोड में गरबा रास किया गया। इस वर्ष पूरे दस दिवसीय नवरात्रि होने से प्रतिदिन गरबा का खूब रंग जमा इसमें समस्त नागर जन ने एक जुटता का परिचय दिया। महिला मण्डल की अध्यक्षा सुश्री मंगला दवे द्वारा बताया गया कि विगत 8 वर्षों से जैन विद्यालय का प्रांगण ट्रस्टियों द्वारा नागर समाज को नवरात्रि महोत्सव हेतु निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसके लिये समाजजन द्वारा ट्रस्टियों का शाल, श्रीफल से स्वागत कर आभार व्यक्त किया गया।

प्रतिभाओं का सम्मान

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद शाखा रतलाम द्वारा दि. 16.10.2016 को वेद व्यास कालोनी स्थित सूरज हाल में आयोजित किया गया। उक्त समारोह में कक्षा एलकेजी से सर्वोच्च शिक्षा तक 60 प्रतिशत एवं इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले तथा विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली एवं नागरजनों को सम्मानित किया जाता है।

इस वर्ष आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथी शाजापुर निवासी श्री ब्रजगोपालजी मेहता, संभागीय उपायुक्त, आदिम जाति कल्याण विभाग म.प्र. संभाग इन्दौर, विशेष अतिथी श्री हेमन्त व्यास, म.प्र. नागर ब्राह्मण युवा परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष उज्जैन एवं श्री अभिनव दवे शाखा प्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक इन्दौर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के आरंभ में अतिथियों द्वारा नागर शिरोमणी संत श्री नरसिंह मेहता व मां सरस्वती का पूजन दीप प्रज्वलित कर किया गया। कु. नयना व्यास द्वारा सरस्वती वन्दना की प्रस्तुती दी एवं श्री विभाष मेहता द्वारा कैसियों बजाकर उनका साथ दिया। तत्पश्चात् नागर समाज के पं.श्री जितेन्द्र रावल सैलाना, पं.श्री विकास नागर रतलाम एवं पं.श्री मुकेश नागर रतलाम द्वारा शास्त्रोक्त विधि से मंत्रोच्चारण व शांतिपाठ कर कार्यक्रम आरंभ हुआ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अभिनव दवे ने भी अपने अनुभव बच्चों एवं अभिभावकों को बताते हुए कहा कि यह जरूरी नहीं कि हर विद्यार्थी 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर ऊंचाइयों पर पहुँचे। इसमें अभिभावकों का त्याग व योगदान अत्यन्त जरूरी है यह भी कहा कि खेल बच्चों के व्यक्तित्व को निखारते हैं। हर विद्यार्थी को खेल में रूचि लेना आवश्यक है। श्री दवे ने एक लघु क्विज प्रतियोगिता आयोजित की। बच्चों से कुछ सवाल पूछे। जिनका सही उत्तर यशदीप पण्डया, तनिष्क भट्ट, कु.कोमोलिका रावल व अनन्या नागर ने दिये। श्री दवे ने उनकी सराहना करते हुए उन्हें पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथी श्री बृजगोपालजी मेहता ने अपने जीवन के अनुभव बताते हुए कहा कि वे नागर शिरोमणी संत श्री नरसिंह मेहता को अपना आदर्श मानते हैं कोई भी व्यक्ति या पद छोटा या बड़ा नहीं होता अपनी मेहनत व योग्यता और आत्मविश्वास से आगे बढ़ते हुए दुनिया की हर ऊंचाई को प्राप्त कर सकता है।

सम्मान समारोह में शास.चिकि.रतलाम से सेवा निवृत्त श्रीमती किरण मेहता का शाल एवं पुष्प गुच्छ से सम्मानित किया गया तथा नवांगतुक श्री पौराणिक एवं श्री निवृत्तिनाथ व्यास का पुष्प हार से स्वागत किया गया।

भारतीय सेना में विभिन्न पदों पर पदस्थ तीन सैनिकों श्री विश्वास वी.डी. मेहता वायुसेना, श्री अमित राधेश्याम मेहता, बी.एस.एफ. दिल्ली तथा श्री अनुप योगेश नागर को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह में 37 प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कु.कोमल महेश रावल को उनके द्वारा LEB. Tech Diploma करने पर श्रीमती स्नेहलता, वी.डी. नागर द्वारा नगद रु. 501/- से पुरस्कृत किया गया। अन्य गति विधियों में मुद्रित विवेक नागर को राज्य स्तरीय कराटे प्रतियोगिता एवं यश मनीष रावल को द्वितीय राष्ट्र स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता हरियाणा में भाग लेने पर विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पं.श्री जितेन्द्र रावल द्वारा पांच एवं श्री विकास नागर द्वारा तीन विशेष पुरस्कार दिये गये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथी श्री बृजगोपालजी मेहता द्वारा 11000/- रुपये एवं श्री अभिनव दवे द्वारा 5000/- रुपये समाज को प्रदान किये गये। विशेष अतिथी श्री हेमन्त व्यास द्वारा उनके द्वारा गाये भजनों की सीडी समाजजनों को वितरित की गई। परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री विभाष मेहता द्वारा समाज की वार्षिक कार्यक्रम की जानकारी दी।

कार्यक्रम में कु.कनिष्का सुपुत्री हर्षा-विश्वास मेहता व कु.द्राक्षा सुपुत्री श्रीमती तृप्ती-विवेक मेहता द्वारा मनमोहक नृत्य की प्रस्तुती दी गई। जिसने सभी समाजजन व अतिथियों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम की सफलता का श्रेय अंक सूची चयन समिति की सदस्य श्रीमती हर्षा-विश्वास मेहता, श्रीमती भारती-शैलेन्द्र शर्मा, श्रीमती प्रज्ञा-आशीष दीक्षित को है। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रबल मेहता व श्रीमती वरुणा मेहता द्वारा किया गया। श्री हेमन्त भट्ट द्वारा कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों, समाजजनों एवं संचालकों का धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया व समापन पर आयोजित सहभोज में सभी को आमंत्रित किया। सभी समाजजनों ने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया।

-श्रीमती रंजना-सुशील नागर
हेमन्त-शर्मिला भट्ट

समाजजनों ने प्राचीन ऐतिहासिक नगरी महेश्वर यात्रा का आनन्द लिया

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी श्रावण मास में दिनांक 14.8.16 रविवार को म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा रतलाम के तत्वावधान में परिषद् के सदस्यों द्वारा सपरिवार म.प्र. की ऐतिहासिक नगरी महेश्वर की यात्रा का आयोजन किया गया।

यात्रा प्रातः 7 बजे श्री संजय दवे वेद व्यास कालोनी स्थित निवास से बस द्वारा श्री जय हाटकेश के उद्घोष के साथ आरम्भ हुई। इस दौरान सभी ने श्री हनुमान चालीसा एवं श्री रुद्राष्टकम का पाठ करते हुए हमारी यात्रा आगे बढ़ रही थी।

लगभग 11.30 बजे हमारी बस माँ अहिल्या की नगरी महेश्वर पहुँची। वहाँ से चाय काफी पीकर हम माँ नर्मदा के घाट की और रवाना हुए। रास्ते में माँ रानी अहिल्या की विशाल प्रतिमा एवं उनकी पालकी देखी। तत्पश्चात् 300 वर्ष पुराना वटवृक्ष देखा जिस पर प्राकृतिक रूप से नाग-नागिन का जोड़ा बना हुआ था सभी ने वटवृक्ष की तीन परिक्रमा लगाई।

वहाँ से हमारा काफिला आगे बढ़ा।

वहाँ हमने हस्त निर्मित माहेश्वरी साड़ियों का कारखाना देखा। उसके बाद हम सभी घाट पर पहुँचे। अत्यन्त मनोहारी दृश्य था कुछ देर घुमने के बाद सभी ने नौका विहार (मोटर बोट) का आनन्द लिया। वहाँ से हम राज राजेश्वर सहस्त्रार्जुन मंदिर पहुँचे। वहाँ पर भगवान भोलेनाथ की चाँदी की प्रतिमा के दर्शन का लाभ लिया। तत्पश्चात् लगभग दो बजे भोजन शाला पहुँचे जहाँ पर स्वादिष्ट भोजन एवं फलाहार का रसास्वादन किया। कुछ समय विश्राम पश्चात् पुनः घाट पर पहुँचे वहाँ सभी ने नर्मदा मैया की जय बोलते हुए नर्मदा में डुबकी लगाई। लगभग एक घंटे तक तैराकी का आनन्द लिया। सभी को बहुत मजा आया।

इसी एक दिवसीय ऐतिहासिक यात्रा में सर्वश्री नवनीत-ज्योति मेहता, सुशील-रंजना नागर, शरद-भारती मेहता, सत्येन्द्र-सविता मेहता, हरीश-ज्योति मेहता, विभाष-कल्पना मेहता, संजय-अनुराधा दवे, दिलीप-रेखा मेहता, योगेश-रेखा नागर, ओम-प्रमिला त्रिवेदी, आनन्द-रीना मेहता, शैलेन्द्र-अमिता मेहता, विजय-अंजु पंड्या।

श्रीमती रुकमणी मेहता, श्रीमती पवित्रा मेहता, श्रीमती प्रमिला रावल, सुश्री मंगला दवे, श्रीमती भारती शर्मा, श्रीमती रानी दवे, श्रीमती रश्मि नागर, श्रीमती सुनिता रावल, श्रीमती पुष्पा मेहता, श्रीमती रिचा दवे, श्रीमती अलका मेहता, श्रीमती वरुणा मेहता सभी सपरिवार शामिल थे एवं हमारे प्यारे-प्यारे बच्चों के साथ ने हमारी यात्रा में चार चांद लगा दिये।

-श्रीमती रंजना सुशील नागर
कस्तुरबा नगर, रतलाम

समाज में पद नहीं, सेवा का महत्व

शाजापुर में शरदोत्सव सम्पन्न

समाज में पद नहीं सेवा का महत्व है। सेवा करते हुए व्यक्ति को वो सम्मान प्राप्त होता है जो पद पर रहते हुए नहीं मिलता। इसलिए व्यक्ति को कभी भी समाज में पद की लालसा नहीं रखते हुए नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने का संकल्प लेना चाहिए। परोपकार भाव से की गई सेवा के पश्चात मिला हुआ संतोष ही सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह बात शिक्षाविद् पं. भगवानदास नागर ने स्थानीय हरायपुरा स्थित नागर ब्राह्मण समाज की धर्मशाला में रविवार की रात आयोजित शरदोत्सव कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कही।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री नागर ने कहा कि विद्यार्थियों को एकाग्रता पूर्वक विद्याअर्जन करना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में विद्या अध्यन के उपरांत जीवन में उपलब्धि का मिलना तय है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए समाज के अध्यक्ष वीरेंद्र व्यास ने कहा कि समाज को संगठित बनाने के लिए सभी का योगदान आवश्यक है। संगठित समाज ही विकास का आधार होता है। व्यक्ति के विकास के लिए संगठित समाज का होना आवश्यक है। नागर ब्राह्मण युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हेमंत दुबे ने कहा कि युवाओं को अपने व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ अपनी आजीविका के लिए नौकरियों की तुलना में व्यवसाय को भी अपनाना चाहिए। समाज को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए सही व्यवसाय का चयन ही समाज की समृद्धता का परिचायक है। कार्यक्रम के विशेष अतिथि समाज के वरिष्ठ डॉ. मनोहरलाल शर्मा, मप्र नागर ब्राह्मण परिषद के उपाध्यक्ष बीएल मेहता, सुरेश दवे मामा, पं. रमेशचंद्र रावल थे।

कार्यक्रम को पं. लालशंकर मेहता, महिला मंडल की सचिव श्रीमती सुषमा नागर, दिलीप नागर ने भी सम्बोधित किया। स्वागत भाषण नागर युवा परिषद के अध्यक्ष विवेक मेहता ने दिया। इसके पूर्व स्वस्ति वाचन संजय नागर एवं पं. राजेंद्र प्रकाश व्यास द्वारा किया गया। समाज के प्रवक्ता पं. दिलीप नागर ने बताया कि कार्यक्रम में समाजसेवा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले समाजसेवी संजय नागर, परमानंद नागर, प्रसून मेहता एवं कक्षा 1 से स्नातकोत्तर कक्षाओं एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ अंक लाने वाले समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन समाज के सचिव अरूण व्यास एवं राजेंद्र नागर ने किया एवं आभार नागर युवा परिषद के महासचिव जगदीश नागर जग्गी ने माना। कार्यक्रम के पश्चात दुग्धपान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद थे।

पं. नागर ने ग्राम दुहानी में की भागवत कथा

पं. बालकृष्ण नागर द्वारा समीपस्थ ग्राम दुहानी में सात दिवसीय भवगत कथा का वाचन किया गया। नवरात्री के पावन अवसर पर दिनांक 01 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक ग्राम दुहानी स्थित राम मन्दिर परिसर में प्रतिदिन पं. नागर ने उपस्थित भक्तों को भागवत का रसपान करवाया। प्रतिदिन बड़ी संख्या में भक्त भागवत कथा श्रवण करने के लिये कथा स्थल पर पधारें। कथा के अंतिम दिन ग्राम के मुख्य मार्गो से चल समारोह निकाला गया। चल समारोह का पूरे रास्ते में भव्य स्वागत किया गया, चल समारोह पश्चात कथा स्थल पर विशाल भण्डारे का आयोजन भी समिति की ओर से किया गया।

गोवर्धन लीला ज्ञान और भक्ति को बढ़ाती है-पं. मेहता

शाजापुर में गोवर्धननाथ हम अनाथों के नाथ हैं पूर्व में जगन्नाथ दक्षिण में रामेश्वर, पश्चिम में द्वारकानाथ और उत्तर में बद्रीनाथ है। इन चारों के मध्य में है गोवर्धननाथ। वह सबका स्वामी है। वह चारों दिशाओं का देव है। गोवर्धन लीला ज्ञान और भक्ति को बढ़ाती है। परमात्मा से प्रेम करने का साधन भागवत शास्त्र है। यह उद्गार भागवत सप्ताह के अंतर्गत गोवर्धननाथ मंदिर (हवेली) में भागवत कथा के समापन अवसर पर प्रसिद्ध कथावाचक पं. लालशंकर मेहता ने रखे। कथा विराम के पश्चात् मंदिर हवेली के मुखिया परिवार प्रो. श्री सुरेश मेहता, मुकेश मेहता, ब्रजगोपाल मेहता, सुरेन्द्र मेहता, योगेश मेहता, निकुंज मेहता (समस्त मेहता मुखिया परिवार हवेली) द्वारा भागवतपुराण का पूजन व आरती उतारी। साथ ही हाटकेश्वर देवालय न्यास के अध्यक्ष एवं मंदिर समिति के प्रमुख श्री वीरेन्द्र व्यास ने भी पुराण का पूजन व आरती उतारी। पं. मेहता का शाल, श्रीफल, पुष्पमाला द्वारा मुखिया परिवार ने सम्मान किया।

कथा के मध्य क्षेत्रीय विधायक श्री अरूण भीमावद एवं न.पा. अध्यक्ष प्रतिनिधि क्षितिज भट्ट द्वारा भी व्यास पीठ पर पं. मेहता का सम्मान किया गया। शाम 5 बजे भागवतपुराण की भव्य शोभायात्रा बेण्ड बाजों के साथ नगर में निकाली गई। प्रसाद वितरण किया। मेहता मुखिया परिवार ने सभी का आभार माना। उल्लेखनीय है कि मुखिया परिवार के पूर्वज श्री मोतीलाल जी मेहता ने गोवर्धननाथ जी प्रभु को पुष्टि सेवा के लिये प्रतिष्ठित कराया था। उन्हीं के वंशज प्रभुश्री की सेवा करते आ रहे हैं। अष्टभुजा धारी प्रभुजी का ऐसा स्वरूप भारत में कहीं भी नहीं है। अष्टभुजाओं में शंख, चक्र, गदा, पद्म, बांसुरी गिरीराज धारण, गोचरण एवं गोप गोपियों के साथ स्वरूप दर्शन होते हैं। विशेष उत्सवों में जन्माष्टमी,, नरसिंह

जयंती, वामन जयंती, वल्लभ जयंती, रामनवमी, दीपावली अन्नकुट, फाग, शरदोत्सव, हिन्डोरा आदि के विविध मनोरथ एवं उत्सव होते हैं।

दूर-दूर से वैष्णव भक्त दर्शन करने आते हैं। मेहता परिवार द्वारा संचालित पुष्टिमार्गीय मंदिर हवेली में सात दिवस तक पं. मेहता जी ने श्रीमत् भागवत कथा श्रवण कराई एवं आठवें दिवस गीता पाठ हुआ। स्मरण रहे कि पं. लालशंकर मेहता हाटकेश्वर देवालय न्यास के प्रमुख न्यासी भी हैं।

-मुखिया पं. सुरेन्द्र मेहता द्वारा
मोबा. 88781-15575

श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर में नागर ब्राह्मण समाज का दीपावली मिलन समारोह व अन्नकुट महोत्सव सम्पन्न

मन्दसौर में श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर पर नागर ब्राह्मण समाज का अन्नकुट महोत्सव, दीपावली मिलन उत्साह व पूर्ण धार्मिक विधि विधान के साथ सम्पन्न हुआ। प्रात: 8बजे से भगवान श्री हाटकेश्वर महादेव का अभिषेक पं. मुरली नागर, पं. सुनील नागर तथा पं. मुकेश नागर के आचार्यत्व में हुआ। यजमान श्री मुरली नागर, विष्णु नागर आदि ने सपत्निक अभिषेक किया। अभिषेक, पूजन, महाआरती में सर्व श्री जयेश नागर, सतीश नागर, गोविन्दप्रसाद नागर, कमल मेहता, प्रभाशंकर मेहता, भागीरथ नागर, प्रवीण मेहता, दिनेश नागर, डॉ. राजेन्द्र नागर, मनोज दवे, विकास दवे, महेश नागर, बाबूलाल नागर, ओमप्रकाश नागर, रमेश नागर, चन्द्रशेखर नागर, दिनेश नागर, जगदीश नागर, धीरेन्द्र नागर, अनिल मेहता, किशनलाल नागर, भरत नागर, राधेश्याम नागर, डॉ. हनुमान नागर, हेमन्त जोशी, रामस्वरूप नागर, शिवनारायण नागर, रवि नागर, डॉ. मोहन नागर, डॉ. कैलाश नागर, मोहित मेहता, रचित मेहता, कमलेश नागर, निखिल नागर, महिला मण्डल अध्यक्ष श्रीमती मधु मेहता, श्रीमती संगीता नागर, श्रीमती अलका नागर, श्रीमती दीपिका मेहता, श्रीमती निर्मला नागर, श्रीमती प्रतिभा नागर, अनिता नागर, आरती नागर, भगवती नागर, खुशबु नागर, मुक्ति मेहता, वीणा मेहता, कुसुम दवे, अम्रता दवे, माया मेहता, कृष्णा मेहता, मितु नागर, कविता नागर, कुसुम नागर, वंदना दवे, विद्या नागर, कलादेवी नागर, मधु जोशी, किर्ती नागर, मनीषा नागर, सीमा नागर, सोम्या नागर, उषा नागर, पूजा नागर, खुशी दवे, नियमा नागर, कौशल्या नागर, गट्टूजी, सिविदी नागर समस्त नागर महिला मण्डल उपस्थित रहे। सभी ने भगवान श्री हाटकेश्वर और अन्नकुट के दर्शन किये। महाप्रसादी का लाभ लिया। इस अवसर पर बच्चों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, रांगोली प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इस दौरान लोकन्यास की बैठक आयोजित की गई जिसमें आगामी माह नरसिंह मेहता जयंती, महाशिवरात्रीपर्व धूमधाम से मनाये जाने, लोक न्यास भूखण्ड नामांतरण एवं सिविल प्रकरण की जानकारी सदन को दी गई।

-जयेश नागर

झाबुआ में अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न

समाज की नवीन कार्यकारिणी का गठन

नागर ब्राह्मण समाज द्वारा 12वां अन्नकूट महोत्सव का आयोजन कॉलेज मार्ग स्थित गायत्री शक्तिपीठ पर किया गया। इस अवसर पर समाज की बैठक भी हुई, जिसमें नवीन कार्यकारिणी का गठन कर पदाधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके बाद भगवान को भोग लगाकर महाआरती व महाप्रसादी का आयोजन

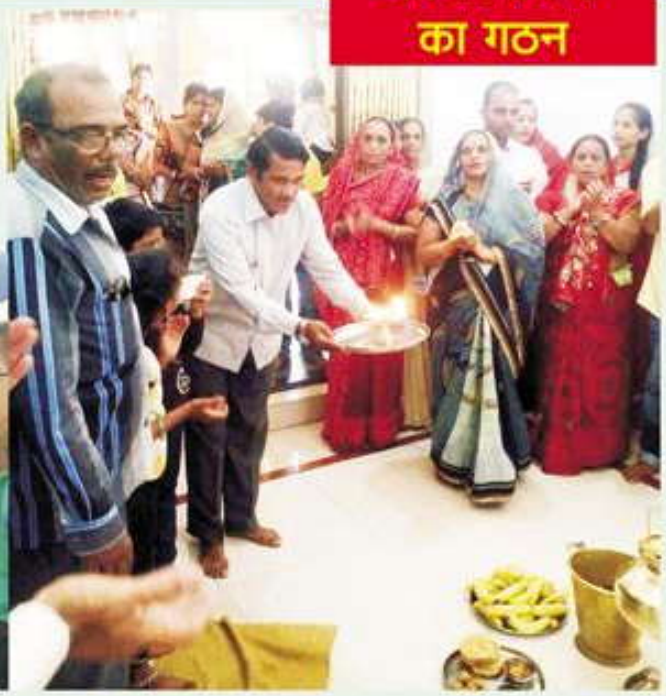

किया गया। इस मौके पर महाप्रसादी ग्रहण करने के लिए बड़ी संख्या में समाजजन उमड़े। सर्वप्रथम समाज की बैठक हुई, जिसमें अतिथि जिला सहकार मंडल के अध्यक्ष यशवंत भंडारी, अजय रामावत, करिश्मा रामावत, नीरजसिंह राठौर, वीरेन्द्रसिंह ठाकुर व राजेन्द्र सोनी थे। इस अवसर पर समाज की नवीन कार्यकारिणी गठित हुई, जिसमें अध्यक्ष महेन्द्रप्रसाद नागर व सचिव निलेश नागर को बनाया गया। संरक्षक सुभाषचन्द्र नागर, राजेश नागर, लक्ष्मीकांत नागर, परामर्शदाता नारायणप्रसाद नागर, सहसचिव धर्मेन्द्र नागर तथा कोषाध्यक्ष मितेश नागर सर्वानुमति से मनोनीत हुए।

अब पैर भी मुस्काएँ

चन्दन की खुशबू में

वामा™ क्रीम

* फटी एड़ियाँ
* फटे हाथ-पैर
* खारवे * केन्दवा
* मामूली जलना
* सूखी त्वचा
* आफ्टर शेव
* फोड़े-फुंसी
* त्वचा का कटना
* मामूली घाव आदि के लिये अचूक क्रीम

पंचसुधा

सुखामृत

* जालिम-एक्स मलम * जालिम-एक्स रूज़ * जालिम-एक्स लोशन * अंजू कफ सायरप
* मेकाडो बाम * पेन क्योर आइंटमेंट * पेन ऑफ ऑईल * अंजू बाम

अमित विद्यासागर नागर 1 नवम्बर
मंजरी तापस याज्ञिक 1 नवम्बर
सृष्टि सागर झा 5 नवम्बर

मिष्टी तमिश दशोरा
17 नवम्बर

अभिलाषा अमित त्रिवेदी 21 नवम्बर
शालिन हाटकेश दवे 25 नवम्बर

-प्रेषक- ध्वज त्रिवेदी

संदीप शर्मा (पूना) 8 नवम्बर
वत्सला शर्मा (दिल्ली) 14 नवम्बर
समीक्षा (मुम्बई) 15 नवम्बर
प्रतीक शर्मा (दिल्ली) 19 नवम्बर
कौस्तुक (इन्दौर) 23 नवम्बर
पंकज शर्मा (महेश्वर) 25 नवम्बर
अंकित शर्मा (रायपुर) 25 नवम्बर
नरेन्द्र मेहता (इन्दौर) 25 दिसम्बर
यश शर्मा (खण्डवा) 9 दिसम्बर

-गायत्री मेहता

मालवा एवं निमाड़ के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं कथावाचक पं.श्री विनोद नागर के सुपुत्र

कुश नागर
की प्रथम वर्षगांठ 1 नवम्बर को थी। बधाई।
शुभाकांक्षी- परदादा पं.श्री बसंतीलालजी नागर एवं समस्त नागर परिवार
सुखदेव नगर, इन्दौर 9977777531

मा. मनन जोशी
सुपुत्र- अंकिता-अभिषेक
5 नवम्बर
शुभाकाँक्षी- जोशी परिवार, डूंगरपुर (राज.)

कु.सोम्या नागर - 20 नवम्बर
मा.केशव नागर - 19 नवम्बर
रवि नागर-सौ.मीतू नागर (पापा-मम्मी)
शुभाकांक्षी- नागर परिवार मंदसौर मो. 07422222499
व्यास परिवार, उज्जैन 0734-2553760

श्री मनोज तिवारी महू 3
श्रीमती अरुणा शास्त्री इन्दौर 7
श्री अपूर्व नागर 9
श्रीमती मोनिका नागर, उदयपुर 13
कु.तन्मय (प्रिंशु) नागर, उदयपुर 15
श्री सुलभ (सोनू) नागर, उदयपुर 24
श्रीमती अंकिता की बेटी (कोटा) 28
जोशी, नागर, जाधव, त्रिवेदी, तिवारी परिवार

-पी.आर. जोशी, इन्दौर

श्री ओमप्रकाश एस.नागर
1 दिसम्बर

शुभेच्छु-
जितेन्द्र दीपिका नागर
उत्कर्ष एवं टीशा नागर
देवास मो. 9827678692

श्रीमती तृप्ति मित्रा-मनोज तिवारी
महू 25 नवम्बर
श्रीमती श्रुति-अपूर्व नागर 28 नवम्बर
श्रीमती अंकिता-श्री जतिन भट्ट 29 नवम्बर
श्रीमती मोनिका-श्री सत्येन्द्र नागर
उदयपुर 4 दिसम्बर
शुभाकांक्षी- जोशी, नागर, तिवारी, त्रिवेदी, जाधव परिवार, इन्दौर, महू, उदयपुर
पी.आर.जोशी, इन्दौर

सौ.नताशा-अपूर्व वोरा, मुम्बई 25 दिसम्बर

चौथी विवाह वर्षगांठ
सौ.पूजा-अर्पित
30 नवम्बर

पूजा मेहता-दि.6 नवम्बर
शुभाकांक्षी- मेहता एवं नागर परिवार
मो. 9926030958

सिद्धि व्यास

(सुपुत्री- बबलू-सौ.दीक्षा व्यास)

16 दिसम्बर

:: बधाईकर्ता ::

चाचु-शैलेन्द्र, राहुल, टीना व्यास
दादा-दादी- महेश-सौ.हेमलता व्यास
छोटे-दादा दादी- दिनेश मंगला व्यास

श्री सुभाष व्यास तीसरी बार अध्यक्ष चुने गए

श्री सुभाष नंदलाल व्यास को 26 नवम्बर 2016 को होटल पलाश भोपाल में आयोजित देना बैंक रिटायर्ड ऐसोसिएशन की कांफ्रेंस में सर्वसम्मति से तीसरी बार अध्यक्ष चुना गया। श्री व्यास ऑल इंडिया देना बैंक रिटायर्ड फेडरेशन के डिप्टी जनरल सेक्रेटरी भी हैं। **(चित्र पेज 29 पर)**

भव्य रावल को महत्वपूर्ण सफलता

आई.आई.एम. इन्दौर प्रवेश परीक्षा पाँचवर्षीय इन्टीग्रेटेड कोर्स एम.बी.ए.

मास्टर भव्य रावल सुपुत्र श्रीमती तृप्ता-पंकज रावल भोपाल का इस वर्ष आई.आई.एम. इन्दौर में पांचवर्षीय इन्टीग्रेटेड कोर्स हेतु चयन हुआ है। देशभर से लिखित व साक्षात्कार के माध्यम से मात्र 121 छात्र-छात्राओं का चयन इस कोर्स हेतु होता है। भव्य द्वारा 12वीं की परीक्षा 93.8 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की थी। कॉलेज में भव्य को मिस्टर फ्रेशर बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। भव्य श्रीमती सुमन-स्व.श्री हरिहर प्रकाश रावल, श्रीमती नर्मदा-तेज प्रकाश रावल, श्रीमती निर्मला-विजय प्रकाश रावल के पौत्र व श्रीमती सरोज-यशवंत राम नागर के नाती है। समस्त मेहता, त्रिवेदी, नागर, पण्डया परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।

कु.नुपूर रावल का सुयश

कु.नुपूर रावल सुपुत्री तृप्ता पंकज रावल भोपाल द्वारा इस वर्ष देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर से दो वर्षीय एम.बी.ए. इन्टरनेशनल फायनेंस में सीडीपीए 7.98 अंकों के साथ पूर्ण किया। (75.13 प्रतिशत अंक)

कु. नुपूर रावल श्रीमती सुमन-स्व.श्री हरीहर प्रकाश रावल, श्रीमती नर्मदा तेजप्रकाश रावल, श्रीमती निर्मला-विजय प्रकाश रावल की पोती व श्रीमती सरोज-यशवंत राम नागर की नाती है। नुपूर कत्थक नृत्य में पारंगत है व वर्तमान में बंसल कालेज भोपाल में व्याख्याता के पद पर कार्यरत है। समस्त मेहता, त्रिवेदी, नागर पण्डया परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री पंकज रावल का स्थानांतर मंडीदीप शाखा में

पंकज रावल सुपुत्र श्रीमती सुमन-स्व.श्री हरीहर प्रकाश रावल (एल.आई.सी.) श्रीमती नर्मदा-तेजप्रकाश रावल, श्रीमती निर्मला विजय प्रकाश रावल जो कि भारतीय स्टेट बैंक इच्छावर शाखा जिला सीहोर में माह फरवरी 2013 से शाखा प्रबन्धक के पद पर पदस्थ थे का स्थानांतरण भारतीय स्टेट बैंक की मण्डीदीप शाखा में हो गया है। नवम्बर माह में वे अपना नया कार्यभार संभाल लेंगे। वे स्व.श्री जगन्नाथजी रावल (मुनिम बा रंथभवर वाले) के पौत्र है। समस्त मेहता, त्रिवेदी, नागर परिवार द्वारा हार्दिक शुभकामनाएँ।

शोभित त्रिवेदी की नियुक्ति रेल्वे में

प्रसन्नता की बात है कि श्रीमती पद्मा दामोदर त्रिवेदी (खण्डवा) के सुपौत्र एवं श्रीमती अर्चना प्रबल कुमार त्रिवेदी के सुपुत्र श्री शोभित त्रिवेदी की नियुक्ति दिनांक 17-10-2016 को सीनियर सेक्सन इंजीनियर (पी.डब्ल्यू.आई.) के पद पर उत्तर मध्य रेलवे, मण्डल इलाहाबाद में हो गई है।

चि.शोभित त्रिवेदी की इस उपलब्धि पर श्रीमती माया-भानु त्रिवेदी (मुम्बई) श्रीमती अलका मधुर त्रिवेदी (बड़ोदा), श्रीमती संगीता संजोग त्रिवेदी रतलाम एवं श्रीमती किरण आर.एस. नागर एवं श्रीमती निधि दुर्गादास मेहता, रतलाम व ज्योत्सना मेहता व अमित दिव्या मेहता (नई दिल्ली) की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की गई।

प्रेषक- प्रो.आर.एस. नागर
477, काटजू नगर, रतलाम

राजस्थान पत्रिका ने दर्शाई हर्षित नागर की सफलता

जयपुर से प्रकाशित राजस्थान पत्रिका में गाँव से निकले, शुरु किया स्टार्टअप, पा रहे हैं मुकाम शीर्षक से अकलेरा के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री कुलेन्द्र नागर के सुपुत्र हर्षित नागर का जीवनवृत्त प्रकाशित किया है। पत्रिका ने लिखा है एक बेहतर इंस्टीट्यूशन से पढ़ाई के बाद कुछ युवा जॉब को ठोकर मारकर स्टार्टअप की शुरुआत कर रहे हैं। दूसरी ओर ऐसे युवा भी है जिनकी परवरिश गाँव में हुई। पढ़ाई भी गाँव और छोटे से कस्बे में हुई और जब वे शहर आए तो पढ़ाई के साथ स्टार्टअप में हाथ आजमाया।

अकलेरा कस्बे के रहने वाले हर्षित नागर प्रॉपर गाईडेंस न मिलने के कारण मैथ्स में कमजोर रहे और फिर ग्रेज्युएशन के लिए अलवर के एक कॉलेज में एडमिशन लिया लेकिन फर्स्ट ईयर में ही ज्यादातर सब्जेक्ट में बैक आ गई, लेकिन मेहनत कर ग्रेज्युएशन की। आज इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के लिये ऑन लाईन लर्निंग प्लेट फार्म तैयार किया है। उनके वेब पोर्टल वेबसाईट के जरिए एक साल में 15 लाख का टर्नओवर रहा है।

श्री कृष्णकांत शुक्ल का वरिष्ठ नागरिक सम्मान

उज्जैन में दिनांक 1 अक्टूबर 2016 को प्रशासन द्वारा वृद्ध दिवस मनाया गया। महाकाल प्रवचन हाल में सामाजिक कार्यकर्ता कृष्णकांत शुक्ल का 82 वर्ष की उम्र में कलेक्टर संकेत भोंडवे व सांसद चिन्तामणी मालवीय द्वारा शॉल-श्रीफल द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर विधायक अनिल फिरोजिया सिंहस्थ मेला प्राधिकरण अध्यक्ष दिवाकर नातू जिला पंचायत अध्यक्ष भरत पोरवाल एवं गणमान्य अधिकारी मौजूद थे।

देना बैंक रिटायर्ड ऐसोसिएशन की कांफ्रेंस के दृश्य

वैवाहिक युवक

शुभम पं.सुनील नागर
जन्मदि. 11-8-1992
समय- 7.45 एएम, शाजापुर
कद- 5'9", गौत्र- पाराशर
शिक्षा- एम.ए. पोलिटिकल, आईटीआई इलेक्ट्रिकल, पीजीडीसीए
कार्यरत- ट्रेवल बिजनेस शास. नौकरी, होमगार्ड, शाजापुर
सम्पर्क- शाजापुर 9826400266

रोहित शरद जोशी
जन्मदि.25-9-1986
स्थान- इन्दौर कद- 5'8"
शिक्षा- बी.सी.ए., एनीमेशन स्पेशलाइजेशन
कार्यरत- बिजनेस एनिमेशन स्टूडियो
सम्पर्क- इन्दौर मो. 8989699496

दर्पण वरुण प्रकाश झा
जन्मदि. 4-4-1988, कद- 5'11"
समय- 2.55 पी.एम., बूंदी (राज.)
शिक्षा- बी.टेक. (आय.टी.)
कार्यरत- सॉफ्टवेयर इंजीनियर, एलएनटी बैंगलोर
सम्पर्क- बांसवाड़ा (राज.)
मो. 9929456508, 8094713390

प्रसन्नजीत दिनेश नागर
जन्मदि. 1-12-1991
समय- 3.5, उज्जैन
शिक्षा- एम.बी.ए. (मार्केटिंग एंड फायनेंस) **कार्यरत-** ऑफिसर अल्ट्राटेक सीमेन्ट सेल्स डिपार्टमेन्ट
सम्पर्क- मो. 9907311543, 9770592384

हर्षित कुलेन्द्र कुमार नागर
जन्मदि. 5-1-1988
समय- 8 पी.एम., माचलपुर (म.प्र.)
कद- 5'7", वजन 69.5 किलो
शिक्षा- बी.टेक. इन इलेक्ट्रॉनिक एंड कम्यूनिकेशन (इंजीनियरिंग)
कार्यरत- को-फाउंडर एंड डायरेक्टर ओरियन आई टेक सॉल्यूशन्स प्रा.लि. जयपुर (राज.)
सम्पर्क- झालावाड़ (राज.)
मो. 9828691791, (स्वयं), 9413101699 (फादर)
Email : nagar781@gmail.com

हार्दिक स्व.गिरीशचन्द्र पंड्या (मांगलिक)जन्मदि. 12-7-1983
समय- 3.5 दोप., खण्डवा
5'7", वजन 68 किलो
शिक्षा- एम.कॉम., पीजीडीसीए
कार्यरत- एम.आई.टी.एम. कॉलेज, उज्जैन
सम्पर्क- उज्जैन
मो. 0734-2517824, 09227221343

प्रवीण नलीनकांत त्रिवेदी
जन्मदि. 3-5-1974
समय- 10.22 पी.एम., कोटा
गौत्र- सांस्कृत्य
कद- 5'4", वजन-60
शिक्षा- एम.ई. (इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग) UOR now IIT Roorkee
कार्यरत- रिसर्च साईंटिस्ट इन भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर, मुम्बई ए-क्लास गजेटेड केन्द्रीय गवर्नमेन्ट नौकरी सम्पर्क मो. 9657457505

दिपेश नागर
जन्मदि. 9-12-1986
समय- 3.48 पी.एम./ब्यावरा
कद- 5'10"
शिक्षा- बी.कॉम. (टेक्सेशन) पीजीडीसीए
कार्यरत- एनएसई सर्टिफाईड केमिकट मार्केट प्रोफेशनल (एनसीसीएमपी) मुम्बई
सम्पर्क- मो. 9827180573

वैवाहिक युवती

आकांक्षा पंड्या
जन्मदि. 6-5-1988
कद- 5'3", समय- 11.10 ए.एम., गाजियाबाद, गौत्र- भारद्वाज
शिक्षा- बी.फार्मा, एमबीए
कार्यरत- ब्रांड मैनेजर, डाबर, गाजियाबाद
सम्पर्क- इन्दर पंड्या
9990735573, 8130586374

कोमल महेन्द्र दशोरा
जन्मदि. 16-4-1986
स्थान- उदयपुर
शिक्षा- एम.बी.ए. हास्पीटल मैनेजमेन्ट, एम.फिल., बी.एस.सी. लैब टेक्नीशियन
सम्पर्क- 09414928051

आरती सोमदत्त नागर
जन्मदि. 7-10-1987, कद-5'4"
गौत्र- गौतम, स्थान- जयपुर
शिक्षा- एम.ए. (संस्कृत एवं राज. शास्त्र) सम्पर्क- जयपुर
व्हाट्सअप- 9314629200, 9828290089

कु. कृति प्रवीण चौबे
जन्मदि. 8-8-88, कद- 5'1"
शिक्षा-एम.एस.सी. (बायो टेक्नॉ.)
कार्यरत- असिस्टेंट मैनेजर (राष्ट्रीयकृत बैंक)
सम्पर्क- मो. 9926181128, 7692973120

खुशबू भुवनेश कुमार नागर
जन्मतिथि 5-8-1989
समय- 4.44 पी.एम., उज्जैन
शिक्षा- एम.एस.सी., एम.एड.
सम्पर्क- बकानी जिला झालावाड़
मो. 9414571151, 9571423741

भावना राजेन्द्र भट्ट
जन्मदि. 27-3-1989
समय- 1.35am, बांदी कुई (दौसा)
शिक्षा- प्रिपरेशन नेट एंड पी.एच.डी.
सम्पर्क- 9414978430

यामिनी मेघशंकर नागर
जन्मदि. 15-12-1991
समय 2.25 ए.एम., रतलाम
शिक्षा- एम.ए. इंग्लिश बी.एड.
सम्पर्क- सवाई माधोपुर
मो. 8233923337, 9460778351

सलोनी राजेन्द्र नागर
जन्मदि. 22-8-1992
समय- 5.2 एएम, इन्दौर
शिक्षा- एमसीए (मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)
सम्पर्क- इन्दौर 9303274678

पलक रवीन्द्र नागर
जन्मदि. 2-12.8
कद- 4 फीट समय- 10.14 रात्रि
अहमदाबाद (गुज.)
शिक्षा- एम.बी.ए. (एचआर) टी.सी.ए. जर्नलिज्म
सम्पर्क- बांसवाड़ा (राज.)
फोन 02962-242161
मो. 9887632787

नानाजी-नानीजी कि लाडली

पिहु

को प्रथम वर्षगाठ

दिनांक 25-12-2016

की हार्दिक बधाई

बधाईकर्ता

परदादीजी, दादाजी-दादीजी,
पापा-मम्मी, चाचा, मामा-मासी,
मामा-मामी, मासी-मासाजी एवं समस्त
शर्मा परिवार (ईटावा), व्यास परिवार लसूर्डिया
ब्राह्मण, शर्मा परिवार शाजापुर

प्रेषक- दिनेश शर्मा ईटावा

छूटे संस्कार... आए विकार...

हम आमतौर से आज संस्कारों का अभाव चारों तरफ देख रहे हैं और संसार में फैली अनैतिकता का कारण भी उसे ही मानते हैं। वास्तव में ये संस्कार है क्या? इनका हस्तांतरण कहाँ से होता है? इनकी पुनर्स्थापना का उपाय क्या है? संस्कार वह है जो वर्षों पहले धर्मशास्त्रों में कहे गए हैं, ये पूर्वजों द्वारा आगे की पीढ़ियों में हस्तांतरित किए जाते हैं और ये कब खो गए? यह ज्वलंत प्रश्न है। आज जो देश दुनिया में विकार पैदा हो गए हैं उसका कारण संस्कारों का अभाव ही है। एक समय था जब घर-घर में धर्मशास्त्र रखे जाते थे तथा पढ़े जाते थे, जिस स्थान पर ये शास्त्र रखे एवं पीढ़ियों में हस्तांतरित किए जाते थे, उस जगह को अब टीवी ने ले लिया है। अच्छी बातों के बजाय अशोभनीय दृश्य, प्रतिस्पर्धा एवं कुटिल चालों वाले धारावाहिक, अपराध ये सब घर-घर में उस समय देखे जा रहे हैं, जिस समय धर्मग्रंथ पढ़े जाते थे। टीवी में जो दिखाया जाता है वह घर-घर में देखा जा रहा है। पहले जो धर्म ग्रंथ रखे जाते थे उसमें रामायण एवं श्रीमद् भगवद् गीता प्रमुख है। रामायण में मर्यादा का महत्व प्रतिपादित किया गया है, जिसका अर्थ है मर्यादित जीवन, बुरी तो कोई भी चीज नहीं है, टीवी भी विज्ञान का आविष्कार है।

परन्तु मर्यादा के न रहने से वह असीमित देखा जाता है। होना यह चाहिए कि हम धर्मग्रन्थ भी न छोड़ते और टीवी भी देखते रहते। अत्याधुनिक साधनों का उपयोग कतई वर्जित नहीं है परन्तु मर्यादा में होना चाहिए। यह मर्यादा ही आपको संयमित बनाती है, श्रीमद् भागवद् गीता का उपदेश यहां प्रासंगिक है कि उपयोग एवं उपभोग वर्जित नहीं है, उनमें लिप्त हो जाना आपत्तिजनक है। अमर्यादा एवं लिप्तता ने वरदान को भी अभिशाप बना दिया है। आज हमको टीवी, कम्प्यूटर एवं मोबाईल के अलावा कुछ नजर ही नहीं आता, सबके सब इनमें लिप्त है और यहीं से संस्कारों का अभाव एवं विकारों की बाहुल्यता शुरु हो गई है। यदि हम आज भी इन साधनों का उपयोग संयमित एवं मर्यादित रूप से करें तो विकारों का खात्मा कर सकते हैं। खासकर शाम के समय परिवार के सभी सदस्य एकत्र होकर टीवी देखने के बजाय उन्हीं धर्मशास्त्रों का अध्ययन, मनन करें तो परिस्थितियाँ पुनः सुधर सकती है।

शाम को परिवार के सदस्य रामायण का पाठ करें तथा मर्यादा को अपने जीवन में उतारे जो परिवार, समाज तथा व्यवहार में दिखाई दे, प्रत्येक साधन का मर्यादित उपयोग हो। तो कोई बुराई नहीं है। वे सब बैठकर श्रीमद् भगवद् गीता पढ़े जो निर्लिप्तता और कर्मयोग का संदेश देती है। निर्लिप्तता का अर्थ है कि अच्छी बातों, सद्गुणों के प्रति हमारा अधिक आकर्षण हो तथा विकार उत्पन्न करने वाली वस्तुओं को केवल जरूरत के समय उपयोग करें। अपने जीवन में किए जा रहें प्रत्येक कर्म में भगवान को सम्मिलित रखें तथा संस्कारों को जीवित रखें। संस्कारों के पुनर्स्थापना का यही एक उपाय है, बुरी चीजों को पूरी तरह त्यागना नहीं है अच्छी चीजों (शास्त्रों) को पूरी तरह छोड़ना नहीं है। यही संस्कार है। आज ही अपने घर में परिजनों द्वारा छोड़े गए धर्मशास्त्रों को झाड़कर बाहर निकाल ले, टीवी देखने का समय कम करके शास्त्रों का पठन-पाठन चिंतन शुरु करें। जब गहन अंधकार हो तो एक दीपक भी खूब उजाला कर देता है। जब बहुत सारी बुराई है तो थोड़ा स्वाध्याय भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। जीवन की प्रत्येक परिस्थिति का समाधान हमारे धर्मग्रंथों में मौजूद हैं, उनमें लिखी हर बात संस्कार है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है, यही संस्कार सारे विकारों को खत्म कर सकते हैं तथा जीवन को धन्य बना सकते हैं।

इस सम्बंध में अपने विचार 25 दिसम्बर तक अवश्य लिख भेजें इन्हें आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा। **-सम्पादक**

चिन्मय नरेन्द्र कुमार त्रिवेदी

जन्म दि. 19-2-1980
समय-6.43 पी.एम., बांसवाड़ा
शिक्षा- बी.ई. केमिकल
कार्यरत- स्टर्लिंग बायोटेक प्रा.लि.
बड़ौदा (गुज.)
सम्पर्क- बांसवाड़ा मो. 09414105720, 09413626043

अमित अनिल नागर
जन्मदि. 15-6-1986, समय-11.30 ए.एम./उज्जैन
गौत्र- पाराशर, कद-5'7", वजन- 65
शिक्षा- बीएससी, एमबीए
कार्यरत- मल्टीनेशनल कंपनी (आस्ट्रेलिया)
विदेश जाने एवं अंग्रेजी बोलने वाली युवतियों को प्राथमिकता
सम्पर्क- 9424517425

पहले ऐसा होता था...

एक सत्य घटना : महिलाओं, बहनों को विशेष संदेश

जय हाटकेशवाणी में संपादक का 'पहले ऐसा होता था' पढ़ते ही चाचाजी स्व.दीनदयालजी झा के बड़े ही सहज, विनोदी और मजाकिया अंदाज में बताई अपनी कथा का स्मरण हो आया उनका अंदाज भी निराला ही होता था। प्रस्तुत घटना सतयुग, त्रेतायुग या द्वापरयुग की नहीं घोर कलियुग की सत्य घटना है।

मैं भगवान कृष्ण तो नहीं परन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश की रची सृष्टी का एक पात्र हूँ। कृष्ण की तरह मेरी भी दो माताएं स्वरूप कौर और हुड़ी बा है तो पिता श्यामलालजी और गंगालालजी। मेरे दो भाई दुर्गाशंकरजी और नाथुलालजी नागर घटना के समय भाभियों का गृहप्रवेश नहीं हुआ था। दीपावली का पावन पर्व था सभी तरफ हर्षोल्लास का वातावरण था मगर मेरे लिए वह अमावास की काली रात ही थी, क्योंकि मेरे जन्म के साथ ही माता का साया मेरे सिर से उठ गया था। यह गनीमत था कि मेरा जन्म नागर समाज के सुसंस्कारी परिवार में हुआ था, वरना कलमुहा और न जाने क्या-क्या सम्बोधन मिलते कि जन्म लेते ही माँ को खा गया। रोज घर में बैठक होती और पिताजी को लोग सांत्वना देते कि भगवान को यही मंजुर होगा। जच्चा माँ के जाने के बाद मेरे बचने की किसी को उम्मीद नहीं थी। आज गिरजा और तारा दो भाभी भी है दो पुत्र परमेश्वर, महेश्वर दो पुत्री ईश्वरी इंद्रबाला भी मगर उस रोज मेरी देखरेख करने वाला कोई बच्चा या बेटियां भी नहीं थी। यही देवीय चमत्कार और आस्था का प्रागट्य हुआ संतान विहिन एक परिवार वर्षों से व्रत और आराधना में व्यस्त था मगर उसे कहीं सफलता नहीं मिली थी। पुरे वागड़ (बांसवाड़ा डूंगरपुर) क्षेत्र में शिवमन इच्छा व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थी से कार्तिक शुक्ल चतुर्थी तक सभी सोमवार को कथा उपवास पूजन कर दीपावली के बाद चतुर्थी को उसका उद्यापन किया जाता है।

लगातार चार वर्ष तक यह व्रत रखकर अपनी मन की इच्छा जरूर पूरी होती है। यह विश्वास और आस्था ही उसकी प्राण वायु थी। एक-एक सोमवार निकलता तो सोचते भगवान सबकी मनोकामनाएँ पूरी करते हैं फिर मेरे लिए एक बच्चे की उसके पास कमी कैसे और क्यों हो गई। इस वर्ष वह इतनी निराश थी कि अब यह व्रत मुझे बिना फल प्राप्ती के ही उद्यापन कर छोड़ना पड़ेगा।

नागर समाज में मेरी माता का देहावसान एक दुखद घटना थी ऐसे अवसर पर मेरे नंदबाबा ने वासुदेव से मिलकर यह प्रस्ताव रखा कि अगर आप लिखित में अनुमति दे तो इस बच्चे को मैं अपना दत्तक पुत्र बनाना चाहता हूँ। शायद शिवजी का भी यही आदेश है। वासुदेव श्यामलालजी भी बोले बच्चे का आयुश होगा तो यहां भी बड़ा हो जायेगा आप ले जाना चाहते हैं तो प्रेम से ले जाये, परन्तु मैं लिखित में इसको घर से नहीं निकाल पाऊंगा।

बस इतना आदेश पाते ही मेरी यशोदामइया और नंदबाबा घर आये और अपने घर पर ले गये यहीं से यशोदा मइया की तपस्या शुरु हो गई गाय बकरी और नैस्ले के दुध का वह जमाना शुरु नहीं हुआ था जब भी मेरी भूख का समय होता माता किसी से स्तनपान करवाती रिश्तेदारों के द्वार खटखटाती और आग्रह करती कि इसकी भी क्षुधा (भूख) शान्त करवा दो, आरम्भ में तो यह चलता रहा मगर कभी समय बेसमय भी भूख का आक्रमण होता तो खास रिश्तेदारों को रात्री में उठाने को छोड़ रखा था। वो स्वयं किवाड़ खुलवाकर आग्रह करती मगर उनके मुंह की तरफ नहीं देखती जिससे अगर कोई गुस्सा भी करे तो वह उसे नहीं देख सके, क्योंकि उसे दूसरे रोज भी तो आना था। पीठ पीछे कुछ लोग बोलते भी हो तो वह उसकी परवाह नहीं करती थी। उसका तो एक ही लक्ष्य था कि उसके इस पुत्र के जीवन क़ी रक्षा हो जाये। भगवान शिवजी ने उनकी झोली में जो पुत्र दिया है उसके साथ पूरा न्याय हो साथ ही वासुदेव को भी पुत्र वियोग का दूसरा झटका ना लगे। इन घटनाओं का जिक्र करते समय पुत्रवधु और दामादों के साथ पोता-पोती और नाती नातीन का प्यार दुलार पाकर वे अपनी यशोदा माता हुडीबा (वास्तविक नाम ज्ञात नहीं मगर इसी नाम से पुकारे जाते थे) का गुणगान और आभार मानते हुए नहीं थकते थे।

संदेश- उनका संदेश भी स्पष्ट था कि बच्चों के लिए माँ का दूध सर्वोत्तम है यह जानते हुए भी कईं माताएँ बहने इससे परहेज करने लगी है। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए बालक के स्वास्थ्य और भविष्य के साथ खिलवाड़ करती है। मेरी दो माताएँ हैं कहना भी असल में मुझे झूठा लगता है, क्योंकि मैंने अनगिनत माँ के आंचल का अमृत प्राप्त किया है मैं आज सभी को नहीं पहिचानता मगर धन्य है उनका मातृत्व व प्रेम जिन्होंने मुझे सिंचा और समाज के लिए भी एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। नारी स्वतंत्रता के नाम पर एकल परिवार की बीमारी भी समाज में बढ़ रही है और अविवाहित जीवन निर्वाह का संकल्प के साथ ही मातृत्व सुख से वंचित रहने का प्रण भी गहराता जा रहा है ऐसे लोगों को समाज ऑल दी बेस्ट का आशीर्वाद ही दे सकता है।

-प्रमोदराय झा
नागरवाड़ा बांसवाड़ा मो. 8003063616

संस्कार दिये नहीं, जिये जाते हैं

पहले ऐसा होता था...

'संस्कार' के बारे में कहा जाता है कि 'संस्कार दिये नहीं, जिये जाते हैं।' 'पहले' संयुक्त परिवारों में बड़े-बुजुर्ग शामिल-शरीक में रहते थे जो स्वयं अनुशासनप्रिय व संस्कारवान होते थे। उन्हें देखकर बच्चे भी उनसे कुछ सीख ले लेते थे। बचपन गीली मिट्टी की तरह होता है जो कुशल कुम्हार के हाथों ही सुन्दर व सुडोल आकार पाता है। परिवार के बड़े-बुजुर्ग ऐसे ही कुशल घड़ने वाले होते हैं जिनके हाथों बच्चे संस्कारवान और चरित्रवान बनते हैं। बड़े-बुजुर्ग आदतन अवसर के अनुरूप कुछ किस्से-कहानियों के अतिरिक्त कुछ कहावतें-मुहावरे समयानुकूल बोलते रहते हैं, जैसे 'साँच को आँच नहीं', 'सेवा करने से मेवा मिलता है', 'आराम हराम है' आदि। निःसन्देह ये शब्द बच्चों के कानों में पड़ते हैं, भले ही वे उस समय उनका अर्थ न समझ पाते हों, किन्तु कहीं-न-कहीं वे उन शब्दों के अंशों को आत्मसात कर लेते हैं जो भविष्य में उन्हें समझने में सहायक होते जाते हैं और उनके व्यक्तित्व विकास की राह में बहुमूल्य साबित होते हैं।

'पहले' टेक्नोलॉजी इतनी विकसित नहीं थी। मनोरंजन के साधनों में नानी की कहानियों से लेकर ग्रामोफोन, रेडियो, चौपाल, खेल के मैदान और फुरसत के कुछ पल आदि ही उपलब्ध होते थे। मेल-जोल, भाईचारा, जाना-आना, वक्त-वक्त पर बड़े चाव से होता था। घर में आगन्तुक के आने पर खुशी होती व उसका प्रेमपूर्वक यथाशक्ति आदर-सत्कार होता था। 'पहले' रेल में सफर करते समय टाईमपास होते थे सिकी मूंगफली, नमकीन दाने, चना-चटपटा, सहयात्री से गपशप, मनोरंजक मेगजीनें, अखबार खिड़की से बाहर का खूबसूरत प्राकृतिक नजारा, भागते-पीछे छूटते हुए झाड़ जमीन आदि।

और 'अब'! पूरे कम्पार्टमेन्ट में लगभग 90 फीसदी यात्रियों, बच्चों, विद्यार्थियों के हाथों में मोबाईल और लेपटॉप होते हैं जो मुख्य रूप से उनके टाईमपास का साधन होता है। कुछ 'वाट्सएप, फिल्मी गाने, वीडियों गेम्स आदि में ही समय व्यतीत करते देखे जाते हैं। उन्हें अपने सह-यात्रियों से कुछ-भी लेना-देना नहीं होता न ही उस गरीब (अन्तिम) व्यक्ति की मूंगफली या चने-चटपटे से, जो अपने पूरे परिवार के पालन-पोषण के लिये इसी 'कमाई' का सहारा लिये यात्रा करने के लिये मजबूर रहते हैं। कम्पार्टमेन्ट में कहीं से एक अंधा फकीर भी प्रगट होता है और गाता है-

'देख तेरे संसार की हालत
क्या हो गई भगवान,
कितना बदल गया इन्सान।

'पहले' आवश्यकताएं सीमित थी, इसलिये बाजारों में वस्तुएं इतनी दिखाई नहीं देती थी। सीमित आय में ही परिवारों का गुजारा भली-भाँति हो जाता था। कर्ज लेना न अच्छा माना जाता था और न कर्ज लेने की लालसा उस वक्त लोग पालते ही थे। बच्चों के बस्तों का बोझ इतना नहीं होता था जैसा आज है। कम-से-कम किताबों और कम खर्चीली लेखन और सहायक सामग्री में साल भर की पढ़ाई हो जाती थी। इसलिये परिवारों पर बच्चों की शिक्षा का बोझ नहीं होता था। इस पर भी तारीफ यह कि शिक्षा की गुणवत्ता पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगता था।

आईजक असीमोव कहते हैं कि 'जीवन का सबसे दुखात्मक पहलू यह है कि जितने समय में समाज बुद्धिमानी जुटाता है, उससे कहीं पहले ही विज्ञान नया ज्ञान जुटा लेता है। इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होती और 'एक के बाद दूसरी' का क्रम कभी टूटता नहीं। इच्छाओं की पूर्ति में ही जीवन व्यतीत हो जाता है। आधुनिक संस्कृति तो हमारे मन में नित-नयी इच्छाएं जागृत करती रहती है, नये-नये विज्ञापनों के विशाल पोस्टर्स, बिल बोर्ड, टी.वी., रेडियो आदि माध्यमों से। 'अब बाजार भी वस्तुओं/सेवाओं से पटे पड़े हैं जिनकी आवश्यकता हमें हो या न हो। इस तरह 'अब' हम प्रलोभनों से चारों ओर से घिरते जा रहे हैं, इस पर भी करेला वह भी नीम चढ़ा याने 'कर्ज' वह भी सुलभ। ऐसे में भगवान बुद्ध का यह कथन कि 'इच्छाओं का दमन ही सुख प्राप्ति का साधन है' बेमानी महसूस होने लगता है और हम कर्ज लेकर (अनावश्यक) वस्तुओं से अपना घर भर लेते हैं। अस्तु।

परिवार व रिश्ते एक-दूसरे के पूरक होते हैं। रिश्ते टूटे तो परिवार भी टूटते चले गये। परिवारों में प्रायः लोग तकलीफ-फलदायक रिश्तों को परिपक्वता से पोषित करने के बजाय उसे तोड़ देना ही पसन्द करते हैं। वहीं ऐसे रिश्ते भी देखे जाते हैं जो समय की कसौटी पर परखने पर खरे उतरते हैं और ऐसे रिश्ते दिल की गहराइयों तक पोषित रहते हैं। रिश्तों को जीतना एक पदक जीतने के समान ही होता है। किन्तु पदक जीतने के लिये तो हमें प्रतिद्वंद्वी को हराना होता है। वहीं रिश्ते जीतने के लिये अपनी स्वयं की अनुचित मनोवृत्तियों को हराना पड़ता है। श्रीकृष्ण को पाण्डव क्यों इतना चाहते थे? क्योंकि श्रीकृष्ण ने पाण्डवों के लिये वह सब किया जो पाण्डव स्वयं अपने लिये भी नहीं कर सकते थे। श्रीकृष्ण ने न केवल पाण्डवों को हस्तीनापुर का राज्य वापस दिलवाया अपितु पाण्डवों को घोर अपमान, विध्वंस, भावात्मक आघात, आपसी फूट जैसी विकट परिस्थितियों का सामना करने में उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में महती भूमिका निभाई।

विधाता ने ब्राह्माण्ड की रचना बहुत सोच-विचार कर, सावधानीपूर्वक कुछ इस प्रकार से की है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति में ऐसी कोई-न-कोई कमी और रिक्तता छोड़ रखी है जिसे हम स्वयं भर ही नहीं सकते। ऐसे में हममें से प्रत्येक को एक-दूसरे की ऐसी रिक्तता को भरने हेतु स्वयं अपना हाथ आगे बढ़ाना चाहिये, वही कार्य जो श्रीकृष्ण

ने पाण्डवों की सहायता करके किया।

ऐसी उक्तियाँ हमारे रिश्तों में आपसी प्रेम बढ़ाने का एक प्रभावशाली साधन साबित होती है। जिस क्षण लोग यह समझ लेते हैं कि उनकी समस्या को मददगार ने अपनी स्वयं की समस्या की तरह स्वीकार कर लिया है, तत्क्षण वे उसे अपना करीबी समझने लगते हैं। इस प्रकार की स्वीकारोक्तियाँ दिलों को जोड़ने का काम करती है।

आधुनिक टैक्नॉलॉजी व संचार-माध्यम के कारण 'अब' हम काल्पनिक दुनिया में अपना समय अधिक व्यतीत करने लगे हैं, बनिस्बत धरातल के। 'अब' हमारे लिये शान्तचित्त होकर कुछ पल बैठना भी कठिन होता जा रहा है। आपाधापी बढ़गई है। एक जापानी कहावत के अनुसार- 'क्रियाविहीन दूरदृष्टि एक दिवास्वप्न है, किन्तु दूरदर्शिताविहिन क्रिया तो एक दुःस्वप्न है।'

अतः अब समय आ गया है कि सभी आधुनिक-आध्यात्मिक लोग अपने स्मार्टफोन से अपने अन्दर कॉल लगावें- जवाब अवश्य मिलेगा। हममें से प्रत्येक के भीतर एक अज्ञात अनदेखा द्वीप है। धन्य होगा वह जो कोलम्बस की भाँति उस द्वीप (आत्मा) को खोज निकालेगा...

-मोरेश्वर मंडलोई
खण्डवा

सच्चाई, प्रेम और सेवा से लौटेगा अच्छा समय

पहले और अब

पहले जैसा समय लौट आने की शक्ति केवल सच्चाई, प्रेम और सेवा में ही है। इसके लिए दो उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ-

(1) आदि शक्ति देवी 'भगवान विष्णु' को सृष्टि के पालन हेतु नियुक्त करना चाहती थी, उनको देवी ने कहा था कि जो कोई शिव का आदि और अंत का पहले पता कर लेगा, उसे विष्णु का पद दिया जाएगा, यह कोशिश करने के पश्चात् भगवान विष्णु ने अपनी असफलता देवी के समक्ष प्रकट कर दी, जबकि ब्रह्माजी ने गाय को झूठा सबूत देने के लिए प्रेरित कर शिव का आदि अंत देख लिया बताकर माताजी के समक्ष स्वयं भी झूठ कहा एवं गाय से भी झूठ बुलवा लिया। माताजी तो ज्ञानेश्वरी थी ही झूठ को समझ गई तथा विष्णु को 'विष्णु बना दिया तथा ब्रह्मा को सिर्फ सृष्टिकर्ता बनाया तथा अभिशाप दिया कि उनका कहीं मंदिर नहीं होगा तथा पूजन भी नहीं होगा। इसका मुख्य कारण है अधिकार (शक्ति) प्राप्त करने के लिए उन्होंने झूठ का सहारा लिया। आज दुनिया में झूठ और शक्ति का ही बोलबाला है। सच्चाई और सच बोलने वालों का जीवन अत्यंत मुश्किल हो गया है। डॉ.ओ.पी. नागर का 'प्रणाम का महत्व' में 'हाथ की उंगलियों से चरण की उंगलियों को स्पर्श करने पर प्रणाम करने वालों को शक्ति प्राप्त होती है, मेरा विचार है कि इस प्रकार की आदत से वात्सल्य, स्नेह, सम्बन्ध, प्रेम और सेवा का भाव सारे कुटुम्ब में बना रहेगा तथा परिवार में खुशियां प्रस्फुरित होगी।

-के.श्री निवास राव, रायपुर (छ.ग.)

एक समस्या-समाधान आपके पास

आज मैं आपके सामने ऐसी समस्या लेकर आई हूँ, जिसका समाधान हर महिला चाहती है। बदलते हुए समय के साथ-साथ लोगों के विचार बेटियों के प्रति बदल रहे हैं, हमारे समाज में भी बेटियाँ सफलता की ऊँचाईयाँ छू रही है। उन्हें सम्मान, प्यार, शिक्षा सभी कुछ मिल रहा है, परन्तु मेरा प्रश्न यहीं से शुरु होता है, जब हमारी लाडली बेटी विवाह के पश्चात विदा होकर दूसरे परिवार को अपना बनाने जाती है और बन जाती है बहूँ। यह सही है कि बहू के रूप में उन्हें सम्मान तो मिलता है परन्तु वह बेटियों वाला प्यार, दुलार ससुराल में कहां मिल पाता है।

हमारी नादान, जिद करने वाली बेटियां अचानक क्यों एक जिम्मेदार 'बहू' बना दी जाती है। कोई सास उसकी माँ क्यों नहीं बन पाती? बेटियों को देवीस्वरूप मानने वाले अपने पैरों को न छूने देने वाले क्यों घर में आने वाले मेहमानों के पैर छूने का आदेश बहुओं को देते हैं? आखिर क्यों पढ़ी-लिखी बहुओं को सशर्त नौकरी की सहमति दी जाती है कि तुम अगर घर और नौकरी दोनों संभल सके तो ही नौकरी करो, 'बहू' के घर में आते ही सास अचानक वृद्ध क्यों हो जाती है?

आज हमारा नागर समाज हर क्षेत्र में अग्रसर हो रहा है तो मेरा आप सबसे निवेदन है कि कृपया हम सब मिलकर इस क्षेत्र में भी विचार करें एवं सकारात्मक सोच रखते हुए 'बहुओं' को भी खुला आसमान दें। फिर देखें परिवार के वरिष्ठ माननीयजन जितना सम्मान चाहते हैं, उससे दोगुना सम्मान उन्हें मिलेगा। आपके घर आने वाली इन परियों को आपका दुलार प्यार और सहयोग चाहिये, क्योंकि वो अपने माता-पिता बनाने आई है। इस सम्बन्ध में आज जनजागृति की आवश्यकता है, बहू को बेटी मानें।

श्रीमती रश्मि भूपेन्द्र नागर
इन्दौर मो. 9424561007

तुम्हारा एक कदम, उसके दो

ईश्वर की कृपा से ही मिलती है भक्ति

मासिक जय-हाटकेशवाणी के गतांक में उपरोक्त विषयान्तर्गत पाठकों से विचार आमंत्रित किये है, उसी तारतम्य में, मैं, दो शब्द प्रस्तुत कर रहा हूँ सो मुलाहेजा फरमाऐं। विषय निहायत ही गहन एवं विचारणीय है। ईश्वर ने मनुष्य जन्म प्रदान किया है तो उसका भरपूर सद्उपयोग होना ही चाहिये अर्थात् कर्म-रत होना चाहिये और उसमें भी सद्कर्म विशेष तौर पर। व्यक्ति के जीवनमें मुख्य रूप से चार अवस्थाऐं होती है। जैसे- बाल्यकाल, युवावस्था, गृहस्थ-जीवन, प्रौढ़ावस्था आदि। अलग-अलग अवस्थाओं में व्यक्ति के कार्य, रूचि एवं जिम्मेदारियां भिन्न होती है जिसमें वह व्यस्त रहता है। मसलन प्रारम्भ में विध्या-अध्ययन, फिर जीविकोपार्जन हेतु कर्म-रत रहता है याने पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन में व्यस्त रहता है।

सब कार्य पूर्ण होने तक वृद्धावस्था की ओर अग्रसर होता है। यहां पर अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण नियम 'लॉ ऑफडिमिनिशिंग वेल्यू' कारगर साबित होता है। प्रारम्भ में बहुत कुछ पा-लेने की जिज्ञासा रहती है एवं प्राप्त होने के बाद ढ़लती उम्र में ये सब गौण हो जाता है। उस अवधि में मनुष्य को भक्ति के बारे में सोचने का समय शायद नहीं रहता। समस्त आर्थिक, पारिवारिक दायित्व के पूर्ण होने के पश्चात व्यक्ति के पास कुछ भी कार्य करने को नहीं रहता, सिवाय, (यदि ईच्छा हो तो) सामाजिक कार्य या ईश्वर-भक्ति के या अपने पिछले बीते जीवन की यादों की जुगाली करने के।

यहां पर भी जो बात विचारणीय है, वह यह कि ईश्वर-स्मरण और भक्ति आदि की ओर झुकाव हर महानुभाव की जेहन में हो यह तो आवश्यक नहीं। (जैसै:- सबका फूलों में बसर हो ये जरूरी तो नहीं, सबका जश्नों का सफर हों। यह जरूरी तो नहीं)। भक्ति की भावना पांच शब्दों पर मुख्य-रूप से आधारित होती है, अर्थात् मनुष्य को ईश्वर भक्ति की शक्ति प्राप्त होने की संभावना हो तो उसे परमात्मा की ओर से 1. प्रेरणा मिलती है, उसके तहत वह व्यक्ति 2. प्रयास करता है, इसमें 3. प्रारब्ध साथ देता है, 4. परिश्रम करता है एवं भाग्य के अनुरूप ही उसे 5. परिणाम हासिल होता है। इन सब के लिये व्यक्ति को ईश्वर के प्रति समर्पित होना होता है। समर्पण जब पूर्ण होता है तब सार्थक परिणाम अर्जित होता है। व्यक्ति भक्ति में लीन हो जाता है। इस स्थिति के आने पर प्रभु भक्ताधीन हो जाता है और भक्ति एवं समर्पण का अमूल्य फल देता है।

प्रिय पाठकों ने ध्यान दिया होगा कि पांड़ालों में कथा-प्रवचनों के दौरान जब कथा-वाचक समस्त श्रोताओं को दोनों हाथों को उपर उठाकर राधे-राधे या गोविंद बोलने का कहता है तो उसका तात्पर्य समर्पण की ओर इशारा होता है, जैसै जब कोई लूटेरा आपके सामने बंदूक तानकर खडा हो जाए तो वो भी आपको हेन्ड्ज-अप का आदेश देता है एवं आप वहीं करते है, अर्थात् 'समर्पण'। यहां उदाहरण देना उचित तो नहीं है किन्तु विषय का आग्रह यह लिखने को बाध्य करता है। जैसे, द्रोपदी ने चीर-हरण के वक्त आखिर में जब दोनों हाथ ऊपर करके श्री कृष्ण के समक्ष मनमें समर्पण किया, तब उन्होने चीर-विस्तार करना प्रारम्भ किया और रक्षा की। (पहले वह स्वयं अपने हाथों से रक्षा करती रही) भक्त, मीरा, नरसी मेहता ने तो शुरू से ही समर्पित हो कर प्रभु का वरदान प्राप्त किया था। तो कहने का मकसद यही है कि हर व्यक्ति को यथा-सम्भव भक्ति-भाव की ओर अग्रसित होना चाहिये, वह भी पूर्ण समर्पित भाव से।

पुन: कहना मुनासिब होगा कि ईश्वर की ईच्छा होगी तो ही आपको भक्ति की प्रेरणा मिलेगी एवं आप सफल भक्त होंगे। हाँ, भक्ति में आड़म्बर का कोई रोल नहीं होता अर्थात दिखावे की भक्ति अर्थ हीन हो सकती है। गुजराती में देवी माँ की आराधना में एक गरबा प्रचलित है जिसमें एक पंक्ति में कहा गया है कि 'माँ तुझ हुकुम बिना पवन-पत्र हाले नहीं।' याने परमेश्वर की आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता और यह सब व्यक्ति के प्रारब्ध पर निर्भर करता है। हाँ प्रयास करते रहना चाहिये क्योंकि अंग्रेजी में कहावत है कि 'बेल बिगिन इज हाफ डन'। राम भजन सुख दायी भजोरे मेरे भाई, ये जीवन दो दिन का 'जय हाटकेश'। 'समस्त पाठकों एवं संपादक मंडल को नववर्ष की शुभकामना'।

-यशवंत नागर, इन्कम टेक्स
असिस्टेंट कमीशनर (से.नि.)
(बांसवाड़ा वासी),
उज्जैन फोन-0734-2533151
चलते-चलते - 08989219599

फुहार

आलसी बच्चा-पापा एक गिलास पानी देना।
पापा- खुद उठ के पी लो।
बच्चा-प्लीज दे दोना
पापा- अब अगर पानी मांगा तो थप्पड़ मारुंगा
बच्चा- थप्पड़ मारने आओ तो पानी लेते आना।

-गायत्री मेहता, इन्दौर

गतांक से आगे

तुलसी का विप्र प्रेम-2

ब्राह्मणों का पद गुरु से ऊँचा

विरह वेदना के झंझावत में तो व्यक्ति नियम तथा मर्यादाओं का पालन बहुधा भूल जाया करता है, लेकिन तुलसी ने बिना विवेक खोये मर्यादा का यथावत पालन श्रीराम से करवाया है। वन-गमन के प्रस्थान हेतु वन के लिए आवश्यक वस्तुओं को साथ लेकर राम, ने सर्व प्रथम विप्र (ब्राह्मण) को फिर गुरु को प्रणाम किया अर्थात् गुरु से ब्राह्मणों को विशेष महत्व दिया।

बंदि विप्र गुरु चरण प्रभु। चले करि सबहि अचेत।।

राम ने गणेश, गौरी तथा शंकर को भी बाद में प्रणाम किया है। देखिये गणपति गौरि गिरीसु मनाई। चले असीस पाइ रघुराई।।

इसी प्रकार वाल्मिकि आश्रम में जब श्रीराम वाल्मिकि ऋषि से अपना निवास बनाने के स्थान के बारे में पूछते हैं तो वाल्मिकि अन्य स्थानों के साथ यह भी बतलाते हैं कि जहाँ जिनके मस्तक देवता गुरु और ब्राह्मणों को देखकर बड़ी विनम्रता के साथ झुक जाते हैं, उनके हृदय में निवास कीजिये। यथा

सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी। प्रीति सहित करि विनय विशे खी।।

तुलसी ने भूलकर भी ब्राह्मणों की उपेक्षा मानस में नहीं की है। बल्कि यथा सम्भव उनका सम्मान ही बढ़ाया है। ईधर अयोध्या में श्रीराम का वन गमन होता है और उधर ननिहाल में भरत अनिष्ट कारक स्वप्न देखकर अमंगल के भय से अनिष्ट निवारण हेतु प्रतिदिन ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान देते हैं। अर्थात् अनिष्ट निवारण के लिए तुलसी ने ब्राह्मणों को ही उपयुक्त माना है।

विप्र जेवांइ देहि दिन दाना। सिव अभिषेक करहि विधि नाना।।

ऐसा नहीं है कि तुलसी ने श्री राम के माध्यम से ही ब्राह्मणों का मान बढ़ाया अपितु जब भरत ने त्रिवेणी में स्नान किया तो उन्होंने भी ब्राह्मणों को दान देकर सम्मानित एवं संतुष्ट किया तथा आशीर्वाद प्राप्त किया।

सविधि सीता सीत नीर नहाने। दिये दान महिसुर सनमाने।।

जी हाँ ऐसा भी नहीं है कि तुलसी ने केवल ब्राह्मणों का ही मान प्रतिपादित किया है अपितु विप्र पत्नियों को भी वहीं सम्मान दिया है। देखिये-

गुरु तिय पद वंदे दोउ भाई। सहित विप्र तिय जे संग आई।
गंग गौरि सम सब सनमानी। देहि असीस मुदित मृदु बानी।।

अरण्य काण्ड में तुलसी, ब्राह्मणों के बारे में स्वयं श्रीराम के मुखारविन्द से अपने अनुज लक्ष्मण को भक्ति के सुगम मार्गान्तर्गत समझाते हैं कि जिनके माध्यम से जीव सहज में मुझे प्राप्त कर लेता है। इस संदर्भ में सर्वप्रथम है कि ब्राह्मणों के चरणों में अत्यंत प्रीति हो।

प्रथमहि विप्र चरण अति प्रीति। निज निज कर्म निरत श्रुति रीति।।

इसी प्रकार जब कबंध मृत्योपरांत कहता है कि मैंने ब्रह्मदेव दुर्वासा का अपमान किया तो उनके श्राप से मैंने राक्षस योनी पाई थी। तब राम ने कहा है गंधर्व सुन ब्रह्म कुल से द्रोह करने वाला मुझे सुहाता नहीं है।

सुनु गंधर्व कहऊँ मैं तो ही। मोहि न सोहाइ ब्रह्म कुल द्रोही।।

आगे उन्होंने फिर कहा हे गंधर्व- श्राप देता, प्रताड़ित करता अथवा कठोर वचन कहता ब्राह्मण भी पूज्य नीय है। अतः शील और गुणहीन ब्राह्मण भी वंदनीय है।

ब्राह्मणों के महत्व को आगे देखिये। रामलक्ष्मण जब रिष्य मूक पर्वत पर आये तो उन्हें देखकर सुग्रीव भय भीत होकर हनुमान से बटुक रूप धारण कर उनकी पहिचान कर यहाँ आने का कारण जानने को कहता है। पवनात्मज, ब्राह्मण का रूप धारण कर दोनों भाइयों के समक्ष अपने को प्रस्तुत कर उनका परिचय एवं आने का कारण जानना चाहने पर राम अपना परिचय ब्राह्मण स्वरूप होने से पवन पुत्र को दे देते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि ब्राह्मणों से कोई भी व्यक्ति कोई भेद नहीं छुपाता। ब्राह्मणों को राजे-रजवाड़े में रनिवास तक प्रवेश की अनुमति रही है। अस्तु।

-हरिनारायण नागर (पत्रकार)
306, आशुतोष निकेतन
सन सिटी-2, देवास

अनजाने सफर में..

आइये, देखिये मैं चलता हूँ
कब तक रुकूँ अनजाने सफर में
कुछ जाने-अपने बदल गये हैं
धन दौलत देख मचल गये हैं
गिरा दिया है मुझे अपनी नजर में
कब तक रुकूँ अनजाने सफर में
तुम आये नहीं इन्तजार है
कहो ये कैसा इनकार है
बदला बदला सब लगता है
कैसे जिऊं हवा के घुले जहर में
कब तक रुकूं अनजाने सफर में
जो भी आया अपनी कहकर चला
मुझे कोई यहाँ अपना न मिला
जिसको चाहा दिल से याद किया
वह गया क्यूँ जमाने को लहर में
कब तक रुकूं अनजाने सफर में

-सुभाष नागर
'भारती' अकलेरा

रामावतार एवं कृष्णावतार

हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) विश्व का एक अति प्राचीन धर्म है। नेपाल (86 प्रतिशत) के बाद विश्व में सबसे अधिक इस धर्म को मानने वालों की संख्या भारत (80 प्रतिशत) में हैं। इस धर्म में चार मुख्य सम्प्रदाय है- वैष्णव (जो विष्णु को परमेश्वर मानते हैं), शैव (जो शिव को परमेश्वर मानते हैं, शाक्त (जो देवी को परमशक्ति मानते हैं) और स्मार्त (जो परमेश्वर के विभिन्न रूपों को एक ही समान मानते हैं।) अधिकांश हिन्दू स्वयं को किसी भी सम्प्रदाय में वर्गीकृत नहीं करते हैं तथा अनेक देवी-देवताओं की पूजा, उपासना करते हैं। वास्तव में यह 'एकेश्वरवादी' धर्म है। सभी हिन्दू मानते हैं कि ईश्वर केवल एक और केवल एक हैं जो विश्वव्यापी और विश्वातीत दोनों हैं। जिस प्रकार माला में फूल अनेक होते हैं परन्तु धागा एक ही है, स्वर्ण के आभूषण अनेक होते हैं, परन्तु मूलतत्व उसमें स्वर्ण है, आकार की कीमत नहीं, कीमत स्वर्ण की होती है उसी प्रकार देवी-देवताओं के रूप अनेक है, परन्तु मूल 'परमात्मा' एक ही है। श्रीमद्भगवदगीता के अनुसार विश्व में नैतिक पतन होने पर जो समय-समय पर धरती पर विभिन्न रूपों में अवतरित होगा वही ईश्वर कहलायेगा। हिन्दू धर्म में ईश्वर के जिन स्वरूपों की सबसे अधिक पूजा, अर्चना, भक्ति की जाती है उनमें भगवान श्रीराम तथा भगवान श्रीकृष्ण प्रमुख है। श्रीराम का प्रादुर्भाव त्रेतायुग में तथा श्रीकृष्ण का प्रादुर्भाव द्वापरयुग में हुआ था। जिस प्रकार अंधकार के बिना प्रकाश का, रात के बिना दिन का, श्याम के बिना श्वेत का महत्व गौण है उसी प्रकार राम के बिना कृष्ण का या कृष्ण के बिना राम का महत्व गौण है। वास्तव में ये दोनों भगवान विष्णु के रूप में अवतरित एक ही सिक्के के दो पहलू है। इनके प्रेरणादायी जीवन से जुड़ी कुछ झलकियाँ इस प्रकार है-

जन्म- सर्वविदित है कि श्रीराम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी को मध्यांह 12 बजे अयोध्या के राजा दशरथ के घर हुआ था। राजा दशरथ का वंश सूर्यवंशी रघुकुल के रूप में जाना जाता है क्योंकि राजा दशरथ के दादाजी का नाम रघु था। श्रीराम के जन्म पर सम्पूर्ण अयोध्या में हर्षोल्लास, आनन्द एवं अनन्त खुशी का वातावरण आच्छादित था। इस सुअवसर पर सभी देवतागण, ऋषिगण अत्यन्त आनन्दित होकर श्रीराम के दर्शन का लाभ ले रहे थे केवल चन्द्रदेव उदास खड़े थे, क्योंकि दिन के समय श्रीराम का प्राकट्य होने से सूर्यदेव को अभिमान आ गया था। यह दृश्य देख बाल स्वरूप श्रीराम के अन्तर्निहित चतुर्भुज स्वरूप ने चन्द्रदेव से कहा कि इस बार तो मेरा प्राकट्य दिन में हुआ है, परन्तु अगले जन्म में मैं रात्री को आऊंगा। इस आवश्वासन से चन्द्रदेव को संतोष तो हुआ पर प्रसन्नता नहीं हुई, यह देख श्रीराम ने कहा कि तो क्या हुआ मेरा जन्म सूर्यवंश में हुआ है, परन्तु मुझे लोग रामसूर्य से नहीं रामचन्द्र के नाम से पुकारेंगे यह सुन चन्द्रदेव को अतिरेक प्रसन्नता हुई।

श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में रात्री 12 बजे मथुरा के कारागृह में हुआ था। उस समय सारा संसार प्रगाढ़निद्रा में था केवल दो जीव जाग रहे थे। देवकी एवं वासुदेव। सोने वाले को संसार मिलता है, जागने वाले को परमात्मा मिलते हैं। कृष्ण के जन्म का अर्थ है- अंधकारमयी रात्री में विमोचन। कष्ट एवं दासत्व (अज्ञानता) के क्षणों में विश्व के उद्धारकर्ता का जन्म होता है तब हमारी आँखं से परदा हट जाता है (ज्ञानोदय) और कारागार (मन) के द्वार खुल जाते हैं। एक बार एक भक्त ने कृष्ण से यह प्रश्न किया कि- रामजी का जन्म दिन में हुआ, परन्तु आपका जन्म रात्री में होने के कारण हमें प्रतिक्षा करनी पड़ती है, जागना पड़ता है ऐसा क्यों? तब श्रीकृष्ण ने अत्यन्त सहजता से विनोदी मुस्कान के साथ उत्तर दिया- प्रियवर! श्रीराम का जन्म तो राजा के घर राजकुमार के रूप में हुआ है, परन्तु मेरा जन्म तो कारागृह में 'माखन चोर' के रूप में हुआ है और चोर तो रात्री को ही आते है दिन में नहीं।

नाम राम का नाम अत्यन्त सरल (र + आ = म) है अतः उनका स्वभाव, कार्य, व्यवहार सभी सरल है। उनमें चालाकी कटुता का भाव अंशमात्र भी नहीं है, उनका अपने अनुज भ्राताओं के प्रति अनुराग, व्यवहार, अत्यन्त उदारता एवं त्याग से परिपूर्ण है। इतना ही नहीं माता कैकई के आदेशानुसार राज्याभिषेक का त्याग तथा 14 वर्ष का वनवास दिये जाने के बावजूद उन्होंने माता के प्रति आदर, सम्मान में किंचित मात्र कमी नहीं की। कृष्ण का नाम सरल न होकर संधीयुक्त थोड़ा टेड़ा है (क+र+श+न)। यह शब्द कृप धातु से बना है जिसका अर्थ है खुरचन क्योंकि वह अपने भक्तों के सभी पापों, बुराईयों को खुरच देता है इसलिये कृष्ण कहलाता है। जहाँ एक ओर श्रीराम अत्यन्त सरल एवं मर्यादा पुरूष है तो दूसरी ओर श्रीकृष्ण अत्यन्त नटखट लीलापुरूष है। श्रीराम अपने मूर्तिरूप में धनुष धारण कर सीधे खड़े दिखाई देते हैं, परन्तु श्रीकृष्ण अपने मूर्तिरूप में, बांसुरी लिये टेड़े खड़े दिखाई देते हैं। इसलिये उन्हें 'बांकेबिहारी' भी कहा जाता है।

जीवन चरित्र- श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन मर्यादा से ओत प्रोत है। माता-पिता

के आज्ञाकारी पुत्र के रूप में, ऋषि-मुनियों, गुरूजन के प्रति विनम्र आदरभाव, अनुज भ्राताओं के प्रति स्नेहभाव तथा पत्नी जानकी के प्रति कर्तव्यबोध, आदर्श व्यवहार उनके जीवन का प्रेरणादायी अनुकरणीय ज्ञान हैं। वे सीताजी में पत्नी भाव के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों को मातृभाव से दर्शन करते हैं। जैसे- अनुसूया, अहिल्या, शबरी इत्यादि। श्रीकृष्ण के जीवन में तीन स्त्रियों की प्रधानता रही है। प्रेमिका के रूप में राधा, मित्र के रूप में द्रोपदी, तथा पत्नी के रूप में रुक्मणी। श्रीराम की लीला में ज्ञान है तो श्रीकृष्ण की लीलाओं में प्रेम है। ज्ञान में यदि वैराग्य न हो तो वह अभिमान लाता है। इसी प्रकार वासना रहित प्रेम समर्पण कहलाता है। श्रीकृष्ण सज्जन के साथ सज्जन सरल है पर दुर्जन के साथ सरल नहीं है। श्रीकृष्ण की राजनीति है और रामजी की धर्मनीति है। आध्यात्मिक ग्रंथों में उल्लेखित कथानकों, घटनाओं का समग्र रूप से चिन्तन करने पर ज्ञात होता है कि भगवान विष्णु के इन दोनों अवतारों में अनेक प्रसंगों में जहाँ समानता का बोध होता है तो कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि एक अवतार का ऋण दूसरे अवतार में उतारा है। कुछ प्रसंग इस प्रकार हैं-

स्नेह और त्याग की प्रतिमूर्ति अनुज भरत को श्रीराम ने अपनी चरण पादुका देकर कृतार्थ किया था, असीम श्रद्धा, प्रेम, समर्पण की प्रतिमूर्ति उद्धव को श्रीकृष्ण द्वारा स्वधाम जाने पूर्व अपनी चरण पादुका देकर कृतार्थ किया था।

एक ओर ज्ञान, बुद्धि, वाणी, विचार तथा मतिभ्रष्ट होने पर मंथरा का कुबड़ापन (रामावतार) तो दूसरी ओर, भक्ति, प्रेम, करूणा की पराकाष्ठा होने पर मथुरा में कुब्जा का कुबड़ापन दूर कर उद्धार (कृष्णावतार)।

निःस्वार्थ भक्ति की पराकाष्टा होने पर वर्ण/जाति से परे हटकर एक अवतार में शबरी के झूठे बैर आनन्द से खाना तो दूसरे अवतार में दासी पुत्र विदुर की पत्नी के हाथों केले के छिलके आनन्दमग्न हो खाना।

वनवास के दौरान केवट-मिलन पर, जिस केवट ने प्रेमाश्रु एवं गंगाजल से श्रीराम के पैर धोए थे उसका ऋण श्रीकृष्ण ने द्वारिका के राजमहल में सुदामा के पैर प्रेमाश्रु मिश्रित जल से धोकर चुकाया था।

शरणागत धर्मपरायण व्यक्तियों को प्रश्रय देना तथा उनको सम्मानित करना जैसे सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य तथा विभिषण को लंकाधिपति बनाना (रामावतार)। अनिती, अन्याय, अधर्म के विरुद्ध संघर्ष हेतु प्रोत्साहित कर धर्म की पुर्नस्थापना करना जैसे- कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन का सारथी बन अलौकिक गीताज्ञान देना तथा पाण्डवों को युद्ध में दिग्विजय कर हस्तिनापुर का साम्राज्य प्रदान कर, धर्म की स्थापना करना (कृष्णावतार)।

जरा विचार कीजिये! हम जिस कृष्ण का जन्मोत्सव अति उल्लास, उमंग, उत्साह, गीत-संगीत के साथ मनाते हैं उसी कृष्ण के जन्म पर न कोई ढोल बजाने वाला था और न ही निर्वाण पर कोई रोने वाला परन्तु उनके द्वारा किये गये अलौकिक कृत्य एवं प्रदत्त, अनुपम, अमूल्य कर्मवाद (गीताज्ञान) ने उन्हें अमरत्व प्रदान कर न केवल चिंरजीवी बना दिया वरन सम्पूर्ण मानव जाति के पथ-प्रदर्शक दान कल्याण कर गये।

उपदेश- श्रीकृष्ण को पहचानना कठिन है। श्रीराम को पहचानना सरल है। श्रीराम की मर्यादा को जीवन में उतारना कठीन है। इसी प्रकार कृष्ण की लीलाएँ करना सरल है, परन्तु उनके द्वारा दिये गये ज्ञानोपदेश कर्मवाद (गीताज्ञान) को जीवन में उतारना कठिन है। इसलिये कृष्ण ने जो कहा वह मानव को करना चाहिये तथा राम ने जो करा वह मानव को करना चाहिये। श्रीराम की मर्यादा तथा कृष्ण के उपदेश को जीवन में उतारने पर ही जीवन धन्य होता है मोक्ष का आधार भी यही है।

श्री राम सूर्यवंशी है तथा श्रीकृष्ण चन्द्रवंशी। चन्द्रमन के मालिक है और सूर्य बुद्धि के इसलिये मन-बुद्धि में रहने वाली सूक्ष्म वासना का तभी विनाश हो पाता है जब श्रीराम-कृष्ण की आराधना करने में आवें।

धन की शुद्धि दान से होती है तन की शुद्धि स्नान से होती है तथा मन की शुद्धि परमात्मा के ध्यान से होती है। इसलिये मन को एकाग्रचित कर उसे इधर उधर भटकने से रोकना पड़ता है। जिस प्रकार पानी होने पर कीचड़ होती है और पानी से ही कीचड़ धोया जाता है। कीचड़ का कारण पानी है और धुलने का कारण भी पानी ही है उसी प्रकार बन्धन का कारण मन है और मोक्ष का कारण भी मन ही है।

संदेश- जीवन में मनुष्य को कोई लक्ष्य अवश्य निश्चित करना चाहिए। उसकी रात्री निद्रा एवं विलास में बीत जाती है और दिवस द्रव्योपार्जन के निमित्त उद्यम करने तथा कुटुम्ब का भरण-पोषण करने में पूरा हो जाता है वह अपने जीवन के लक्ष्य को चूक जाता है। प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है कि उसे अपने जीवन की मौलिक जिम्मेदारियाँ पूर्ण होने पर अपना ध्येय निर्धारित करना चाहिये, जिसके जीवन में कोई ध्येय नहीं, वह जीवन बिना नाविक की नाव जैसा है। खाना-पीना, आमोद-प्रमोद, वंश-वृद्धि करना क्या यही मानव जीवन का लक्ष्य है? ये सब तो पशु भी करते हैं। आहार-विहार का ज्ञान पशुओं को भी होता है। मानव केवल भोगों के पीछे पागल बने तो पशु और मानव में भेद क्या है? मानव का एक विशिष्ट लक्ष्य है अपने अन्दर छिपे परमात्मा के स्वरूप को पहचानना, जिसे दूसरे शब्दों में आत्मज्ञान/आत्मबोध भी कहा जा सकता है। संसार के सभी जीवों में केवल मनुष्य में ही ऐसी विलक्षण क्षमता है कि यदि वह निश्चय करे, तो मन-बुद्धि का सदुपयोग कर परमात्मा की भक्ति कर सकता है सतकर्म कर मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

-प्रो.राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी-40, चन्द्रनगर (एम.आर.9), इन्दौर

सुविचार

आपके हर काम में नुक्स निकालकर
उल्टे-सीधे ज्ञान देने वालों की
आजकल कमी नहीं है।
इसलिये अगर जीवन में आगे
बढ़ना है तो बहरे बन जाओ।

अक्टूबर अंक से आगे...

जीवन में अमृत, मंगल की वर्षा का सूत्र

आदित्य हृदय में कुल 31 मन्त्र हैं। यह वाल्मीकि रामायण का अंश है। यदि आप चाहते हैं कि जीवन में मंगल ही मंगल हो। जीवन में अमृत ही अमृत की अनवरत अनन्त वर्षा हो। घर -परिवार में आपसी स्नेह शांति सुकून सफलता और चिर सुखी जीवन हो, तो आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ कर सूर्य को अर्घ्य अवश्य देवें।

आदित्य हृदय स्तोत्र मात्र 2 रुपयों में गीता प्रेस का खरीदिये, इसमे हिंदी संस्कृत व् इंग्लिश में आदित्य हृदय स्तोत्र अंकित है। सरलता हेतु हिंदी में पढिये। निष्काम भाव से मात्र 21 दिवस तक पढ़ने के बाद चमत्कारिक फल देखिये। निम्बू पानी से जिस तरह ग्रीष्म में प्यासे को तृप्ति मिलती है, ठीक उसी तरह आपके जीवन के कष्टों को निवारित करने में यह स्तोत्र अमोघ अस्त्र के रूप में काम करेगा। नागर परिवार का हर सदस्य इसे अपने दैनिक जीवन में अपनाये, इसलिए मैं मात्र आदित्य हृदय के मेरे सर्व प्रिय तीसरे चौथे व पांचवे मंत्रों को अंकित करना चाहूँगा सबके हृदय में रमण करने वाले महाबाहो राम ! यह सनातन गोपनीय स्तोत्र सुनो। वत्स ! इसके जप से तुम युद्ध में अपने समस्त शत्रुओं पर विजय पा जाओगे। इस गोपनीय स्तोत्र का नाम है 'आदित्य हृदय स्तोत्र'। यह परम पवित्र और सम्पूर्ण शत्रुओं का नाश करने वाला है। इसके जप से सदा विजय की प्राप्ति होती है। यह नित्य अक्षय और परम कल्याणमय स्तोत्र है। सम्पूर्ण मंगलों का भी मंगल है। इससे सब पापों का नाश हो जाता है। यह चिन्ता और शोक को मिटाने तथा आयु को बढ़ाने वाला उत्तम साधन है। अरे भाई - बहन माना कि आप बहुत व्यस्त हैं , तो मात्र उक्त तीन मंत्रो के अर्थ मात्र को प्रात: सूर्य सम्मुख पढ़ लीजिये और अमोघ अस्त्र की तरह अपने साथ रखिये , जीवन का उत्तम कवच है। आदित्य हृदय स्तोत्र को मैं महामृत्यंजय मन्त्र की भांति ही स्वयं की रक्षा और सब कुछ शुभ हेतु अमोघ अस्त्र मानता हूँ। यदि कर सकें तो सूर्योदय के पल 2 और सूर्यास्त के पल सूर्य को मात्र 2 आहुतियाँ अक्षत व् गाय के घी से गाय के कन्डो पर हवन के ताम्र पात्र में देवें। हमारे वैदिक ज्ञान को जर्मनी व अन्य विदेशी समझे हैं और उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इस अद्भुत वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया है।

प्रात: काल सूर्योदय के पल पर दी जाने वाली 2 आहुतियों के मंत्र

(आहुति स्वाहा बोलने के उपरान्त दी जाती है)

सूर्याय स्वाहा ,सूर्याय इदम नमम ।।

प्रजापतये स्वाहा , प्रजापतये इदम नमम।।

संध्या काल के पल पर दी जाने वाली 2 आहुतियों के मंत्र

अग्नये स्वाहा , अग्नये इदम नमम।।

प्रजापतये स्वाहा , प्रजापतये इदम नमम।।

इसे होमाथेरेपी कहते हैं। इसे नेट से होमाथेरेपी गूगल पर डाल कर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इस हवन से क्या नहीं मिलता। सेहत ऐश्वर्य सम्मान। सब कुछ .... सब कुछ .... सबकुछ। घातक से घातक रोग से पीड़ित मानव भी स्वस्थ हो जाता है। होमोथेरेपी से मानव चिकित्सा utubes पर देखिये - अद्भुत अकल्पनीय अविश्वसनीय परिणाम हैं होमोथेरेपी के। utubes देखकर स्वयं होमोथेरेपी का लाभ लेवें। हाथ कंगन को आरसी क्या ? मानव जीवन के लिए होमाथेरेपी है कल्पवृक्ष ....कल्पवृक्ष ....कल्पवृक्ष। भाईयों बहनों और बडीलो। क्रियान्वयन तो करना होगा। खोया हुआ भी सब मिलेगा ....नया भी मिलेगा असीम विपुल, अद्भुत, अकल्पनीय व् अविश्वसनीय परिणामों के साथ।

अपने घर परिवार में प्रत्येक नागर एक प्रति नित्य पूजा प्रकाश नामक गीता प्रेस की पुस्तक अनिवार्य रूप से क्रय कर रखें। कम्प्यूटरीकृत दौड़ में घर परिवार में यह सरल संस्कृत-हिंदी की पुस्तक संस्कार- संस्कृति की पुस्तक एक महान धरोहर सिद्ध होगी। इसकी 18लाख से अधिक प्रतियों के 62 से अधिक संस्करण के पाठक हो चुके हैं।

-आलेख डॉ तेज प्रकाश व्यास
9407433970
प्रभु कुंज ,135 सिल्वर हिल्स धार
research2047@gmail.com

आत्महत्या एक दुखद अंत

हमारे देश में आजकल आत्महत्या की घटनाएं अधिक बढ़ गई है। आज के नवयुवक-युवतियां जीवन में संघर्ष करना नहीं चाहते। परीक्षा में असफल हुए, माता-पिता की डांट-फटकार, किसी से विवाद, प्रेम में असफल हो जाने से विचलित होकर वे तुरन्त जहरीला पदार्थ खाकर, पानी में डूबकर, फांसी या आग लगाकर आत्महत्या कर लेते हैं। इस प्रकार की मौत हालांकि बहुत कष्ट कारक होती है तथा आत्महत्या का कदम उठाने वाले भी मौत को सामने देखकर बचा लेने की गुहार लगाते हैं पर उस समय तक देर हो जाती है, अतः आत्मघाती कदम उठाने से पहले ही यह सोचना चाहिए कि मरने से किसी समस्या का हल नहीं होता, आत्महत्या महा पाप है तथा आत्महत्या करने वालों की मुक्ति नहीं होती। अतः कोई भी ऐसा आत्मघाती कदम उठाने के बजाय खूब सोच-विचार करें, क्योंकि आजकल वैसे ही सुखी परिवार की परिकल्पना में हर घर में एक या दो बच्चे होते हैं तथा माता-पिता का जीवन इन संतानों पर ही आधारित होता है, अतः नवयुवक-युवतियां योग्य बनकर अपने जीवन को सफल बनाए तथा परिवार को सुख दें। ईश्वर प्रदत्त इस मनुष्य जीवन को सफल बनावें।

-श्रीमती विमला व्यास

त्रिवेद विभूति एवं अल्पज्ञात साहित्यकार स्व.धनशंकरजी झा

संवत 1700 से 1900 का कालखण्ड वागड़ क्षेत्र का भक्तिकाल कहाँ जाता है। जिसमें विष्णु के दसवें निष्कलंक अवतार संतमावजी, राधकृष्ण के युगल अवतार राजस्थान के नरसी सद्गुरु दुर्लभरामजी, वागड़ की मीरा गैवरी बाई, कार्तिकेय अवतार सद्गुरु कैशवाश्रमजी, भैरवानंदजी, भगवानदासजी, नवलास्वामीजी, दयानिधिजी, जनार्दनरायजी आदि अनेक संत महात्माओं ने जन्म लेकर व अपनी कर्मभूमि, लीलाभूमि बनाकर यहाँ भक्ति साहित्य की ज्ञान गंगा बहाकर एवं भक्ति ज्ञान के वृक्ष पर पुष्प खिलाकर अपने सौंदर्य व गंध से वातावरण को अभिभूति कर पुनः अनंत में विलीन हो गए।

18वीं सदी के अन्त में लोगों को सद्मार्ग पर लाने, सांस्कृतिक चेतना बलवती करने गृहस्थ संत साहित्यकारों की श्रृंखला प्रारम्भ हुई। जिसमें लोढ़ीकाशी बांसवाड़ा के श्री हरिहरदासजी, स्वामी परमानंदजी, श्री विजयशंकरजी पण्डया, आचार्य श्री धनशंकरजी झा का स्थान मूर्धन्य अग्रगण्य सर्वोपरि है। इस गृहस्थ साहित्यकार व त्रिवेद विभूति आचार्य श्री धनशंकरजी झा ने स्वयं के जीवन परिचय के 21 वंशीय परिचय 8 दोहे लिखे हैं, जिसके अनुसार उनका जन्म वि.स. चैत्र 1970 शाके 1835 आषाढ़शुक्ल चौदस तदनुसार 17 जुलाई 1913 ई. में पञ्चद्रविणान्तर्गत आभ्यंतर वडनगरा नागर ज्ञाति कौशिक गौत्र में हुआ था।

'ओगणी सौ सीत्तर मल्या विक्रम संवत जाण, अठार सौ पर पातरीशाली वाहन शाके जाण।

वर्षा ऋतु आषाढ़जी शुक्ल चतुर्दशीमान, शुभ वासर गुरुजी मल्यां नक्षत्र छे पूर्वाषाड़।।

उनके पिताजी श्री लाभशंकरजी ऋग्वेद के वेदज्ञ व महान कर्मकाण्डी थे तथा उनकी माताजी जमुनादेवी अथर्ववेद के महान् प्रकाण्ड पंडित जयदेवजी पंचोली की पुत्री थी। पाण्डित्य वातावरण उन्हें मातृ व पितृपक्ष दोनों से मिला था। 7 वर्ष की आयु में उनका उपनयन संस्कार हुआ। 12 वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ था। अल्हड़ मनमौजी, फकीराना अंदाज देखकर उनके पिताश्री ने उन्हें वाराणसी अपने ननिहाल भेज दिया तथा अपने मातामह जयदेवजी से अथर्ववेद कर्मकाण्ड की शिक्षा प्राप्त की थी। अपने पिताजी से ऋग्वेद का ज्ञान, श्री लक्ष्मणशास्त्री से युजुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया। वागड़ में वे अकेले त्रिवेद के ज्ञाता थे। वाराणसी में सांगवेद विद्यालय में गणपतिशंकर भट्ट से तांत्रिक विद्या सीखकर, मत्स्योदरी तंत्र साधना की सिद्धि प्राप्त की थी। आचार्य श्री अथर्ववेद की 'पिप्लाद शाखा' के प्रकाण्ड पंडित थे। बांसवाड़ा नरेश श्री पृथ्वीसिंहजी के आग्रह पर आचार्यश्री ने अपनी कर्मभूमि नागरवाड़ा बांसवाड़ा में बनाई थी।

आचार्यश्री ने 30-35 रचनाग्रंथों में 150 आख्यानात्मक गरबा, 500 सामान्य गरबा, 700 पदभजन, 100 सांप्रदायिक सद्भावपद, 900 कवित, 50 द्विअर्थी पद, 3500 दोहे, 31 प्रभाती भजन 30 होली गीत, 30 गजले, 7 भोग, 7 आरतियाँ, 200 कलात्मक आध्यात्मक चित्र, 52 वर्णों का कल्पित वर्णाकृतियों के प्रसंग में वे लिखते हैं-

'वेद मही ज्यां छू लखा समझीलो तेहनुरुप।
ध्यान धरि लखजी बंधे, धनभाई वर्ण अनूप।।

यह सम्पूर्ण रचनाएँ 'धनजी का धन' मूर्धन्य साहित्यकार स्व. डॉ.श्री नवीनचन्द्रजी याज्ञिक ने इसी पुस्तक साहित्यकला, संगीत, भक्तिज्ञान, वैराग्य, दर्शनतत्व निरुपण के रूप में संकलित की है। आचार्य श्री को 1935 ई. में वाराणसी सहस्त्र महाचण्डी यज्ञ में ब्रह्मारूप में प्रतिष्ठिति किया गया। काशी नरेश ने उन्हें आचार्यश्री विभूति से विभूषित किया था। 23 दिसम्बर 1982 में एवं 1988 ई. में राजस्थान सरकार ने सम्मानित किया। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र नईदिल्ली द्वारा अथर्ववेद की 'पिप्लाद शाखा' के धुरन्धर विद्वान के रूप में निमंत्रित किया गया था। उत्तरांचलवेद सम्मेलन गुजरात साहित्य अकादमी, महाराष्ट्र गुजरात के वेद सम्मेलनों में आमंत्रित होने लगे थे। शक्तिपीठ अंबाजी गुजरात के वेद विद्यालय में अथर्ववेद के परीक्षक भी रहे थे।

ऐसे महान् संत, अल्पज्ञात साहित्यकार, त्रिवेद ज्ञाता का विस 2054 शाखे 1917 वैशाखकृष्णा/उत्तर भारतीय ज्येष्ठ कृष्णा नवमी सोमवार दिनांक 22 मई 1995 ई. को प्रातः स्वधाम, मणीपुरवास के लिए उनकी स्वरचित शाश्वत पंक्तियों की अमिट छाप छोड़कर प्रस्थान कर गये।

धन मुसाफिर है न कि वांशिदाका।
यह मुल्के तो गौर है, तू तो वांशिदा वहाँ का।
उठा के चल पड़ेगा गठरी, तू बंदा है जहाँ का।।

आचार्य श्री का जीवन-चरित्र दुर्लभ ग्रंथ 'धनजी का धन' लेखक मूर्धन्य साहित्यकार स्व नवीनचन्द्रजी याज्ञिक द्वारा तैयार किया गया था।

-संकलन- दिगीश नागर
नागरवाड़ा बांसवाड़ा (राज.)

मेरी गलतियाँ मुझसे कहो दूसरे से नहीं। क्योंकि सुधरना मुझे है, उनको नहीं।।

-ओमप्रकाश एस.नागर
देवास

राजनीति एवं पत्रकारिता को समाजसेवा का माध्यम बनाया

तराना जिला उज्जैन के वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिज्ञ श्री सत्येश नागर का देवलोक गमन विजयादशमी के दिन 11 अक्टूबर 2016 को हो गया। व्यक्ति अपने पद एवं प्रभाव का उपयोग आमतौर पर अपने परिवार को समृद्ध बनाने हेतु करता है। लेकिन उन्होंने अपने पद एवं प्रभाव का उपयोग समाजसेवा के लिए किया। वास्तव में बाह्य समृद्धि से लोग विस्मित होते हैं, परन्तु आन्तरिक समृद्धि से भगवान प्रसन्न होते हैं वह समृद्धि है भगवान के ऊपर पूर्ण विश्वास। इस विश्वास रुपी वृक्ष पर ही भक्ति रुपी फल लगते हैं जो भी समाजजन एवं रिश्तेदार श्री नागर को जानते हैं उन्हें पता है कि वे पूरी जिंदादिली से जिंदगी जीये और अंतिम सांस भी अपने मुरली मनोहर के सामने ली। उनके बारे में उन्हीं का हस्तलिखित विवरण यहां प्रस्तुत है- भगवान मुरली मनोहर की कृपा व देखरेख में हम भाई बहन बड़े हुए व उन्हीं की कृपा से आज हम सब आनन्द में है। भौतिक सुख-दुख व शारीरिक कष्ट व्याधि तो सभी को आती है, उनकी अपार कृपा हम पर है। बात सन् 1961 की है, उस समय नगर में एकमात्र पत्रकार श्री नारायणसिंह ठाकुर थे, उन्होंने कृपावश मुझे भी पत्रकारिता सिखाई व कई वर्षों तक मैंने नईदुनिया, नवभारत, नवप्रभात, इन्दौर समाचार, जागरण, ब्रिगेडियर, दैनिक अवन्तिका, विक्रमदर्शन आदि दैनिक पत्रों में तथा समाचार एजेंसी समाचार भारती व साप्ताहिक स्पुतनिक आदि में संवाद प्रेषण का कार्य किया। सर्वाधिक सेवा 15 जुलाई 2006 तक लगभग 45 वर्षों तक नईदुनिया को दी। राजनैतिक क्षेत्र में मैंने सन् 1957 से कार्य करना प्रारम्भ किया व पूर्व विधायक स्व.श्री रामेश्वर दयाल तोतला के चुनाव अभियान में भाग लिया, तब से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सक्रिय सदस्य रहा। संस्था में कई चुनाव प्रतिनिधि आदि के लड़ा तथा विजयश्री प्राप्त की। नगर पालिका तराना में 11 वर्षों तक वरिष्ठ पार्षद रहा व कृषि उपज मंडी समिति तराना का 5 वर्षों तक सदस्य एवं सेवा सहकारी संस्था सालाखेड़ी का 24 वर्ष तक अध्यक्ष रहा, तहसील पत्रकार संघ तराना का मैं 1973 से लगातार निर्विरोध अध्यक्ष हूँ। मेरी संघर्ष एवं विकास की यात्रा में मेरी जीवन संगीनी सौ. शकुन्तला नागर का मुझे पल-पल सहयोग मिला। श्री नागर अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। धर्मपत्नी शकुंतला नागर, एक पुत्र नवीन-सौ.सीमा नागर, तीन सुपुत्रियां सौ.भारती-श्याम कुमार नागर देवास, सौ.संगीता-दीपक शर्मा इन्दौर एवं सौ.कविता-डॉ.जयंत नागर भौंरासा हैं, जिनके ऊपर उनका वरद हस्त सदैव रहा एवं भविष्य में आशीर्वाद रूप में जीवन पर्यंत रहेगा।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रामकृष्णजी नागर

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, नागर समाज के वरिष्ठ समाजसेवी, बैंक ऑफ इंडिया के पूर्व अधिकारी, उज्जैन परस्पर को ऑप-बैंक के पूर्व महाप्रबंधक तथा सम्प्रति एम.पी. अरबन को.आप.बैंक के एम्पलाई एवं ऑफिसर्स एसो. के स्टेट प्रेसीडेंट श्री रामकृष्णजी नागर का आकस्मिक निधन 4 नवम्बर 2016 को हो गया। ज्ञातव्य है कि वे कुछ दिन पूर्व एक सड़क दुर्घटना में घायल होने के पश्चात् स्थानीय चिकित्सालय में भर्ती थे। श्री नागर की छवि एक बैंक अधिकारी के रूप में तो थी ही वे कानून के ज्ञाता थे तथा होम्योपैथी चिकित्सा में भी सिद्धहस्त थे, समाज के प्रति उनका समर्पण प्रेरणास्पद है, सभी सामाजिक कार्यक्रमों में उपस्थित होकर अपनी चिरपरिचित शैली में सभी छोटे-बड़ों से मिलना तथा उनकी कुशल क्षेम जानना उनका शगल था। बैंक की नौकरी से सेवा निवृत्ति के पश्चात् उन्होंने वकालात एवं होम्योपैथिक चिकित्सा पर ही ध्यान केन्द्रित किया। वे अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती इन्दिरा नागर, सुपुत्र वीरेन-सौ.रानु नागर तथा सुपुत्री- सौ.कीर्ति-योगेश पंचोली भोपाल को छोड़ गए हैं, उनका वरदहस्त एवं आशीर्वाद सदैव पूरे परिवार पर बना रहेगा।

राम-लक्ष्मण सा भाईयों का प्रेम

कई बार मनुष्य अपने आंतरिक प्रेम को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाता, परन्तु कुछ घटनाएँ उसे उजागर कर ही देती है। श्री सत्येशजी नागर एवं श्री रामकृष्णजी नागर का प्रेम भी कुछ इसी तरह का था हर काम में बड़े भाई अपने छोटे भाई को राम-लक्ष्मण की तरह आदेश देते तथा छोटे भाई भी उनका मान रखते। वे मुरली मनोहर की छत्रछात्रा में बड़े हुए, बड़े भाई तराना में ही भगवान की सेवा में लगे रहे तथा छोटे भाई नौकरी के सिलसिले में बाहर निकल गए, लेकिन उनका आंतरिक प्रेम यथावत बना रहा। बड़े भाई का अवसान छोटे भाई को अंदर तक हिला गया। श्री सत्येशजी के दसवें के कार्यक्रम के पश्चात् दोपहर में हुई एक घटना में श्री रामकृष्णजी घायल हो गए और 25 दिन के अंतराल में दोनों भाईयों ने संसार को अलविदा कह दिया। वे पुण्यात्मा थे यह स्वप्रमाणित हुआ, बड़े भाई ने विजयादशमी के दिन तथा छोटे भाई ने लाभ पंचमी के दिन अंतिम सांस ली। साथ-साथ बड़े हुए, साथ-साथ ही विवाह साथ-साथ ही विदाई ले ली। ईश्वर के न्याय के सामने सब बेबस है।

मेरी ज़मीन आसमान मेरे पापा

भाद्र पद की पूनम पर स्व.श्री बसंत कुमार मेहता जी के पुत्र व हमारे पिता श्री अनिल कुमार मेहता ने अपने जीवन की आखरी साँसे ली। किसे पता था कि पूनम की रात में होने वाला उजाला मेरे पिता के जीवन में अँधेरा बन जयेगा। आदमी मुसाफिर है आता है जाता है आते जाते रस्ते में यादे छोड़ जाता है। मेरे पिता का 1970 से शुरू हुआ साँसों का सफर 16-09-2016को पूरा हुआ। वे हमेशा के लिए चले गए अपने नए सफर पर। पिंजरे में तड़पती रूह का पंछी अब आज़ाद हो चूका था। शायद यही विधि का विधान था। वे मूलरूप से भोपाल मेहता परिवार के सदस्य थे और कुछ ही वर्ष पूर्व अपने समस्त परिवार के साथ देवास सेटल हुए थे। ऊँचा कद , चोड़ी छाती ,कड़क आवाज़ परंतु नम्र स्वभाव ,सरल रहन सहन के मेरे पिता ने कभी हम दो बहनों को बेटो से कम नही समझा हमेशा हम पर गर्व किया और हमारा हौसला बढ़ाया। वे हमारी प्रेरणा है। ब्रेन हैमरेज जैसी बड़ी बीमारी का शिकार हुऐ मेरे पापा ने करीब 21 दिन अस्पताल के आई. सी. यू. में गुजारे और वही दम तोड़ दिया। उस दिन एक माँ ने अपना बेटा खो दिया, एक पत्नी ने अपना साथी खो दिया , एक बहन ने अपना बड़ा भाई खो दिया और दो बेटियों ने अपने ऊपर से अपने पिता का साया खो दिया। उनकी बोलती आँखों ने हमेशा हमे ये समझया है कि जीवन में होने वाले उतार-चढ़ाव के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। तकलीफे कभी बता कर नहीं आती और नहीं कभी समय एक जैसा रहता है। सहनशीलता और हौसला हमे उन्ही से मिला है। यह सच है कि वक़्त हथियार है। वक़्त बीत रहा है, लेकिन न वक़्त उनकी यादो को मिटा पा रहा है न हम उन्हें पल भर के लिए भूल पा रहे है। हम उन्हें हर पल अपने साथ ही पाते है। वह जहाँ भी रहे खुश रहे। उनका आशीर्वाद हमेशा हम पर बना रहे।

स्मरण के साथ स्व.श्री बसंत कुमार मेहता जी के सुपुत्र व् स्व.श्री श्याम सुंदर मेहता एवं स्व.श्रीमती लता मेहता के बड़े दामाद।

-साक्षी मेहता एवं श्रुति मेहता
12 न्यू राम नगर ऐनेक्स देवास

श्री पार्वती शंकरजी झा, बांसवाड़ा

श्री पार्वतीशंकरजी झा के देवलोकगमन से बांसवाड़ा एवं कोलकाता का नागर समाज शोकमग्न एवं व्यथित हो गया। उनका ऐसा प्रभावशाली एवं लोकप्रिय व्यक्तित्व था। इनका परिवार कोलकाता में जा बसा था जहाँ इनके पिताजी स्व.हीरालालजी एवं चाचा श्री नंदीशंकरजी अग्निहोत्री पारिवारिक गुरु एवं आचार्य थे। नागर समाज एवं कोलकाता के उद्योग-व्यापार जगत की हस्ती श्री गिरधारीलालजी मेहता, श्री मुरारीलालजी मेहता परिवार ने श्री पार्वती शंकरजी झा के परिवार को अपनी हवेली में ही रहने की सम्पूर्ण सुविधा प्रदान की थी। श्री झा ने उच्च शिक्षा कोलकाता में ही प्राप्त की थी। कुछ वर्षों तक यूको बैंक में कार्यरत रहने के पश्चात् विदेशी फर्म 'सितक्लोर' में प्रबंधक स्तर पर कार्य किया। कोलकाता में नागर समाज में सक्रिय रहे एवं शांति स्पोर्टिंग क्लब व हाटकेश्वर पुस्तकालय इत्यादि संस्थाओं में योगदान दिया। हंसमुख एवं मिलनसार स्वभाव के कारण इनका नाम 'लड्डू' हो गया था। सेवा निवृत्ति के पश्चात् वे पुनः बांसवाड़ा आ गए तथा अपने बड़े भाई स्व.श्री ऋषि शंकरजी के साथ 'ऋषिकुंज' नामक विशाल एस्टेट का विकास किया। श्री पार्वती शंकरजी भारतीय विद्या मंदिर संस्थान के संरक्षक थे। इस संस्था का बांसवाड़ा जिला में एकमात्र विधि महाविद्यालय एवं शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय तथा विद्यालय है। उनका श्री साँईबाबा मंदिर द्वारा संचालित अन्नक्षेत्र में भी लगातार योगदान रहा है ऐसे विराट व्यक्तित्व की चिर विदाई की क्षतिपूर्ति मुश्किल है।

-नटवरलाल झा
श्रीमती मंजू-प्रमोद राय झा

प्रथम पुण्य स्मरण

स्व.श्रीमती जमना देवी-नवनीतलालजी व्यास (नागर)
27 नवम्बर
स्नेह-सम्मान, सादर स्मरण
श्रद्धावनत- कृष्णकांत व्यास, मंदसौर, शरदचन्द्र नागर, सत्येन्द्र नागर, उदयपुर, जोशी जया नागर, जाधव, त्रिवेदी इन्दौर, तिवारी परिवार महू

-पी.आर.जोशी, इन्दौर

पंछी से सीख

ढूँढती ऊंचाईयाँ
और धरा पर है नज़र
मानव कुछ तो सीख लो
इन पंछियों से एक नजर।
तुमको रखना है
धरा पर पैर अपने
और आसमां पर
तुमको रखनी है नजर।

-धीरेन्द्र ठाकोर

जब तक जीवन का दूसरों के लिए उपयोग हो सके तभी तक जीना चाहिए

मेरे पति (कमलकान्त नागर) जो इस संसार से नाता तोड़कर 'परम धाम' को जा चुके हैं, उनके बारे में कुछ लिखना समीचीन नहीं है। जीवन में घना जुड़ाव जिसके साथ था उसके बारे में लिखते हुए ऐसा प्रतीत होता है जैसे अपने ही बारे में लिख रही हूँ।

सबसे मिलकर वह बहुत प्रसन्न होते थे। सहज भाव से निर्मल मन से बात करना उनको बहुत अच्छा लगता था। आगरा के प्रति, वहाँ के लोगों के प्रति उनका घना जुड़ाव था। सबके सुख, सुविधा की चिन्ता करना, परम कर्त्तव्य मानते थे। वह धार्मिक थे, किन्तु उनका दृष्टिकोण जरा भी संकुचित नहीं था। कभी-कभी कहते थे कि हर धर्म में भगवान की उपासना होती है फिर अलगाव कहाँ? 'संसार मिथ्या है सब मायाजाल है' ऐसा वह नहीं मानते थे। संसार में आकर सबसे प्रेम करना और कर्त्तव्य पालन में ही जीवन की सार्थकता है। सबकी भलाई में ही अपनी भलाई है। कभी-कभी यह भी कहते थे कि 'मैं तुम्हारा तो हूँ ही, किन्तु मैं सबका हूँ यह जान लो'। उनके पास आने वाला यदि अपनी व्यथा कथा कहता था तो कोशिश करते थे कि कैसे इनका दुःख दूर हो। किसी का भला यदि उनके प्रयत्न से हो जाता था तो भीतर से प्रसन्न होते थे। इधर वृद्धावस्था आने पर शरीर से धीरे-धीरे निर्बल होते जा रहे थे, दवाईयों का सहारा लेने की मजबूरी से दुखित हो जाते थे। अक्सर कहते थे कि इस प्रकार जीने के लिये जीने से क्या लाभ? जब तक इंसान सबके काम आने के लायक हो तब तक ही जीना चाहिए। महात्मागाँधी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। संत के प्रति गहरा सम्मान उनके हृदय में था। बिना सोचे समझे या बिना तर्क की कसौटी पर कसे वह कोई सिद्धान्त वाक्य स्वीकार नहीं करते थे। उनके व्यक्तित्व में बड़ा आकर्षण था। भीड़ में भी अलग दिखाई देते थे। स्वभाव से शौकीन थे। वे कहते थे अपने उपर कम से कम खर्च करो। मेरा जीवन शून्यता से भर गया है। ऐसा लगता है कि वह मेरे आसपास कहीं है। वह मेरे पति तो थे ही जीवन गुरु भी थे। उनकी यादों के सहारे श्रद्धा सहित

-कमल की कल्पना

इस जीवन का आना-जाना अटल सत्य है
हर दिल में जगह बनाकर छोड़ गये।

छठवाँ
पुण्य स्मरण

स्व.देवकुंवर नागर राऊ

अवसान
दि.29-10-2010

अष्टम
पुण्य स्मरण

स्व.देवन्द्रा दवे लुनेरा रतलाम

अवसान
दि.6-11-2008

ननंद भोजाई के त्याग व सहयोगात्मक दृष्टि व आदर्शों का स्मरण परिवार में उपस्थिति की झलक देता है।

श्रद्धावनत- मनोहरलाल नागर, राऊ, भुवनेश दवे, रामलाल दवे लुनेरा, जीवनलाल दवे, विकास दवे इन्दौर व नागर व दवे परिवार राऊ, इन्दौर व लुनेरा

शिक्षा जगत के देदिप्यमान नक्षत्र श्री सुभाषचन्द्र मेहता,इन्दौर

होल्कर विज्ञान महाविद्यालय में कईं वर्षों तक व्याख्याता के रूप में अपनी सेवाएं देकर विशिष्ठ पहचान बनाने वाले शिक्षा जगत के देदिप्यमान नक्षत्र श्री सुभाषचन्द्र मेहता का देवलोक गमन 17 अक्टूबर 2016 को इन्दौर में हो गया। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। सुपुत्र पंकज मेहता मुम्बई में वैज्ञानिक संस्थान में अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।

समस्त नागर ब्राह्मण समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

एकादश पुण्य स्मरण

स्व.श्रीमती सुशीला-जीवनलालजी नागर

30-11-16

आत्मीयता पूर्ण रिश्तों की जनक, ज्योतिषविद्, मानवीयता, समाज की महिला विकास समर्पित विशिष्ट प्रतिमूर्ति श्रद्धावनत् नागर परिवार, उदयपुर, जोशी, नागर, तिवारी, जाधव परिवार इन्दौर महू

-पी.आर.जोशी, इन्दौर

मातृ देवो भव... पितृ देवो भव...

सादर पुण्य स्मरण

स्व.श्री रामचन्द्रजी मेहता
प्रभुमिलन 17 दिसम्बर 2011

स्व.श्रीमती लतादेवी मेहता
प्रभु मिलन 15 दिसम्बर 2013

सुबह मन्दिर की घंटी के स्वरों में आप याद आते हैं पापा,
स्तुति की स्वर लहरियां आपकी याद दिलाती है माँ,
पूरा दिन आप ही के आशीर्वाद और स्नेह की बीच बीत जाता है,
शाम को घर लौटते धवल के घुंघरुओं की आवाज में,
हम आपके साथ बिताए हुए लम्हों की यादें संजोते हैं
आप कहीं नहीं गए, हो यहीं हमारे बीच में,
सुबह उदय होते सूर्य, संध्या को घर लौटते
पंछियों का कलरव, आपकी स्मृतियां आपके शब्द
हमेशा हमारी राहें प्रशस्त करते रहेंगे।
वन्दन ... नमन् ...

श्रद्धावनत : भ्राता: राधेश्याम–शशिकला मेहता
पुत्र : जितेन्द्र–रीना मेहता, पुत्रियाँ : किरण–दिनेश मेहता एवं
सीमा–नवीन नागर, भतीजा : प्रतीक–प्रगति मेहता
व समस्त मेहता एवं नागर परिवार, मक्सी–इन्दौर–तराना एवं मनासा

RYDAK

(RED)

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

रिश्ते परिवार की धुरी होते हैं और परिवार समाज की धुरी होता है। स्वस्थ रिश्ते ही स्वस्थ परिवार व समाज का निर्माण कर सकते हैं। जिस तरह एक मोती के बिखरने से पूरी माला बिखर जाती है, उसी तरह एक रिश्ते के बिखरने से पूरा परिवार व समाज बिखर जाता है। सच्चे मोती की माला हम बड़े संभाल के रखते हैं, उसी तरह इन रिश्तों की माला को भी संभाल के रखना हमारा कर्तव्य है।

रिश्तों की माला

रिश्ते बनाने व संभाल कर रखने में बरसों बीत जाते हैं, परन्तु रिश्ते तोड़ने के लिए सिर्फ एक कड़वी जुबान ही काफी होती है। रिश्तों की गहराई में जाने के लिए रिश्तों को सच्चे व साफ दिल व मन से निभाना सबसे ज्यादा जरुरी है। बढ़ती जनसंख्या के दौर में जहाँ वर्तमान पीढ़ी सिर्फ एक या दो बच्चों की प्लानिंग करते हैं वहाँ तो भावी पीढ़ी के लिए रिश्ते वैसे भी कम ही रह जायेंगे। पति-पत्नी, भाई-बहन, माता-पिता, बुआ-फूफा, जीजा-साली, चाचा-चाची, ताउजी-ताईजी, दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी, बहु-बेटे, बेटी-दामाद आदि रिश्तों की अपनी पहचान, आदर, सम्मान, मर्यादा भी है। जहाँ इतने रिश्ते होने के बावजूद भी व्यक्ति अगर स्वयं को अकेला महसूस करने लगे तो इसमें दोष किसका है? बड़ों का, छोटों का, स्वयं का या फिर आसपास के वातावरण का? कहते हैं, इंसान आचरण, व्यवहार, मान-सम्मान, सीमाएँ-मर्यादाएं, बोलचाल आदि व्यवहार की बातें अपने घर-परिवार से ही सिखता है। तो ऐसा दिन-प्रतिदिन क्या घटित होता जा रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक रिश्तेदार और घर वालों से दूर होता जा रहा है। घर के सदस्यों की बात तो दूसरे नंबर पर रखी जा सकती है। प्राथमिकता यह भी है कि व्यक्ति स्वयं से भी कोसों दूर होता जा रहा है। स्वयं की दिनचर्या भी ऐसे भागते-भागते व्यतीत होती है और पता नहीं चलता और हम कहते हैं 24 घंटे कहाँ चले गये पता ही नहीं चला। यह काम रह गया, वह काम रह गया। जब स्वयं का पता नहीं कि रोटी खाई या नहीं तो कैसे व्यक्ति घर-परिवार माता-पिता, पत्नी-बच्चों को समय दे पायेगा? रिश्तेदार तो फिर बहुत ज्यादा दूर की बात है। स्वयं के लिए थोड़ा समय अवश्य निकालना चाहिए। तभी हम दूसरों के लिए समय निकाल पायेंगे। अंततः हम कहेंगे अरे! पूरी जिंदगी बीत गई पता ही नहीं चला।

पति-पत्नी दोनों कमाते हैं, क्योंकि एक की सैलरी में घर खर्च नहीं चलता। पहले एक की सैलरी में घर खर्च चल जाता था। पर अब दोनों कमाते हैं तब भी क्यों नहीं खर्च पूरा चल पाता। क्योंकि अनगिनत ऐसे खर्चों ने हमें घेर लिया है जिनकी आवश्यकता शायद कभी थी ही नहीं। पर इस जगमगाते दौर में शायद दोनों को ही दिखाई नहीं देता। अंधाधुंध कमाई के चलते बच्चों को 'आया' पालती है। जब यही बच्चे बड़े होते हैं तो इनमें एक कुंठा घर कर जाती है कि हमें हमारे मम्मी-पाप ने बचपन में समय क्यों नहीं दिया?

'आया' ने जो सिखाया वो उन्होंने सीखा। और जब मम्मी-पापा बुढ़ापे की उम्र तक आ जाते हैं तब ये बच्चे उन्हें नहीं पूछते। यहाँ से घर-संसार पीढ़ी-दर-पीढ़ी टूटने बिखरने लगता है। यह सिलसिला कुछ एकाध वर्षों का नहीं है और न ही एकाध वर्ष चलेगा। बल्कि यह सिलसिला यह कुंठा कहीं-न-कहीं घर-परिवार, सदस्यों, बच्चों के मन में अपनी जड़े मजबूत बिठा चुकी है। जिसका प्रभाव वर्तमान पारिवारिक संबंधों में साफ तौर पर दिख रहा है और यह क्रम इसी तरह अनंत काल तक चलता रहेगा जब तक स्वयं पर संयम, अंकुश न लग जाए।

एक सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में एक तिहाई रिश्ते छः महीने से ज्यादा नहीं चल पाते। अभी यह आंकड़ा एक तिहाई है, इस आंकड़े के घर-घर तक फैलने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। पहले भी 24 घंटे थे आज भी 24 घंटे हैं। फिर ऐसा क्या होता जा रहा है कि एक मिनट का भी हिसाब लगा पाना या दे पाना मुश्किल होता जा रहा है। जैसे कि हमारी जरूरत के लिए अत्याधुनिक चीजें, मोबाइल, लैपटॉप, इंटरनेट, टी.वी. आदि चीजें बन गई है। लेकिन जब हम इनका उपयोग करने बैठते हैं तो एक के बाद एक चीजें देखते रह जाते हैं और समय गुजरता जाता है।

मूल बात जिस काम के लिए इन्हें लेकर बैठे थे वह काम तो रह गया और चार-चार घंटे बीत जाते हैं हमें पता नहीं चलता। हमारी प्राथमिकता के अनुसार इनका उपयोग हो तो अच्छी बात है। लेकिन प्राथमिकता को छोड़कर अन्य सभी काम किये जाएँ, तो यह शारीरिक, मानसिक व स्वयं के समय के समय की हानि ही है। और इसका असर चाहे-अनचाहे हमारे रिश्तों पर भी पड़ता है। रिश्तों के निबाह के लिए सहनशीलता सर्वोपरि गुण है। पर यह गुण

कहीं लुप्त हो गया है। आज तो किसी का लोकल ट्रेन में हल्का सा धक्का भी लग जाए तो लोग मारपीट पर उतर आते हैं। गुस्सा, क्रोध व्यक्ति के मन-मस्तिष्क को बर्बाद कर देता है। पर अब क्रोध करना, बात-बात पर गुस्सा आ जाना हर व्यक्ति का धीरे-धीरे स्वभाव बन गया है और यह क्रोध उन पर इतना अधिक हावी हो गया है कि ऐसे व्यक्ति जब सामान्य भी बात करते हैं तो गुस्से में ही करते हैं। गुस्सा, अकेलापन, चिड़चिड़ाहट पति-पत्नी के संबंधों में दरार डाल देती है। बच्चों को घर-परिवार से दूर कर देती है और व्यक्ति अकेला रह जाता है। शायद खुद को सुबह उठकर और रात को सोने से पहले पाँच-पाँच मिनट भी दिये होते तो आज अकेलेपन के शिकार न होते और हर घर भीतरी व बाहरी दोनों स्तर पर मुस्कुराता हुआ दिखता।

झूठी मुस्कान का नकाब ओढ़कर घूमना न पड़ता। सुबह उठकर शांत मन से सोचे आज क्या-क्या करना है, उसके अनुसार एक नियमबद्ध शैली से चले और रात को सोने से पहले शांत मन से अपने पूरे दिन की दिनचर्या पर एक नजर अवश्य डालें कि क्या काम किया, क्या काम रह गया, किस से गुस्से से बात की और क्यों की। तब समझ में आयेगा कि हम कहाँ गलत है और कहाँ सही। ऐसा करना एकाध दिन मुश्किल लगेगा पर नामुमकिन नहीं। ऐसा करने से स्वयं में निखार आयेगा, जीवन एक नियमबद्ध शैली में चलेगा और जिसका स्वच्छ प्रभाव रिश्तों पर अवश्य दिखाई देगा। जो लोग हमारे कटु व्यवहार से हमसे दूर हो गए थे वे भी हमारे प्रेमी व्यवहार से करीब हो जायेंगे। एक पति-पत्नी का सम्बंध बना रहे तो पूरा घर बना रहता है और जहाँ पति-पत्नी के संबंध दरक गए वहीं पूरा घर, संसार, रिश्ते, संस्कार टूट जाते हैं। पति-पत्नी में आत्मसमर्पण, सहनशीलता, मिठास हो तो पूरा घर खुशी से गुंजायमान रहता है। पर अब तो पति-पत्नी के रिश्तों से भी बढ़कर उनका 'इगो' हो गया है। अहं को जीताने के लिए हर हद को तोड़ देना पति-पत्नी की प्राथमिकता बनती जा रही है। वक्त दो अपने रिश्तों को, प्यार दो सम्मान दो अपने रिश्तों को, वरना जिंदगी यूँ ही लड़ते-रोते-बिलखते बीत जायेगी। थोड़ा समर्पण सम्मान दो रिश्तों को। जिन्दगी को जीयें, काटें नहीं। जिंदगी काटना पशुओं का काम है इंसानों का नहीं। इसलिए चकाचौंध में रहिये, बेशक रहिये, पर उसका प्रभाव मत पड़ने दीजिये। एक-दूसरे की देखा-देखी होड़ करने लग जायेंगे तो वही हाल होगा कि एक विशाल अनंत मैदान में दौड़ तो सब रहे हैं पर जीत किसी को नहीं मिली। हाथ लगेगी सिर्फ हताशा, थकान, अकेलापन। जो कि बहुत खतरनाक है। 'संभल जाओ, परिवार में कुछ समय बिताओ।'

संकलन- अवनी जोशी, उज्जैन

व्यक्तित्व को ऊंचा करें

जब आपका विश्वास नहीं हिलता,
तब समस्या हिल जाती है।
जब विश्वास हिल जाता है,
तब समस्या टिक जाती है।
जो समस्या मुझे मार नहीं सकती,
वह मुझे ज्यादा मजबूत बनाती है।
दुःख घटना की वजह से नहीं परन्तु
घटना के कारण हमारे अंदर जो विचार
शुरु होते हैं उससे ही सुख या दुख होता है।
जमीन अच्छी हो खाद अच्छा हो,
परन्तु पानी अगर खारा हो तो,
फूल कभी नहीं खिलते।
भाव अच्छे हो, विचार भी अच्छे हो
मगर वाणी खराब हो तो,
संबंध कभी नहीं टिकते।
दूसरों को सुनाने के लिए
अपनी आवाज ऊंची मत करो
बल्कि अपना व्यक्तित्व इतना ऊंचा
बनाओ कि आपको सुनने के
लिए लोग इंतजार करे।
बात उन्हीं की होती है
जिन में कोई बात होती है।

-उषा ठाकोर, मुम्बई

व्याधियों से मुक्ति का आगाज़

शारदीय ऋतु का आभास कराती है, यह पूर्णचन्द्र की किरणें आज
शीतल सलिल से संयोगकर उपस्थिति का एहसास कराती है, यह किरणें आज
ऐंहिक अंजुमन में व्याप्त विरले वनौषधियों के समूह को
अपने पुञ्ज से आच्छादित करती है आज
स्वच्छ, समर्पण भाव से उसे अमृत्व प्रदान करती है आज
परिपक्वता को पाकर वानौषधी होगी पूर्ण आज
प्राप्त कर करेंगे आयुर्वेदज्ञ व्याधियों से मुक्त होने का आगाज़।

-डॉ.महेश त्रिवेदी
ए-10/12, एम.आय.जी. महानन्दा, उज्जैन मो. 9977469601

(1) खाली हाथ आया हुआ इन्सान अपनों के लिए तो बहुत कुछ छोड़ता है, लेकिन खुद खाली हाथ ही चला जाता है।

(2) किसी का दिल दुखाना समुद्र में फेंके गये पत्थर के समान है वह पत्थर अंदर कितना गहरा जायेगा अंदाजा लगाना मुश्किल होता है।

-संकलित कु. टीशा नागर, देवास

एक पुराण गाथा

महाराज काशिराज का अद्‌भुत न्याय

भोलेनाथ की नगरी काशी में हर शिवालय में जय भोले और पूरे गंगा घाट पर हर-हर गंगे के समवेत स्वर से सर्वत्र एक धार्मिक स्फूर्ति जागृत हो रही थी, क्योंकि यह माघ महीने की पूर्णिमा का दिन था। अतः पुण्य सलिला गंगा के तट पर हजारों श्रद्धालु स्नान के लिए एकत्र थे। ऐसे मोक्षदायी पर्व पर काशी महाराज की प्रिय पत्नी महारानी करुणा देवी ने भी गंगा स्नान का संकल्प किया। अपनी कुछ दासियों को लेकर वे गंगा तट पर पहुँची। माघ महीने की कंपा देने वाली ठंड और हिम कण से द्विगुणित शीतलहरी तथा बर्फ जैसे ठंडे पानी में महारानी ने किसी तरह दो-तीन डुबकियाँ लगाई और शीघ्रता से कपड़े बदल लिए। अति शीत से कांपती महारानी सोच रही थी कि कहीं दो-तीन लकड़ी के टुकड़े मिल जाये तो जलाकर शीत का प्रकोप शान्त किया जा सके, किन्तु दूर-दूर तक एक सूखा तिनका भी दिखाई नहीं दिया।

इधर शीतलहरी ने जोर पकड़ा तो रानी और तेजी से चलने लगी। दूर से उन्हें आठ-दस झोपड़ियाँ दिखाई दी। झोपड़ियों को देखकर महारानी अति प्रसन्न हुई और वहां जाकर पास खड़ी दासी से कहा कि 'इस झोपड़ी में आग लगा दें।' यह सुनकर दासी घबरा गई। 'न जाने यह झोपड़ी किस गरीब की होगी या किसी सन्त महात्मा की ध्यान स्थली हो, कितने जतन से उसने इसे बनाया होगा।' दासी के ये शब्द सुनकर महारानी क्रुद्ध हो गई, मुझे ज्ञान न दे और जल्दी से आग लगा दे। डरी सहमी दासी ने कांपते हुए हाथों से झोपड़ी में आग लगा दी। घास फूस, सूखी लकड़ियों से बनी झोपड़ी में आग ने क्षणभर में विकराल रूप धारण कर लिया। इस उष्णता से रानी का शीत प्रकोप तो शान्त हो गया, किन्तु इसी बीच वायुदेव और मुखर हो गये। प्रचण्ड हवा के झोंके से एक झोपड़ी ने दूसरी झोपड़ी को अपनी आग की लपेट में ले लिया। देखते ही देखते आस-पास की सभी झोपड़ियां जलकर भस्मीभूत हो गई। उसमें रहने वाले अपंग-अपाहिज, रोगी, बाल, स्त्री एवं वृद्ध सभी अग्नि के इस भीषण ताण्डव को देखकर हाहाकार करने लगे। माघ महीने की ठिठुरती सर्दी में गरीब प्रजा असहाय और निराश्रित हो गई और उधर महारानी तो कब से ही महल में पहुँच चुकी थी।इतने में गुप्तचरों ने महारानी के इस कुकृत्य की जानकारी काशिराज को दे दी। यह समाचार सुनकर दोनों के परिपालक, प्रजावत्सल, करुणा के सागर महाराज पूर्णतया विव्हल हो गये, उनकी अन्तरात्मा रो पड़ी। उन्होंने सजल नेत्रों से अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि सभी पीड़ितों को राजमहल के अतिथिगृह ले आयें और उनके आवास एवं भोजन का पूर्ण प्रबन्ध करें। उस जन समूह में लकड़ी के सहारे चलने वाले वृद्ध, गोद में बिलखते बच्चे, अश्रुपूर्ण स्त्रियां, युवक, कराहते हुए बुढ़े दादा-दादी सभी थे। इनकी ऐसी दीन दशा देखकर महाराज व्याकुल हो गये। उन सभी अतिथियों का समुचित प्रबन्ध कर उन्होंने राजमहल की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचते ही महारानी से क्रोधपूर्ण स्वर में महाराज ने कहा, 'आपने-अपनी दुर्बुद्धि से गरीब प्रजाजन की झोपड़ियां जलाकर इन्हें बेसहारा कर दिया, झोपड़ियां जलाते समय करुणादेवी! आपकी करुणा कहाँ गई थी। इन्हें कितना कष्ट हुआ है इसका आपको अनुभव भी है।'

'घास फूस की झोपड़ियां तो जलाने के लिए ही होती है, इसमें दुःख की क्या बात है, महाराज! आप तो व्यर्थ ही दुःखी हो रहे हैं। यह कहकर महारानी उपेक्षा भाव से अन्तःपुर में चली गई।

महारानी की ऐसी मद और गर्व पूर्ण उक्ति सुनकर महाराज और कराह उठे। राजसभा की ओर जाते-जाते काशिराज ने क्रोध से रक्त रंजित नेत्रों से प्रमुख दासी को आज्ञा दी कि 'महारानी के सारे आभूषण और राजसी वस्त्र उतारकर उन्हें फटे पुराने वस्त्र पहनाकर एक भिखारिन की तरह राजसभा में उपस्थित करें।' यह राजाज्ञा सुनकर महारानी बिलखती रही किन्तु यह तो राजाज्ञा ही थी। राजसभा, मंत्रियों, दरबारियों से खचाखच भरी थी और महाराज काशिराज सिंहासन पर विराजमान थे। भिखारिन के वेष में उपस्थित महारानी को देखकर सभी हतप्रभ हो गये। तभी धर्मरक्षक, नीति में निपुण काशिराज का न्याय गूंज उठा, 'महारानी! आपने गरीब प्रजाजन की सम्पत्ति को नष्ट किया है, जिसका आपको कोई दुःख नहीं है। इस क्षति की पूर्ति यदि राजकोष से की जायेगी तो प्रजाजन पर दुगुना कर का भार होगा जो अन्यायपूर्ण है। जब तक आप स्वयं ऐसे दुःख और कष्ट नहीं पायेंगी तब तक दूसरों के दुःख और व्यग्रता का आपको अनुभव नहीं होगा। अतः राजाज्ञा है कि आपको राजभवन से निकाला जा रहा है। आप भिखारिन की तरह गांव-गांव में जाकर शिक्षा मांगे और भिक्षा से प्राप्त धन से आप उन झोपड़ियों को वैसा ही बना दें तब ही आप पुनः राजभवन में आ सकेंगे। तब तक ये सभी आर्तजन राजभवन की अतिथिशाला में आवास भोजन प्राप्त करते रहेंगे।

महाराज काशिराज की यह आज्ञा सुनकर सभी स्तब्ध हो और उनके इस अद्‌भुत न्याय से महाराजाधिराज काशिराज की जय-जयकार से भोलेनाथ की काशी नगरी गूंज उठी।

प्रेषक- डॉ.निखिलेश शास्त्री
एम.ए., एम.लिट., पीएचडी
7/2, न्यू पलासिया, जैन दिवाकर
कॉलेज रोड़, इन्दौर
फोन 0731-2536510

श्री गणेशाम्बिकेभ्यो नमः

गर्व से कहो हम नागर है।

समग्र गुजरात नागर परिषद (महामंडल)

Email : sgnagarparishad@yahoo.com

कार्यालय : C/o रीता नरेश राजा 458 , जेठाभाइनी पोल, पोस्ट ओफिस के सामने, खाडिया, अहमदाबाद 380 001 (गुज.)

दूरभाष - 079-22140688 मोबाईल : 09974034466, 9426749833

दिनांक : 014-10-2015

प्रिय हाटकेशबंधु /भगिनी जयहाटकेश

हार्दिक शुभ कामनासह सहर्ष विदित किया जाता है कि "समग्र गुजरात नागर परिषद" महामंडल, अहमदाबाद द्वारा सन 1998 से प्रतिवर्ष आयोजित जीवनसाथी पसंदगी संमेलन की नवम्दश वीं कडी का आयोजन दिनांक 1-1-2017 रविवार को अहमदाबाद में प्रस्तावित है ।

हमें अत्यंत प्रसन्नता होगी यदि आपकी सहभागिता की जानकारी आप हमें संलग्न प्रपत्र को सम्पूर्ण रुप से भरकर दिनांक 20-12-2016 तक ही उपर वर्णित कार्यालयीन पते पर भिजवाकर सुनिश्चित करें । इसके पश्चात, प्राप्त होने वाले आवेदनपत्र स्वीकार करना संभव नहीं होगा, कृपया नोट लेंवे । जरुरत पर इसी फोर्म की फोटो कोपी भी भरकर भेज सकेंगे । यदी आपको इस आवेदनपत्र की आवश्यकता ना हो तो आप अन्य जरुरतमंद नागर ब्राह्मण परिवार को देकर आभारी करें । आवेदन पत्र सुवाच्य हींदी लीपी में स्पष्ट लीखाई में ही भरे ।

कृपया पासपोर्ट साइज का हाल ही में खिंचा हुआ रंगीन (2) फोटो यहां चिपकायें (स्टेपलर ना करें.)

उमेदवारी पत्रक - युवक/युवती

अहमदाबाद कार्यालय पर आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तारीख 20-12-2016

नाम _____

(सरनेम) (प्रथम नाम) - (पिता का नाम)

सम्पर्क हेतु पूरा पता _____

_____ पिनकोड : _____

दूरभाष (STD कोड सहित) _____ मोबाइल क्र._____

नागर व ब्राह्मण / गृहस्थ / उपज्ञाति - विसनगरा / वड़नगरा / साठोदरा /चित्रोडा / प्रश्नोरा /दशोरा_____ मूलवतन / शहर_____

अभ्यास _____ व्यवसाय_____ पोस्ट/पद _____ मासिक आय _____

उमेदवार का : वजन_____ किलोग्राम_____ ऊँचाई _____ रंग _____ चश्मा है/नही_____

जन्म दिनांक _____ जन्म स्थल _____ जन्म समय (Am/Pm) दिवस, / रात्रे)_____

(निकटस्थ शहर एवं प्रदेश का नाम भी लिखे)

अपरणित / विधुर / विधवा / तलाकसुदा)

विकलांग (यदि लागू हो तो सम्पूर्ण जानकारी देवे)

क्या जन्माक्षर मानते है _____ मंगल है / नहीं _____ शनि है /नहीं _____

गोत्र _____ नाडी _____ नक्षत्र _____

E-mail का पता : Add _____

जीवन साथी से अपेक्षाएं (संक्षेप में)

पिता का नाम- माता का नाम व सही_____ उम्मीदवार की सही _____

रु. 300/- आवेदक के रु 150/- प्रथम अभीभावके और उसके बाद प्रत्येक अभिभावकके २००/- के कुल रु. हम घोषित करते हैं । कुल रुपये

मंगल परिणय

की

हार्दिक

शुभकामनाएँ...

चि. सत्यम मेहता

सुपुत्र–सौ.उषा–अरुण मेहता, नरसिंहगढ़

का शुभ विवाह

रानु

सुपुत्री– सौ.किरण–प्रमोद ओदिच्य, विदिशा

के साथ

दिनांक 23 नवम्बर 2016 को विदिशा में सम्पन्न हुआ।

मेहता एवं ओदिच्य परिवार की ओर से विवाह में पधारे समस्त आत्मिय जनों

एवं नागर बन्धुओं का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार

:: बधाईकर्ता ::

अरुण कुमार–उषा मेहता, नवनीत–सुधा मेहता,

पवन–प्रतिभा मेहता, शुभम–शिवानी मेहता, सुन्दरम–श्रीकांत नागर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा शिवप्रभा प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, 20-ए, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित।
सम्पादक : सौ.संगीता शर्मा मो. 94250 63129
LATE POSTING